लखनऊ, गुरुवार, 11 मई 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 77 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रुपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

संक्षिप्त समाचार

बेल्लारी ग्रामीण में वोटिंग के दौरान हुई झड़प में कांग्रेस नेता घायल

(एजेंसी) हुब्बली। हाल ही में कांग्रेस में शामिल हुए उमेश यादव बुधवार को कर्नाटक के बेल्लारी ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र में मतदान के दौरान हुई झड़प में घायल हो गए। झड़प कांग्रेस और भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच हुई थी। दो पक्षों के कार्यकर्ताओं के बीच हुई मारपीट में उमेश यादव के सिर में चोट लग गयी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर हिंसक भीड़ को तितर-बितर किया। एक अन्य घटना में, गंगावती केंद्रीय निर्वाचन क्षेत्र के बूथ संख्या 159 और 160 पर भाजपा कार्यकर्ताओं की कथित रूप से कर्नाटक राज्य प्रगति पक्ष पार्टी (केआरपीपी) के कार्यकर्ताओं से झड़प हो गई। केआरपीपी बेल्लारी के खनन बैरन, गली जनार्दन रेड्डी द्वारा बनाई गई राजनीतिक पार्टी है। रेड्डी गंगावती विधानसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में केआरपीपी भाजपा के वोट काटेगी और पिछले कुछ दिनों से इलाके में मामूली झड़पें हो रही हैं। मतगणना 13 मई को होनी है।

अदालत ने एफआईआर पर पुलिस से मांगी स्टेटस रिपोर्ट

(एजेंसी) नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के अध्यक्ष और भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोपों में दर्ज एफआईआर पर बुधवार को दिल्ली पुलिस से स्टेटस रिपोर्ट मांगी। अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट हरजीत सिंह जसपाल ने पहलवानों की याचिका पर दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया। याचिका में मांग की गयी है कि जांच की निगरानी की जाए और कथित पीड़ितों के बयान अदालत के समक्ष दर्ज कराये जाएं। इसमें दावा किया गया है कि 28 अप्रैल को प्राथमिकियों के दर्ज होने के बाद से पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की है। अदालत ने पुलिस को 12 मई तक रिपोर्ट दाखिल करने को कहा, जब वह मामले में आगे सुनवाई करेगी। याचिका में दावा किया गया है कि पुलिस कोई जांच करने को तैयार नहीं है। पुलिस ने अदालत के समक्ष पीड़ितों के बयान तक दर्ज नहीं किये हैं। बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ दोनों एफआईआर की प्रतियां सीलबंद लिफाफे में अदालत में पेश की गयीं। एक एफआईआर एक नाबालिग से यौन उत्पीड़न के मामले में 'यौन अपराधों से बालकों का संरक्षणश् (पॉक्सो) कानून के तहत दर्ज की गयी है।

समलैंगिक शादी मामले में सुनवाई से सीजेआई को हटाने की याचिका खारिज

(एजेंसी) नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक शादी को कानूनी मान्यता दिये जाने संबंधी याचिकाओं की सुनवाई से भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी.वाई. चंद्रचूड़ को हटाये जाने की अर्जी बुधवार को खारिज कर दी। प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पांच-सदस्यीय संविधान पीठ समलैंगिक विवाह को मान्यता संबंधी याचिकाओं पर आज नौवें दिन सुनवाई कर रही थी। वीडियो कांफ्रेंस के जरिये पेश अंसन थॉमस नामक एक व्यक्ति ने सीजेआई को 13 मार्च एवं 17 अप्रैल को भेजे अपने पत्रों का हवाला दिया और कहा कि जस्टिस चंद्रचूड़ को इस मामले से खुद को अलग कर लेना चाहिए। सीजेआई ने कहा, ''धन्यवाद, श्रीमान थॉमस, अर्जी खारिज की जाती है। संविधान पीठ में न्यायमूर्ति संजय किशन कौल, न्यायमूर्ति एस. आर. भट, न्यायमूर्ति हिमा कोहली और न्यायमूर्ति पी. एस. नरसिम्हा भी शामिल हैं।

पुलिस ने किया साइबर ठगों का जाल, 100 करोड़ की ठगी का खुलासा

(एजेंसी)

चंडीगढ़। हरियाणा पुलिस द्वारा जिला नूंह में साइबर जालसाजों के ठिकानों पर एक साथ की गई रेड के बाद जांच में अब तक देश भर में लगभग 100 करोड़ रुपये की साइबर ठगी का खुलासा हुआ है। ये महाठग फर्जी सिम, आधार कार्ड इत्यादि द्वारा देशभर के लोगों से ठगी करते और फर्जी बनाए बैंक खातों में राशि डलवा देते ताकि पुलिस इन तक ना पहुंच सके। इल जालसाजों द्वारा हरियाणा से राष्ट्रीय राजधानी, दिल्ली और यूपी से लेकर अंडमान निकोबार तक लोगों को निशाना बनाया जा चुका है। इनके पकड़े जाने से देशभर में साइबर ठगी के लगभग 28,000 केस ट्रेस हुए हैं। नूंह पुलिस अधीक्षक वरूण सिंगला ने आज नूंह में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए बताया कि 27/28 अप्रैल की मध्यरात्रि को 5000 पुलिसकर्मियों की 102 टीमों ने जिले के 14 गांवों में एक साथ छापेमारी की थी। इस दौरान करीब 125 संदिग्ध हैकर्स को हिरासत में लिया गया था। इनमें से 66 आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार किया गया। सभी को अदालत में पेशकर 7 से 11 दिन की रिमांड पर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद पूरे मामले का पर्दाफाश करने के लिए हरियाणा के पुलिस महानिदेशक श्री प्रशांत कुमार अग्रवाल ने इन साइबर अपराधियों से पूछताछ के लिए पूरे हरियाणा से 40 साइबर विशेषज्ञों की एक टीम तैयार की। इस प्रकार साइबर विशेषज्ञों की मदद से पकड़े गए साइबर अपराधियों से निरंतर पूछताछ की गई और साइबर धोखाधड़ी द्वारा अपनाई जा रही कार्यप्रणाली के साथ-साथ फर्जी सिम और बैंक खातों के स्रोतों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। छापे के दौरान जब्त किए गए मोबाइल फोन और सिम कार्ड की भी तकनीकी रूप से जांच की गई और टीएसपी/आईएसपी, बैंक, एनपीसीआई, यूपीआई इंटरमीडियरीज, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक, व्हाट्सएप, ओएलएक्स आदि से संबंधित जानकारी भी मांगी गई। साथ ही, केंद्रीय गृह मंत्रालय के भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र की सहायता से भी इन साइबर ठगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले फर्जी बैंक खातों, सिम, मोबाइल फोन आदि को देश भर में प्राप्त साइबर अपराध की शिकायतों से जोड़ने का अनुरोध किया गया था। इस विश्लेषण के दौरान यह बात सामने आई है कि साइबर ठगों ने अब तक देश भर के 35 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से करीब 28000 भोले-भाले लोगों से 100 करोड़ रुपये से अधिक की ठगी को अंजाम दिया है। पकडे गए इन साइबर जालसाजों के खिलाफ देशभर में पहले से ही 1346 प्राथमिकी दर्ज होनी पाई गई हैं। ऐसे ठगों की संलिप्तता तय करने के लिए इन साइबर अपराधियों का विवरण राज्यों के संबंधित वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को भेजा जा रहा है।

अस्थिर पाकिस्तान भारत समेत सभी देशों के लिए खतरनाक

(एजेंसी) जम्मू। जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारुक अब्दुल्ला ने यहां कहा कि एक अस्थिर पाकिस्तान, भारत सहित सभी देशों के लिए खतरनाक है। इस्लामाबाद में, पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के अध्यक्ष इमरान खान को भ्रष्टाचार के एक मामले में गिरफ्तार किये जाने के एक दिन बाद पूर्व केंद्रीय मंत्री अब्दुल्ला का यह बयान आया है। नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष ने संवाददाताओं से कहा, ''एक अस्थिर पाकिस्तान हमारे देश सहित सभी देशों के लिए खतरानाक है। हम एक मजबूत और लोकतांत्रिक पाकिस्तान चाहते हैं, जहां लोकतंत्र फले-फूले। अब्दुल्ला ने कहा कि पाकिस्तान में आंतरिक स्थिति बहुत खतरनाक है और इसकी आर्थिक स्थिति भी जर्जर है। उन्होंने कहा, ''पिछले साल क्षेत्र में भारी बाढ आई थी और कई इलाके अब तक उससे प्रभावित हैं।

यौन शोषण के आरोपों में बुरे फंसे बृजभूषण, पहलवानों ने दी नार्को टेस्ट कराने की चुनौती

(एजेंसी)

नई दिल्ली। ओलंपिक पदक विजेता पहलवान साक्षी मलिक ने बुधवार को भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के अध्यक्ष बृजभूषण को चुनौती दी कि अगर उन्हें भरोसा है कि वह निर्दोष हैं तो वह झूठ पकडने वाला नार्को परीक्षण कराएं। बृजभूषण पर सात पहलवानों ने यौन शोषण के आरोप लगाए हैं। प्रदर्शनकारी पहलवानों ने कहा कि अगर बृजभूषण प्रतियोगिताओं के आयोजन से जुडें होंगे तो वे प्रतियोगिताएं कराने का विरोध करेंगे। साक्षी ने यहां प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि मैं डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष को नार्को परीक्षण कराने की चुनौती देती हूं। हम भी परीक्षण कराने के लिए तैयार हैं। सच को सामने आने दीजिए, कौन दोषी है और कौन नहीं। एक अन्य ओलंपिक पदक विजेता पहलवान बजरंग पूनिया ने कहा, ''हम चाहते हैं कि सभी प्रतियोगिताएं आईओए (भारतीय ओलंपिक संघ) के तदर्थ पैनल के अंतर्गत हों। अगर डब्ल्यूएफआई प्रमुख किसी भी तरह से इससे जुडे होंगे तो हम इनका विरोध करेंगे। पहलवानों ने बृजभूषण के खिलाफ'जांच की धीमी गति के विरोध में गुरुवार को बांह पर काली पट्टी बांधने का फैसला किया। प्रदर्शनकारी एक नाबालिग सहित सात महिला पहलवानों के यौन शोषण और उन्हें डराने के कथित आरोपों में बृजभूषण की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। दिल्ली पुलिस ने डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष के खिलाफ28 अप्रैल को दो प्राथमिकी दर्ज की थी।

कुशीनगर में भीषण अग्निकांड, 7 लोगों की जलकर मौत

मृतकों में चार मासूम बच्चे भी शामिल

(संवाददाता)

लखनऊ । कुशीनगर जिले में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। रामकोला थाना क्षेत्र के माघी मठिया गांव में बुधवार दोपहर में भीषण आग लग गई। इस आग में चार बच्चों सहित सात लोगों की मौत हो गई है। घटना के बाद गांव में अफरातफरी मच गई। ये लोग एक ही परिवार के बताए जा रहे हैं। अग्निशमन विभाग का दस्ता सूचना देने के दो घंटे विलंब से पहुंचा। इस वजह से ग्रामीणों में नाराजगी रही। मरने वालों में चार बच्चे और उनकी मां की मौत घर पर हुई है, जबकि दादा-दादी की मौत जिला अस्पताल में हुई है। एक का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है।

रामगंगा नदी में नहाने गये पांच बच्चे डूबे, 2 की मौत

तीन बच्चों ने जैसे तैसे बचाई जान

(संवाददाता)

लखनऊ। हरदोई जिले में एक बड़ा हादसा हुआ है। मामला अरवल क्षेत्र का है जहां से निकली रामगंगा नदी में नहाने गए 5 बच्चे तेज बहाव में डूब गए जिसमें से तीन किसी तरह बचकर नदी से बाहर निकले लेकिन दो बच्चों की डूबकर मौत हो गई।गोताखोरों की मदद से 4 से 5 घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद शवों को ढूंढा जा सका।पुलिस ने दोनों के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अरवल थाना क्षेत्र के बेहटा मुड़िया गांव निवासी केतन और उसका दोस्त शिवांशु अपने अन्य तीन दोस्तों के साथ नदी में नहाने गए थे जहां नहाते हुए गहरे पानी में चले गए। सभी पानी के तेज बहाव में फंस कर डूबने लगे जिसमें तीन बच्चों ने किसी तरह अपनी जान बचाई और नदी से बाहर आ गए लेकिन शिवांशु और केतन नदी में डूब गए। ग्रामीणों की सूचना पर गोताखोर और पुलिस टीम पहुंच गई। काफी देर तक दोनों की तलाश की गई जिसके बाद करीब दो घंटे बाद शिवांशु का शव नदी से बरामद कर लिया गया जबकि दूसरे का शव 5 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद ढूंढा जा सका। इस घटना की वजह से परिजनों में कोहराम मच गया।

दर्जन भर गोताखोरों की मदद से 4 से 5 घंटे की मशक्कत के बाद दोनों का शव निकाला जा सका जिन्हें पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पाकिस्तान के बिगड़े हालात का कश्मीर में होने वाली जी-20 की बैठक पर ना पड़े असर, इसके लिए तीनों सेनाओं ने कसी कमर

❑ गृह सचिव अजय कुमार भल्ला और गुप्तचर ब्यूरो (आईबी) के निदेशक तपन ने डेका श्रीनगर का किया निरीक्षण

(एजेंसी)

नई दिल्ली। जहां तक सुरक्षा के हालात की बात है तो उसकी समीक्षा करने खुद केंद्रीय गृह सचिव अजय कुमार भल्ला और गुप्तचर ब्यूरो (आईबी) के निदेशक तपन डेका श्रीनगर आये हैं। दोनों अधिकारियों ने जी-20 बैठक को लेकर सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा के लिए कश्मीर का दौरा किया। कश्मीर में होने वाली जी-20 की बैठक को पाकिस्तान की शह पर आतंकवादियों की ओर से बाधित किये जाने की आशंका को देखते हुए सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त तो किये ही जा रहे हैं साथ ही साफ-सफाई और साज-सज्जा का काम भी तेजी के साथ चल रहा है। हम आपको बता दें कि जी-20 पर्यटन समूह की बैठक श्रीनगर में 22 से 24 मई तक डल झील के तट पर स्थित शेर-ए-कश्मीर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र (एसकेआईसीसी) में होने वाली है। इस बैठक के मद्देनजर झील में सफाई अभियान भी जोर-शोर से चल रहा है। वहीं जहां तक सुरक्षा के हालात की बात है तो उसकी समीक्षा करने खुद केंद्रीय गृह सचिव अजय कुमार भल्ला और गुप्तचर ब्यूरो (आईबी) के निदेशक तपन डेका श्रीनगर आये हैं। जी-20 बैठक को लेकर सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा के लिए कश्मीर का दौरा किया। एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने जी-20 बैठक के लिए सुरक्षा तैयारियों से जुड़े हर पहलू का जायजा लिया। बताया जा रहा है कि पाकिस्तान में बिगड़े हालात के मद्देनजर सीमाई क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरती जा रही है। सूत्रों ने कहा कि जी-20 बैठक की सुरक्षा मोदी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है जिसके लिए हरसंभव कदम उठाए जा रहे हैं। इसी क्रम में गृह सचिव भल्ला और आईबी निदेशक डेका ने जम्मू-कश्मीर प्रशासन, पुलिस, सेना और अन्य सुरक्षा एजेंसियों के शीर्ष अधिकारियों से मुलाकात की तथा सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की। हम आपको यह भी बता दें कि बैठक के हिस्से के रूप में जी-20 प्रतिनिधियों के गुलमर्ग और श्रीनगर के अलावा कुछ अन्य पर्यटन स्थलों का दौरा करने की उम्मीद है। इसलिए इन स्थलों पर भी सुरक्षा के कड़े प्रबंध किये जा रहे हैं। सूत्रों ने कहा कि हाल में राजौरी और पुंछ में हुए दो बड़े आतंकी हमलों ने स्पष्ट संकेत दिया है कि राष्ट्र के प्रति शत्रुता रखने वाले तत्व आगामी जी-20 बैठक को बाधित करने का प्रयास कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि उन जगहों पर एनएसजी कमांडो तैनात हो सकते हैं जहां अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधि जाएंगे, जबकि भारतीय नौसेना के मार्कोस कमांडो को डल झील और घाटी में अन्य जलाशयों में तैनात किए जाने की उम्मीद है। यह ऐसे समय हुआ जब पुंछ के भाटा धूरियन में सेना के एक ट्रक पर घात लगाकर हमला किए जाने के बाद सेना पिछले 15 दिन से बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान में लगी हुई थी। देखा जाये तो पिछले 18 महीनों में, राजौरी और पुंछ जिलों में हुए आठ आतंकी हमलों में 26 सैनिकों सहित 35 लोगों की जान गई है। इस बीच, सुरक्षा विशेषज्ञों ने जम्मू-कश्मीर के पुंछ और राजौरी जिलों में पिछले 18 महीनों में सैनिकों के अधिक संख्या में हताहत होने का जिक्र करते हुए, आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए इन क्षेत्रों में खुफिया तंत्र को मजबूत करने सहित रणनीति में बदलाव करने की अपील की है। रक्षा एवं सुरक्षा विशेषज्ञों ने कहा है कि यह जम्मू क्षेत्र में आतंकवाद को पुनर्जीवित करने की पाकिस्तान द्वारा की जा रही कोशिश है। जम्मू कश्मीर के पूर्व पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) एसपी वैद्य ने कहा, ''अक्टूबर 2021 से हुए घटनाक्रमों पर गौर करने पर आप पाएंगे कि जम्मू क्षेत्र में अशांति पैदा करने और आतंकवाद को पुनर्जीवित करने के लिए एक समन्वित कोशिश की गई है।

पीएम मोदी आज राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर कार्यक्रम का करेंगे उद्घाटन

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रगति मैदान में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2023 को चिह्नित करने वाले एक कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के 25वें वर्ष के उत्सव की शुरुआत भी करेगा, जो 11 से 14 मई तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर, मोदी 5,800 करोड़ रुपये से अधिक की कई वैज्ञानिक परियोजनाओं की आधारशिला भी रखेंगे और राष्ट्र को समर्पित करेंगे। वह लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल वेव ऑब्जर्वेटरी- इंडिया (एलआईजीओ-इंडिया) की आधारशिला भी रखेंगे। यह दुनिया में मुट्ठी भर लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल वेव वेधशालाओं में से एक होगी।

एनआईए ने जम्मू कश्मीर में बड़ी कार्रवाई की

आतंकी गतिविधियों के लिए तीन लोगों की संपत्तियां कुर्क कीं

(एजेंसी)

नई दिल्ली। एनआईए ने हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम) और जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) जैसे प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों के सदस्यों या कैडरों से जुड़ी आतंकवादी गतिविधियों के दो अलग-अलग मामलों में तीन आरोपियों की अचल संपत्तियां कुर्क की। श्रीनगर। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने कश्मीर घाटी में आतंकवाद से जुड़ी गतिविधियों में कथित संलिप्तता को लेकर बुधवार को तीन लोगों की संपत्ति कुर्क की। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय एजेंसी ने कश्मीर में विभिन्न स्थानों पर संदिग्धों और आरोपियों की संपत्तियों पर छापे मारकर आतंकवादी संगठनों, उनके सहयोगियों, एजेंट और ओवरग्राउंड वर्कर्स (ओजीडब्ल्यू) के खिलाफ निगरानी बढ़ा दी है।

एनआईए ने हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम) और जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) जैसे प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों के सदस्यों या कैडरों से जुड़ी आतंकवादी गतिविधियों के दो अलग-अलग मामलों में तीन आरोपियों की अचल संपत्तियां कुर्क की। एनआईए ने कहा कि पहले मामले में शोपियां जिले के हरमन में दो आरोपियों दौलत अली मुगल और इस्हाक पाला की अचल संपत्तियों को यूए(पी)ए अधिनियम के तहत कुर्क किया गया है। पाला फिलहाल आगरा के केंद्रीय कारागार में बंद है। वह हिजबुल मुजाहिदीन/अल-बद्र संगठन का आतंकवादी था।

जबकि अभियुक्त मुगल हिजबुल मुजाहिदीन का एक ओवरग्राउंड वर्कर था और फिलहाल जमानत पर जेल से बाहर है। दूसरे मामले में, एजेंसी ने जैश-ए-मोहम्मद के ओवरग्राउंड वर्कर्स (ओजीडब्ल्यू) आरोपी फ्याज अहमद मागरे की अचल संपत्ति कुर्क की, जो फिलहाल हरियाणा की झज्जर जिला जेल में बंद है।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव संपन्न, नतीजे 31 मई को

(एजेंसी)

बेंगलुरु। कर्नाटक विधानसभा चुनाव के लिए निर्वाचन आयोग के अधिकारियों के मुताबिक, दोपहर एक बजे तक तटीय उडुपी जिले में सबसे अधिक 47.79 प्रतिशत मतदान हुआ जबकि बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका क्षेत्र (बेंगलुरु शहर के हिस्सा) में सबसे कम 29.41 प्रतिशत मतदान होने की खबर है।

कर्नाटक की 224 विधानसभा सीटों के लिए मतदान सुबह 7 बजे शुरू हुआ, जो शाम 6 बजे तक जारी रहेगा। कर्नाटक में सत्तारूढ भाजपा, कांग्रेस और पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवेगौडा की जनता दल (सेक्युलर) के बीच त्रिकोणीय मुकाबला माना जा रहा है। बेंगलुरु के कुछ मतदान केंद्रों पर शुरुआती घंटों में तेज मतदान देखा गया जहां बुजुर्ग मतदाता भी बडी संख्या में नजर आए। मतदान के शुरुआती घंटों में देवेगौडा, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, राज्य कांग्रेस प्रमुख डी के शिवकुमार और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष नलिन कुमार कटील ने मतदान किया। कर्नाटक में 2018 के विधानसभा चुनाव में 72.36 प्रतिशत मतदान हुआ था। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में पांच करोड़ 31 लाख 33 हजार 54 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। राज्य में कुल 58,545 मतदान केन्द्र बनाए गए हैं और जहां मतदाता 2615 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन पर बटन दबाकर करेंगे। कुल 2615 उम्मीदवारों में से 2430 पुरुष और 184 महिला तथा एक उभयलिंगी प्रत्याशी है। इस बार के मतदान में 11 लाख 71 हजार 558 युवा मतदाता पहली बार अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। कुल मतदाताओं में से पांच लाख 71 हजार 281 दिव्यांगजन हैं और 12 लाख 15 हजार 920 ऐसे मतदाता हैं, जिनकी उम्र 80 वर्ष से अधिक है। मतदान के दौरान 76,202 वोटर वेरीफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल का इस्तेमाल किया जाना है। राज्य में विधानसभा चुनाव को शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से संपन्न कराने के लिए भारी संख्या में पुलिस और सुरक्षा बलों की व्यवस्था की गयी है।

संपादकीय

गर्मी में सर्दी

मई की शुरुआत में जब पूरा देश लू की चपेट में होता है उस समय जब लोगों को गरम कपड़ों की जरूरत महसूस होने लगे तो समझ लेना चाहिए कि ग्लोबल वार्मिंग के संकट ने दरवाजे पर दस्तक दे दी है। कहने को यह मौसम पश्चिमी विक्षोभ की देन है लेकिन सवाल यह है कि समुद्र के मिजाज में यह परिवर्तन क्यों आ रहा है। बताया जा रहा है कि दस मई तक किसी भी इलाके में गरम लहरें नहीं महसूस होंगी। तमाम इलाकों में बारिश व ओलावृष्टि तथा पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी हैरत में डाल रही है। कमोबेश देश के अधिकांश भागों में मौसम के मिजाज में यह तीव्र बदलाव महसूस किया गया है। दिल्ली समेत उत्तर भारत के कई राज्यों में सुबह धुंध जैसी स्थिति नजर आई है। लोग भले ही इस मौसम को सुहावना बता रहे हों, लेकिन किसान अभी खेतों में खड़ी फसल को पूरी तरह काट नहीं पाये हैं। यदि अन्न बर्बाद होता है तो हमारी खाद्य शृंखला भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेगी। महंगाई की मार से हमें दो-चार होना पड़ेगा। यही वजह है कि किसान के माथे पर भी चिंता की लकीरें हैं। निस्संदेह, जब मई के महीने में फरवरी-मार्च के मौसम का अहसास होने लगे तो इसे खतरे की घंटी के तौर पर देखा जाना चाहिए। ये हाल उस मौसम में है जब देश के विभिन्न भागों में भीषण गर्मी पड़ती है और तापमान पचास डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचता है। इस समय सूर्य पूरे ताप के साथ नजर आता है। हालांकि, अप्रैल में कुछ समय भरपूर गर्मी रही लेकिन बाद में माह के अंत और मई की शुरुआत में तापमान अचानक बदल गया। यह स्थिति सिर्फ उत्तर भारत में ही हो, ऐसा भी नहीं है। इसका प्रभाव दक्षिणी, पश्चिम, मध्य व पूर्वी भारत में भी नजर आ रहा है। यहां तक कि कई इलाकों में तापमान में दस डिग्री सेल्सियस तक गिरावट दर्ज की गई। मौसम के मिजाज में आये इस अप्रत्याशित बदलाव को देखकर लोग हैरत में हैं कि क्या वाकई ये मई का महीना है? क्या गर्मी आएगी भी? दरअसल, जिस समुद्री व्यवहार में बदलाव को इस मौसम की वजह बताया जा रहा है, उसके निकट भविष्य में फिर दोहराये जाने की बात भी कही जा रही है। कमोबेश भारत ही नहीं, पूरे यूरोप भी में मौसम की ऐसी तल्खी नजर आ रही है। तमाम यूरोपीय देशों में तापमान के रिकॉर्ड टूट रहे हैं। यह कटु सत्य है कि जब भारत में ठंड का अहसास हो रहा है तो पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। वहीं दक्षिण भारत में तेज बारिश से तापमान में गिरावट आई है। सभी राज्यों में मई में रिकॉर्ड बारिश दर्ज की गई है। पूर्वोत्तर भारत में ऐसी ही स्थिति है। भविष्य में कई राज्यों में तूफान व बारिश की भविष्यवाणी की जा रही है। कुछ लोग पाकिस्तान की तरफसे अरब सागर के जरिये उठने वाले वातावरणीय दबाव को बारिश व तूफान का कारण बता रहे हैं। जिसके चलते मौसम के रोज नये रिकॉर्ड बन रहे हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान में जुटे हैं कि किस वजह से इस साल फरवरी के महीने में अप्रत्याशित गर्मी पड़ी थी। बताते हैं कि पिछली पूरी सदी में भी पृथ्वी फरवरी में कभी इतनी गर्म नहीं रही। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस साल अभी नौ बार पश्चिमी विक्षोभ का असर नजर आयेगा। जिसकी वजह से बार-बार मौसम में बदलाव महसूस होंगे। आखिर क्या वजह है कि जब भारत में तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है तो यूरोप, कनाडा व उत्तरी एशिया में तापमान में लगातार वृद्धि महसूस की जा रही है। ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव देखिये कि एक समय में कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे की स्थिति है। कहीं गर्मी में सर्दी का अहसास हो रहा है तो कहीं ठंडे इलाकों में लगातार गर्मी बढ़ रही है। सबसे बड़ा डर इस बात का है कि भारत में ग्लेशियरों पर पिघलने का खतरा बढ़ता जा रहा है।

बिहार की रुकी जाति जनगणना

पटना उच्च न्यायालय द्वारा बिहार सरकार द्वारा कराये जा रहे जातिगत सर्वेक्षण या जनगणना पर तुरन्त रोक लगा देने से यह स्पष्ट हो गया है कि भारतीय संघ की विभिन्न राज्य सरकारें अपने-अपने प्रदेशों की जनता की जनगणना नहीं करा सकती हैं क्योंकि भारतीय संविधान में ऐसा कोई प्रवधान नहीं है। इसकी वजह यह है कि पूरे देश की जनगणना 1948 के कानून के अनुसार भारत सरकार द्वारा ही अखिल भारतीय स्तर पर कराई जा सकती है। भारत का कोई भी कानून किसी राज्य सरकार को यह अधिकार नहीं देता है कि वह प्रादेशिक आधार पर यह काम करा सके। 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशें लागू होने के बाद यह मांग बड़ी तेजी से उठती रही है कि देश में जातिगत जनगणना कराई जानी चाहिए। इसके पक्ष व विपक्ष में अलग- अलग तर्क हो सकते हैं मगर इतना निश्चित है कि प्रत्यक्ष रूप से यह कार्य केवल केन्द्र सरकार द्वारा ही कराया जा सकता है। भारत के संविधान में जब आजादी के बाद अनुसूचित जातियों व जन जातियों को आरक्षण दिया गया था तो सरकार के सामने 1931 में अंग्रेज सरकार द्वारा की गई जातिगत जनगणना के आंकडेघ् थे मगर 1990 में जब सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्ग (ओबीसी) को 27 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान किया गया तो इस वर्ग के लोगों के कोई अधिकारिक आंकड़े नहीं थे। मंडल आयोग ने अनुमान के आधार पर इस वर्ग के लोगों को 27 प्रतिशत आरक्षण देने की सिफारिश की थी और राय जाहिर की थी भारत में पिछड़े समुदाय के लोगों की सैकड़ों जातियां हैं जो हिन्दू व मुस्लिम दोनों ही सम्प्रदायों के लोगों के बीच में मौजूद हैं। इसमें भी अलग-अलग राज्य में अलग-अलग पिछड़ी जातियां हैं। यही वजह कि जिस जाति के लोग बिहार में पिछड़े समुदाय में आते हैं, उत्तर प्रदेश या प. बंगाल में वे उस वर्ग में नहीं आते। परन्तु यह कार्य राज्य अपनी मनमर्जी से नहीं कर सकते इसके लिए केन्द्र स्तर पर पिछड़ा आयोग है। परन्तु सवाल यह है कि पटना उच्च न्यायालय ने बिहार की नीतीश सरकार के जातिगत जनगणना या सर्वेक्षण के काम को पूर्णत: गैर कानूनी माना है और कहा है कि सर्वेक्षण के नाम पर जनगणना कराने का काम नहीं किया जा सकता। परन्तु भारत में यह मुद्दा विशुद्ध रूप से राजनीति का विषय बन चुका है और इसका सम्बन्ध सीधे सामाजिक न्याय से जोड़ दिया गया है।लोकतन्त्र में इसमें कोई हर्ज भी नहीं है क्योंकि सामाजिक न्याय तभी हो सकता है जबकि पहले यह पता चले कि समाज के किन वर्गों के साथ अन्याय होता रहा है। इस दृष्टि से देखें तो कांग्रेस नेता श्री राहुल गांधी द्वारा उठाया गया यह प्रश्न गैर वाजिब नहीं है कि 2011 में उनकी पार्टी के नेतृत्व में रही मनमोहन सिंह की यूपीए सरकार ने जो जातिगत जनगणना कराई थी उसके आंकड़े वर्तमान केन्द्र सरकार जारी करे जिससे यह पता लग सके कि देश में कुल कितने पिछड़े हैं और कितने अनुसूचित जाति या जन जाति के लोग हैं। मगर दूसरी तरफ तर्क यह है कि जो संविधान जाति विहीन समाज की बात करता है और जाति प्रथा से मुक्ति पाने की बात करता है उसकी गणना करके क्या हम इस कुप्रथा की जड़ें और गहरी नहीं करेंगे? मगर इसके साथ यह भी सच है कि संविधान ही सामाजिक न्याय की बात करता है और कहता है कि जो लोग पिछड़े रह गये हैं उन्हें सशक्त बनाने के उपाय राज्य विशेष प्रयासों से करेगा। यही वजह है कि मंडल आयोग की सिफारिशें 1990 में केवल शासकीय आदेश से ही लागू कर दी गईं थीं क्योंकि संविधान में इसकी व्यवस्था पहले से ही थी। मगर पिछड़ेपन का आधार सामाजिक व शैक्षणिक ही होगा। इसी वजह से सामाजिक न्याय का मुद्दा जातियों से जाकर जुड़ता है क्योंकि भारतीय समाज की जाति व्यवस्था ही किन्हीं वर्गों के लोगों को ऊंचा या नीचा करके देखती है।इसके चलते ही ऐसे वर्गों के लोगों को शिक्षा से वंचित रखा गया और जाति में बंधे इन लोगों को समाज ने ऐसे काम-धंधों के लायक ही रहने दिया जिनमें श्रम व शिक्षा का कोई तालमेल ही न बैठाया जा सके। इनमें किसानी से लेकर खेतीहर, श्रम व दस्तकारी व कारीगरी और शिल्पकारी आदि के अलावा छोटे-मोटे काम-धन्धे करने वाले लोग पीढ़ी दर पीढ़ी से खपते रहे और उनकी पृथक जातियां तक काम के आधार पर ही बनती चली गईं। उदाहरण के लिए हम नाई, धोबी, जुलाहे, खटीक, कुम्हार, लुहार, कहार, बढ़ई आदि समाज के लोगों को ले सकते हैं। इनकी नई पीढ़ियों के साथ न्याय करने के लिए जरूरी है कि इनके शैक्षणिक उत्थान से लेकर सामाजिक उत्थान तक के लिए राज्य विशेष प्रोत्साहन दें। मगर यह कार्य भारत के संविधान के अनुसार ही हो सकता है जबकि बिहार सरकार ने पिछड़े समुदाय की गणना करने के लिए जातिगत सर्वेक्षण का रास्ता चुना और ब्यौरा जनगणना की तरह भरा।

मणिपुर : सुलगी दबी हुई चिंगारी

आदित्य नारायण

मणिपुर को मणियों की भूमि कहा जाता है। यह राज्य समृद्ध घाटियों की धरा है जो सुंदर पहाड़ियों और झीलों से घिरी हुई है। मणिपुर 1891 में ब्रिटिश राज्य के अंतर्गत एक रियासत थी। वर्ष 1947 में मणिपुर संविधान अधिनियम के अंतर्गत महाराजा को कार्यकारी प्रमुख बनाते हुए एक लोकतांत्रिक सरकार स्थापित की गई। 21 जनवरी 1972 को भारत में एकीकरण के साथ यह क्षेत्र पूर्ण राज्य बन गया। प्राकृतिक सौंदर्य के ध्लिए पहचाना जाने वाला मणिपुर एक संवेदनशील सीमांत राज्य भी है। सामरिक दृष्टिकोण से भी इस राज्य का अपना महत्व है। राज्य में बड़े पैमाने पर हिंसा से न केवल राज्य सरकार चिंतित है बल्कि केंद्र सरकार के लिए भी बड़ी परेशानी का सबब है। गृहमंत्री अमित शाह राज्य के मुख्यमंत्री एन.वीरेन सिंह से संपर्क बनाए हुए हैं और घ्स्थिति पर नजर रखे हुए हैं। मणिपुर में गत बुधवार से ही जमकर हिंसा हुई। हालात इतने गंभीर हुए कि आठ जिलों में कर्फ्यू लगा दिया गया। देखते ही देखते धर्मस्थलों, घरों, वाहनों और सरकारी सम्पत्ति को आग के हवाले कर दिया गया। दस हजार के करीब लोगों को हिंसा प्रभावित इलाकों से निकालकर राहत शिविरों में भेजा गया। मणिपुर के हालात को देखते हुए वहां जाने वाली कई ट्रेनें रद्द कर दी गईं। इंटरनेट सेवाएं ठप्प हैं। अब सवाल यह है कि मणिपुर आखिरकार जला क्यों? हालत इतनी तेजी से क्यों बिगड़े कि दंगाइयों को देखते ही गोली मारने के आदेश देने पड़े।

मणिपुर के धूं-धूं जलने के पीछे आदिवासियों और गैर आदिवासियों के बीच वर्चस्व की जंग है। यह जंग सालों पुरानी है। जो राख में दबी चिंगारियों के आग की लपटों में बदल गई। आदिवासी और गैर आदिवासी लोग आपस में क्यों लड़े। इसके पीछे भी दोनों के अपने-अपने तर्क हैं। मणिपुर के तीन प्रमुख समुदाय हैं मैतेई, नागा और कुकी। आदिवासी समुदाय नागा और कुकी हैं जबकि मैतेई गैर अदिवासी समुदाय है। मणिपुर में आदिवासी समुदायों के लिए कुछ प्रावधान भी किए हैं, इसके तहत राज्य के आदिवासी लोग पहाड़ी इलाकों और घाटी में दोनों ही जगह बिना रोक-टोक बस सकते हैं, जबकि गैर-आदिवासी समुदाय को सिर्फ घाटी में रहने की ही अनुमति है। राज्य में 90: पहाड़ी इलाका और बाकी बचा 10: घाटी है। संख्याबल के हिसाब से बात की जाए, तो मणिपुर में 53: से ज्यादा आबादी मैतेई समुदाय की है, जबकि नागा और कुकी समुदाय की आबादी 40 फीसदी के आसपास है, तो एक तरह से इसे वर्चस्व की लड़ाई भी कहा जा सकता है। मैतेई समुदाय पिछले करीब 10 सालों से अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिए जाने की मांग कर रहा है। इसी कड़ी में मैतेई ट्राइब यूनियन ने मणिपुर हाईकोर्ट का रुख किया और अदालत के सामने मांग रखी कि वो राज्य सरकार को उनकी मांग पर विचार करने का निर्देश दे और इसके लिए राज्य केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्रालय को एक सिफारिश भी भेजे। इस मामले की सुनवाई के बाद ही पिछले महीने अदालत ने अपना फैसला मैतेई समुदाय के पक्ष में सुनाया और राज्य सरकार से केंद्र को सिफारिश भेजने और उनकी मांग पर विचार करने को कहा। कोर्ट ने राज्य सरकार से कहा कि वो 4 महीने के भीतर केंद्र को सिफारिश भेजे। कोर्ट के इस फैसले के विरोध में ऑल ट्राइबल स्टूडेंट यूनियन ऑफमणिपुर ने आदिवासी एकता मार्च निकाला और इस दौरान हिंसा भड़क उठी। दोनों ही पक्ष अपने-अपने पक्ष में तर्क देते हैं। मैतेई समुदाय का कहना है कि 1949 में भारत के साथ रियासत के विलय से पहले मैतेई समुदाय को आदिवासी समुदाय के रूप में मान्यता दी गई थी लेकिन विलय के बाद इसने अपनी आदिवासी पहचान खो दी। समुदाय का कहना है कि वह एसटी का दर्जा सिर्फ नौकरियों और शिक्षा संस्थानों में आरक्षण के लिए नहीं मांग रहा बल्कि यह पैतृक सम्पघ्ति, संस्कृति और पहचान का मसला है। वहीं दूसरी ओर आदिवासी समुदाय का कहना है कि मैतेई समुदाय जनसंख्या में ज्यादा है और राजनीघ्ति में इस समुदाय का प्रभुत्व है क्योंकि राज्य में 60 में 40 विधानसभा सीटें घाटी में हैं। आदिवासियों को डर है कि मैतेई समुदाय आदिवासी समुदाय को मिलने वाली नौकरियों और अन्य लाभ छीन सकता है। मैतेई घाटी में रहते हैं और वे बहुसंख्यक हैं लेकिन जिनकी आबादी कम है उनके अधिकारों की भी रक्षा होनी चाहिए। पहाड़ी जिलों के आदिवासियों के अधिकार नहीं छीने जाने चाहिए। एक बड़ी चिंता यह भी है कि पहाड़ी जिलों में 40 फीसदी आबादी इसाई है। मणिपुर के पहाड़ी जिलों को ग्रेटर नागालैंड में शामिल करने की मांग काफी पहले से हो रही है। मैतेई समुदाय के दबदबे से बचने के लिए मणिपुर के पहाड़ी जिलों के अधिकांश लोग ग्रेटर नागालैंड में शामिल होने के इच्छुक हैं। आदिवासी समूहों को लगता है कि अगर मैतेई समुदाय को जनजाति का दर्जा मिला तो वे पहाड़ों पर भी जमीन खरीदना शुरू कर देंगे इससे आदिवासी हाशिए पर चले जाएंगे। मणिपुर में अवैध घुसपैठ की समस्या तो कई सालों से बनी हुई है। राज्य की भाजपा सरकार को चाहिए कि वह जन भावनाओं का सम्मान करते हुए सभी समुदायों को विश्वास में ले और किसी के अधिकार घ्छीनने की आकांक्षाओं को समाप्त किया जाए। पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय समुदाय अपनी अलग संस्कृति और पहचान बनाए रखने के मामले में काफी संवेदनशील है। इसलिए कई बार पूर्वोत्तर भारत के राज्य जल उठते हैं। राज्य सरकार को बहुत ही सावधानी से काम करना होगा।

सत्य और साहस जीवन की नाव के दो पतवार, इनका साथ ना छोड़े

संजीव ठाकुर

यह कहावत एकदम सत्य है कि सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहींस यदि सत्य सच्चाई नहीं होती तो मानव जीवन नहीं होता क्योंकि पहाड़, झरना, नदिया जंगल और प्रकृति द्वारा दिए गए प्रतिशत के रूप में मानव सहित सांसारिक जीव जंतु प्राकृतिक सत्य की उत्पत्ति हैस और यह भी सत्य है कि मनुष्य अपने लालच,स्पृहा, कामना,कपट के चलते असत्यता झूठ और फरेब का सहारा और वैशाखी लेकर त्वरित लाभ के लिए जीवन के भाव सागर में कूद पड़ता है परंतु सत्य ही अंतिम सत्य है परंतु आज की परिस्थितियों में सच्चाई जीवन के हर पहलू से परे होती जा रही है। आज हम स्वयं दिग्भ्रमित हैं तो आने वाली पीढ़ी को हम क्या नैतिक, संस्कारिक और सांस्कृतिक विरासत दे पाएंगे। आज के इस उत्तर आधुनिक समाज में जहां उपभोक्तावादी संस्कृति की प्रधानता के परिपेक्ष में भौतिक साधनों एवं सुखों के लक्ष्य की प्राप्ति की एकमात्र उपाय रह गई वहां भौतिकवाद तथा शारीरिक सुख की प्राप्ति का प्रचलन पूरे समाज में फैल गया है ।इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए झूठ फरेब एवं षड्यंत्र ने अपना जाल बुन रखा हैस प्राचीन काल से हम आध्यात्मिक, संस्कारिक,सांस्कृतिक रूप से बढ़ रहे थे पर विकास की अवधारणा ने एक नया स्वरूप ले लिया है इन परिस्थितियों में समाज के सदस्यों ने झूठ और फरेब का सहारा लेना शुरू कर दिया हैस भौतिकवाद सिर चढ़कर बोलने लगा हैस व्यक्तिगत एवं सामाजिक आत्मीय संबंधों के मूल्य का तेजी से क्षरण होने लगा हैस समाज के मूलभूत सिद्धांत तथा मूल्य गायब हो गए हैं। सामाजिक मूल्यों के खत्म होने की प्रक्रिया में सत्य बोलना कि एक मात्र साधन शेष रह गया है, किंतु वर्तमान समय में सच बोलना एक कठिन तप और तपस्या की तरह ही है। महात्मा गांधी के जीवन में भी उनके अध्यात्मिक दर्शन में सत्य अहिंसा मूल अवधारणा रही है उन्होंने इस सत्य को पहचाना और यह आशा प्रकट की कि यदि व्यक्तियों में सत्य के प्रति आस्था पैदा हो जाए तो सामाजिक नैतिकता का र्स्व स्वयं उच्च स्तर को प्राप्त कर सकता है और सही मायने में सत्य ही मनुष्य के आचरण की ऊंचाई मानी जाती है। सत्य और अहिंसा पर चलने के लिए संयम, मनोबल, आत्मशक्ति और ऊर्जा ही एक बड़ा विकल्प है । सत्य और अहिंसा स्वाभिमान के प्रतीक है सत्य बोलने वाला मनुष्य स्वाभिमानी होता है दूसरी तरफ असत्य आत्मग्लानि का द्योतक है। कबीर दास जी ने भी सत्य को ईश्वर मानकर कई दोहों की रचना की है। नकारात्मक व्यवहार सामाजिक स्तर पर किया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण दुर्गुण है क्योंकि इसका प्रभाव पूरे समाज एवं देश पर गंभीर परिणाम देने लगता है। झूठ बोलना और सच को नेपथ्य में धकेलना एक सबसे बड़ी सामाजिक बुराई के रूप में सामने आई है। इसीलिए सामाजिक रूप से झूठ को सबसे बड़ा पाप कहा गया है पाप इस अर्थ में कहा गया है कि यह हमें दिग्भ्रमित करके वंचित कर्तव्य एवं रोजमर्रा के आत्मीय व्यवहार से वंचित रखता है और असत्य कथन को समस्त बुराइयों अपराधों की जननी माना जाता है। हम भौतिकवादी मानसिकता से इतने अधिक ग्रसित हो गए हैं की पारिवारिक सदस्यों के बीच हमारे आत्मीय संबंध लुप्त प्राय होते जा रहे हैं और ऐसे बनावटी परिवेश में व्यक्ति तथा समाज अपनी भौतिक मानसिक विलासिता तथा सफलता के दायरे में सिमट कर रह गया है। इसकी प्राप्ति के लिए व्यक्ति अत्यंत उन्मुक्त निसंकोच तरीके से असत्य का सहारा लेने से भी नहीं चूक रहा है। भौतिक सुख साधनों की लालसा में मनुष्य में साधनों की सत्यता तथा शुद्धता फिर भी गहरा समझौता कर समाज में असामाजिक व्यवहार को अपना लिया है जिसके दूरगामी परिणाम भारतीय समाज के लिए अच्छे संकेत नहीं है। आज मनुष्य नैतिकता एवं अनैतिकता की बारीक लकीर हो पहचानने से काफी दूर हो गया है तथा भौतिक विकास के लिए किसी भी साधन को अपनाने से नहीं परहेज करता है। मानव बुद्धि विवेक संपन्न होने के कारण भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए हर तरह के उपायों को नए-नए हथकंडे के रूप है उपयोग करने लगा है जिससे समाज मे विसंगतियां पैदा होकर आत्मीय संबंधों की बलि चढ़ गई है। आदिकाल से ऐतिहासिक तौर पर भी मानव की सच्चरित्रता पर सवालिया निशान खड़े होते रहे हैं। समाज ने आपसी संबंधों को संचालित करने के लिए कुछ आदर्श मापदंड का प्रावधान भी रखा है जिनमें सबसे महत्वपूर्ण सावधान सत्य बोलने का है किंतु मनुष्य अपने सुख साधन बटोरने के लिए सदैव सत्य से परहेज करने लगा जिससे मनुष्य नैतिकता से काफी दूर हो गया एवं सामाजिक मान्यताओं को छिन्न-भिन्न करता आया है। आज भौतिक साधन संपन्नता समाज में सर्वोच्च शिखर पर है और समाजिक व्यक्तिगत आत्मीय संवेदनशील संबंध ताक पर रख दिए गए हैं। नैतिकता सिद्धांतों की परिपाटी नष्ट प्राय होती जा रही है। ऐसे में एक आदर्श समाज की कल्पना बेमानी हो गई है। आज हमें सामाजिक मूल्यों को बचाने आत्मीय संबंधों की रक्षा करने के लिए सत्य तब और संयम का सहारा लेने की आवश्यकता होगी अन्यथा भारतीय समाज को पश्चिमी समाज के रूप में यहां संवेदनशीलता आत्मीयता और मानवीय संबंधों की गरिमा खत्म होने के कगार पर है अपनाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा एवं भारतीय मूल्य संस्कार संस्कृति धीरे धीरे सनातनी समाज से दूर होते जाएंगे और हम हाथ में हाथ धरे देखते रह जाएंगे। आज नैतिकता केवल दूसरों के लिए उपदेश देने की वस्तु बन कर रह गई है। मनुष्य सामाजिक व्यवस्था का स्वयं निर्माता है किंतु नैसर्गिक रूप से लोभी,आलसी, तथा संग्रहण की प्रवृत्ति वाला हो चुका है ऐसे में कम परिश्रम में ज्यादा लाभ प्राप्त करने के लिए असत्य फरेब एवं जालसाजी का ही सहारा लेकर अनैतिकता का परचम फैलाने में लगा हुआ है। यह भारतीय परिवेश के लिए कतई शुभ संकेत नहीं है।

नीतीश कुमार का ड्रीम प्रोजेक्ट था जाति आधारित गणना

कोर्ट की रोक से गर्मा ई बिहार की सियासत

यह इतना ही जरूरी मुद्दा है कि विधानसभा में जब इस विधेयक को लाया गया तो इसका सर्वसज्मति से समर्थन किया गया बिहार में चल रही जातीय जनगणना पर पटना हाईकोर्ट ने रोक लगा दी है। कोर्ट ने साफकहा है कि जनगणना कराने का काम केंद्र सरकार का है, राज्य सरकार का नहीं।

सरकार ने अगर कानून विशेषज्ञों का सहारा लिया होता तो ऐसी फजीहत नहीं होती। यह गणना बिहार ही नहीं, बल्कि बिहार की राजनीति के लिए भी जरूरी मानी जा रही है। यह इतना ही जरूरी मुद्दा है कि विधानसभा में जब इस विधेयक को लाया गया तो इसका सर्वसम्मति से समर्थन किया गया। बिहार में चल रही जातीय जनगणना पर पटना हाईकोर्ट ने रोक लगा दी है। कोर्ट ने साफकहा है कि जनगणना कराने का काम केंद्र सरकार का है, राज्य सरकार का नहीं। ऐसे में क्या यह सवाल नहीं उठता है कि जातीय जनगणना के नाम पर बिहार सरकार अभी तक समय, श्रम आ और संसाधन का दुरुपयोग कर रही थी? क्या सरकार कोई भी फैसला लेने से पहले राज्य के कानून विशेषज्ञों से राय-मश्विरा नहीं लेती। अगर सचमुच बिहार सरकार ने ऐसा किया होता तो समय, श्रम और संसाधन का दुरुपयोग नहीं हुआ होता। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि राज्य सरकार के फैसले पर होईकोर्ट ने रोक लगा दी हो। इससे पहले भी इस तरह के कई मामले सामने आ चुके हैं। निकाय चुनाव के दौरान भी किच-किच हुई। राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव की अधिसूचना जारी कर दी। मैदान में पहले से ताल ठोक रहे उम्मीदवारों ने ताबड़तोड़ नामांकन करबाए और धुआंधार प्रचार शुरू हुआ। चुनाव में दो दिन ही बाकी थे कि हाईकोर्ट ने चुनाव पर रोक लगा दी। यहां भी समय, श्रम और संसाधन का खूब दुरुपयोग हुआ। चूंकि हाईकोर्ट ने चुनाव पर रोक लगा दी तो उम्मीदवारों का नामांकन भी स्वतरू रद्द हो गया। चुनाव में पानी की तरह पैसा बहाने वाले उम्मीदवारों के पैरों तले की जमीन खिसक गई। बिहार में अभी भी कुछ जगहों पर निकाय चुनाव होना बाकी है। मामला अदालत में उलझा हुआ है। मुझे लगता है कि इस मामले में सरकार ने अगर कानून विशेषज्ञों का सहारा लिया होता तो ऐसी फजीहत नहीं होती। यह गणना बिहार ही नहीं, बल्कि बिहार की राजनीति के लिए भी जरूरी मानी जा रही है। यह इतना ही जरूरी मुद्दा है कि विधानसभा में जब इस विधेयक को लाया गया तो इसका सर्वसम्मति से समर्थन किया गया। पक्ष-विपक्ष के तमाम नेताओं ने इसका दिल खोलकर स्वागत किया। हालांकि इस मामले में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश नेतृत्व के विचारों में अंतरविरोध दिखा। एक तरफकेंद्र की भाजपा सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा देकर बताया कि केंद्र जाति आधारित जनगणना नहीं कराएगा तो दूसरी तरफ बिहार में भाजपा जतीय जनगणना के पक्ष में विरोधी नेताओं के सुर में सुर मिलाती रही। बिहार भाजपा आज भी जातीय गणना के समर्थन में है और बिहार सरकार पर होईकोर्ट में अपना पक्ष ठीक से नहीं रखने का आरोप लगाया है। हालांकि अन्य दलों ने भी सरकार पर विफलता का ठप्पा लगाने की कोशिश की है। सभी दल जातीय गणना से हासिल होने वाले आंकड़ों की आंच में अपनी-अपनी रोटी सेंकने का सपना संजो रहे हैं। इन आंकड़ों से समाज के शोषितों-वंचितों का कितना भला होगा यह तो वक्त बताएगा लेकिन इतना तो तय है कि आने वाले दिनों में बिहार में अगड़ा-पिछड़ा की राजनीति जोर पकड़ेगी। मंडल-कमंडल का भी डंका बजेगा। हालांकि इस पर अभी अंतिम फैसला नहीं आया है। इसे अंतरिम रोक बताया गया है। अगली सुनवाई तीन जुलाई को होगी। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि तीन जुलाई को इस मामले में हाईकोर्ट की ओर से क्या प्रतिक्रिया आती है। लेकिन चार मई को जातीय गणना पर अंतरिम रोक लगाते हुए हाईकोर्ट ने जो प्रतिक्रया दी, वह काफी गंभीर थी। हाईकोर्ट ने कहा कि प्रथम दृष्टया हमारी राय है कि राज्य के पास जाति आधारित सर्वेक्षण कराने की कोई शक्ति नहीं है। जिस तरह से यह किया जा रहा है, वह एक जनगणना के समान है। ऐसा करना संघ की विधायी शक्ति पर अतिक्रमण होगा। जाति आधारित गणना के दौरान बिहार सरकार ने चालाकी से बीच का रास्ता निकालने की कोशिश की। सरकार ने इसे जातीण जनगणना नहीं कहा, बल्कि इसका नाम जाति आधारित गणना दिया गया। कोर्ट को यह बताया कि यह जाति आधारित सर्वेक्षण है। लोगों ने वही समझा जो सरकार समझाना चाहती थी। हाईकोर्ट में सरकार की यह चालाकी पकड़ी गई। विभिन्न संस्थाओं और कुछ व्यक्तियों द्वारा दायर की गई याचिका की सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने साफशब्दों में कहा है कि राज्य एक सर्वेक्षण की आड़ में एक जातिगत जनगणना करने का प्रयास नहीं कर सकता। खासकर जब राज्य के पास बिल्कुल विधायी क्षमता नहीं है और उस स्थिति में न ही भारत के संविधान की धारा 162 के तहत एक कार्यकारी आदेश को बनाए रखा जा सकता है। अपनी महत्वपूर्ण टिप्पणी में हाईकोर्ट ने सर्वेक्षण और जनगणना के बीच के अंतर को भी बिल्कुल साफ शब्दों में रेखांकित किया है। हाईकोर्ट ने कहा है कि जनगणना सटीक तथ्यों और सत्यापन योग्य विवरणों के संग्रह पर विचार करता है। जबकि सर्वेक्षण का उद्देश्य आम जनता की राय और धारणाओं का संग्रह और उनका विश्लेषण करना है। सर्वेक्षण में ज्यादातर तार्किक निष्कर्ष होते हैं। राज्य द्वारा वर्तमान कवायद को केवल सर्वेक्षण के नाम पर जनगणना करने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। मामले पर प्रतिक्रिया देते हुए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने फैसले को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। उन्होंने कहा है कि सर्वसम्मति इसे सदन से पास किया गया था। इसमें सबकी गिनती के साथ-साथ आर्थिक स्थिति का भी पता लगाया जाना है, चाहे वह किसी भी जाति का हो वा किसी भी समुदाय का। उन्होंने कहा है कि हम लोग सबके हित में यह काम कर रहे हैं। पता नहीं क्यों इसका विरोध हो रहा है। इससे तो पता चलता है कि लोगों को मौलिक चीजों की समझ नहीं है। दूसरी ओर बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव इस मामले में भाजपा से चिढ़े हुए हैं और अभी भी आशान्वित हैं। उनका कहना है कि आज न कल जातिगत गणना जरूर होगी। वहीं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने इस मामले में सरकार की मंशा पर ही सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा है कि राज्य सरकार जाति आधारित गणना करवाना ही नहीं चाहती थी। जिस कारण जानबूझकर ऐसा करवाया गया। सरकार ने अदालत में अपना पक्ष सही ढंग से नहीं रखा। दूसरी ओर कांग्रेस और माले सहित अन्य दलों ने भी सरकार को अदालत में अपना पक्ष मजबूती से रखने की सलाह दी है। मतलब साफ है कि जदयू और राजद छोड़कर सभी दल यह मानते हैं कि अदालत में सरकार ने अपना पक्ष ठीक से नहीं रखा। लेकिन ऐसे में क्या यह सवाल नहीं उठता है कि यह गणना अगर इतनी ही जरूरी थी तो उन लोगों ने इस मामले में सरकार का सहयोग क्यों नहीं किया। क्या वे इसी दिन का इंतजार कर रहे थे कि कोर्ट में सरकार की फजीहत हो और वे चुटकी ले सकें। फिलहाल सवाल यह भी है कि अगर अंतिम रूप से इस पर रोक लग जाती है तो इस मामले में अभी तक जो समय, श्रम और संसाधन का दुरुपयोग हुआ है, उसकी जवाबदेही कौन लेगा। बिहार की सत्ता की बागडोर लंबे दिनों से उन्हीं लोगों के हाथ में है जिन लोगों ने समाजवाद का दामन पकड़कर अपना राजनीतिक चेहरा चमकाया था। लालू हों या नीतीश सबकी पहचान समाजवाद से जुड़ी है लेकिन उनके यहाँ, उनकी पार्टियों में समाजवाद की क्या स्थिति है, यह किसी से छुपा हुआ नहीं है। असल में उनकी पार्टियों में अब समाजवाद नहीं, सामंतवाद का बोलबाला है। अगर उनके यहां समाजवाद होता तो आज राजद की बागडोर तेजस्वी के हाथों में नहीं होती। माय समकीरण की बात करने वाले लालू अपनी पार्टी से ऐसा कोई चेहरा निकालकर लाते जो उनकी जगह ले पाता लेकिन समाजवाद की बात करने वाले लालू भी पुत्र-मोह में फंस गए और समाजवाद के विपरीत उन्होंने पार्टी में वंशवाद को बढ़ावा दिया। बिहार के अन्य क्षेत्रीय दलों का भी यही हाल है।

यूपी में टैक्स फ्री द केरला स्टोरी के फैसले की ब्रजेश पाठक ने की सराहना

❑ केशव प्रसाद मौर्य ने बताया यूपी में क्यों टैक्स फ्री हुई द केरला स्टोरी, लोगों से की फिल्म देखने की अपील

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने मंगलवार को योगी आदित्यनाथ सरकार द्वारा हाल ही में रिलीज हुई फिल्म द केरला स्टोरी को राज्य में टैक्स फ्री करने के फैसले की सराहना की। इसके साथ ही उन्होंने लोगों से फिल्म देखने की भी अपील की। पाठक ने एक न्यूज एजेंसी को बताया कि द केरला स्टोरी को टैक्स-फ्री बनाना एक बहुत अच्छा फैसला है। मैं चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश के लोग इस फिल्म को देखें और समझें कि हमारी बहनों ने क्या झेला है। हम भी जाकर फिल्म देखेंगे। वहीं बीजेपी शासित मध्य प्रदेश और अब उत्तर प्रदेश में इसे टैक्स-फ्री कर दिए जाने के बाद भी फिल्म को लेकर राजनीतिक विरोध जारी है और इसके साथ ही यह कदम उठाने वाला यूपी

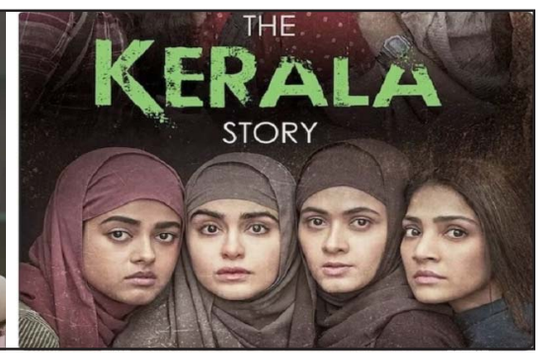

दूसरा राज्य बन गया है। सीएम योगी ने ट्वीट कर कहा, द केरल स्टोरी को उत्तर प्रदेश में टैक्स फ्री किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक, ब्रजेश पाठक ने पश्चिम बंगाल में फिल्म पर प्रतिबंध पर भी प्रतिक्रिया दी और कहा कि बंगाल के लोग प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करेंगे। वहीं फिल्म पर प्रतिबंध लगाने के फैसले पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि यह नफरत और हिंसा की किसी भी घटना से बचने और राज्य में शांति बनाए रखने के लिए है। सुदीप्तो सेन द्वारा अभिनीत और विपुल अमृतलाल शाह द्वारा निर्मित, इस फिल्म ने केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन से तीव्र विरोध किया, जिन्होंने इसे आरएसएस प्रचार कहा। द केरला स्टोरी में अदा शर्मा, योगिता बिहानी, सिद्धि इडनानी और सोनिया बलानी मुख्य भूमिकाओं में हैं। इसके ट्रेलर के बाद दावा किया गया कि केरल की 32,000 महिलाएं लापता हो गईं और आतंकवादी समूह आईएस आईएस में शामिल हो गईं, फिल्म के आसपास एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया। हालांकि, विरोध के बाद, ट्रेलर में विवादास्पद चित्र को बाद में वापस ले लिया गया था। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार फिल्म द केरला स्टोरी को राज्य में कर मुक्त करेगी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपने मंत्रिमंडल के साथ फिल्म की विशेष स्क्रीनिंग देख सकते हैं। सीएम योगी के इस ऐलान के बाद उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य की प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने कहा कि, द केरला स्टोरी के बहुत अच्छी और सच्चाई को उजागर करने वाली फिल्म है और उसे टैक्स फ्री करने का निर्णय लिया गया है। मैं प्रदेश वासियों से अपील करूंगा कि, इस फिल्म को जरूर देखें और मैं भी आज चुनाव प्रचार समाप्त होने के बाद ये फिल्म देखूंगा। बता दें कि, सीएम योगी ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किए गए ट्वीट में कहा, द केरला स्टोरी उत्तर प्रदेश में कर मुक्त की जाएगी। इससे पहले, निदेशक सूचना, शिशिर ने कहा कि, केरल स्टोरी को उत्तर प्रदेश में कर मुक्त किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपने मंत्रिमंडल के साथ फिल्म की विशेष स्क्रीनिंग देख सकते हैं। इसी पर

नफरत की कोख से उपजी कोई भी कला राष्ट्र और समाज के लिए विध्वंसकारी होगी : शिवपाल

संवाददाता, लखनऊ। फिल्म द केरला स्टोरी को लेकर देश में मचे बवाल पर समाजवादी के कद्दावर नेता शिवपाल यादव ने योगी सरकार पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि मनोरंजन को मनोरंजन के लिए छोड़ दें और सिनेमा व साहित्य का प्रयोग अपने जहरीले एजेंडे को देश पर थोपने के लिए न करें। नफरत की कोख से उपजी कोई भी कला राष्ट्र और समाज के लिए विध्वंसकारी होगी। दरअसल, 'द केरला स्टोरी फिल्म का विपक्ष विरोध कर रह है। जबकि भारतीय जनता पार्टी इस फिल्म को धर्म परिवर्तन के लिए और आतंकवादी संगठन आईएसआईएस से हिन्दू लड़कियों बचाने की बात कह रही है। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने गत रविवार को एक चुनावी रैली के दौरान कहा था कि अगर कोई प्रस्ताव आता है तो राज्य सरकार फिल्म द केरला स्टोरी को कर मुक्त कर देगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पांच मई को इस फिल्म को आतंकी साजिशों को सामने लाने का श्रेय दिया था। उन्होंने कर्नाटक में एक चुनावी रैली में फिल्म का उल्लेख करते हुए कांग्रेस पर निशाना साधा था। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी गत शनिवार को अपने राज्य में द केरला स्टोरी को कर मुक्त दर्जा देने की घोषणा की थी। उत्तर प्रदेश भाजपा के सचिव अभिजात मिश्रा ने शनिवार को शहर में करीब 100 छात्राओं के लिए इस विवादित फिल्म की स्क्रीनिंग का आयोजन किया था।

एलयू को रिसर्च के लिए मिला 2.1 करोड़ का अनुदान, केमिस्ट्री के 3, जूलॉजी के 2 और स्टेटिस्टिक्स के एक प्रोजेक्ट के लिए मिला ग्रांट

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय को मेडिसिन और इलेक्ट्रॉनिक्स समेत तमाम क्षेत्रों में लेटेस्ट रिसर्च के लिए सीयूआरई यानी स्टेट यूनिवर्सिटी रिसर्च एक्सीलेंस योजना के तहत 2.1 करोड़ रुपए का अनुदान मिला हैं। यह ग्रांट भारत सरकार के विज्ञान और तकनीकी मंत्रालय के एसईआरबी यानी साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड की तरफसे दी बेमिसाल शोध प्रोजेक्ट को साकार करने के मकसद से दी गई हैं। इसके तहत लखनऊ विश्वविद्यालय के 6 फैकल्टी मेंबर्स को 30-30 लाख की धनराशि के लिए चयनित किया गया। इनमें से केमिस्ट्री डिपार्टमेंट के 3 प्रोजेक्ट्स, जूलॉजी के 2 प्रोजेक्ट और स्टेटिस्टिक्स का एक प्रोजेक्ट शामिल हैं। डॉ.नीरज कुमार मिश्रा ड्रग कैंडिडेट्स के लेट-स्टेज सी-एच फंक्शनलाइजेशन पर काम करेंगे। जो औषधीय रसायनज्ञों को लेट-स्टेज ड्रग एनालॉग्स की लंबी प्रक्रिया को बायपास करने में मदद करेगा। डॉ.सुनील कुमार राय को कैंसर चिकित्सा के लिए दवाओं के संयोजन के लिए अनुदान मिला है। डॉ.प्रतिभा बंसल और डॉ.सीमा मिश्रा अधिक क्षमता वाली इलेक्ट्रो केमिकल एनर्जी कंजर्वेशन बेस्ड इक्विपमेंट (विद्युत रासायनिक ऊर्जा भंडारण उपकरणों) के निर्माण पर काम करेंगे। जूलॉजी विभाग में डॉ.आशुतोष रंजन और डॉ.आकांक्षा शर्मा को प्रवासी पक्षियों के व्यवहार पर काम करने के लिए फंड दिया गया है। सांख्यिकी विभाग के प्रो. शशि भूषण रैंक्ड सेट सैंपलिंग प्रोटोकॉल के तहत मजबूत अनुमान प्रक्रियाओं पर काम करेंगे। कुलपति प्रो आलोक कुमार राय तथा अधिष्ठाता छात्र कल्याण व ऐकडेमिक प्रो पूनम टंडन ने सभी प्रोजेक्ट अवार्डी संकाय सदस्यों को बधाई दी है। साथ ही कहा है कि नई शिक्षा नीति (एनईपी) उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार पर जोर देती है। इस अनुदान से अनुसंधान को बढ़ावा मिलेगा एवं विश्वविद्यालय में शोध का पर्यावरण बनेगा और मास्टर और पीएच.डी. विद्यार्थियों को सीखने के अधिक अवसर मिलेंगे।

एसटीएफ ने 25 हजार का इनामी पकड़ा

❑ यूपी एसटीएफ ने न्यायालय में पेशी के दौरान फरार वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

संवाददाता

लखनऊ। यूपी एसटीएफ ने कानपुर से 25 हजार रूपये के इनामी शराब तस्कर अजीत कुमार कुंवर उर्फ घरभरन को गिरफ्तार किया है। मूल रूप से बिहार निवासी अजीत गाजीपुर के गोल्डन राय के साथ मिलकर दिल्ली, हरियाणा से शराब लाकर बिहार में तस्करी करता था। एसटीएफकी टीम ने उसको लखनऊ में हाईकोर्ट तिराहा विभूति खण्ड से सोमवार शाम को पकड़ के पूछताछ की। उसके बाद मंगलवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। एटीएफ को मूल रूप से बिहार बक्सर के शिमरी थाने के डुमरी गांव निवासी अजीत कुमार की काफी दिनों से तलाश थी। मुखबिर की सूचना पर एटीएफ की टीम ने उसको पकड़ा। उसके खिलाफ कानपुर कमिश्नरेट के थाना बर्रा से एक आपराधिक मामले में 25 हजार का इनाम है। पूछताछ में अजीत ने बताया कि चोरी की चार पहिया वाहन कानपुर के वाहन चोर जय प्रकाश तिवारी से खरीदते थे। जिसमें अवैध शराब तस्करी बिहार में करता था। इसमें गाजीपुर के जोगा मुसाहिब निवासी गोल्डन राय साथ देते थे। कानपुर कमिश्नरेट पुलिस ने मेरे घर से 30 जून को छापेमारी की थी। पुलिस ने

चोरी की स्कार्पियो बरामद की थी। वहीं मैं ग्रामीणों की मदद से भाग निकला था। यूपी एसटीएफने लखनऊ से 25 जनवरी को न्यायालय में पेशी के दौरान फरार वांछित अभियुक्त विजय अग्रवाल उर्फगोलू को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अभियुक्त विजय अग्रवाल उर्फ गोलू रहीमनगर डुडौली थाना मडियांव लखनऊ का रहने वाला है। लाल प्रताप सिंह पुलिस उपाधीक्षक एसटीएफ उत्तर प्रदेश लखनऊ के पर्वेक्षण में अभिसूचना संकलन की कार्यवाही की जा रही थी।जिस पर निरीक्षक अंजनी कुमार तिवारी की टीम द्वारा पुलिस कस्टडी से फरार अभियुक्त विजय अग्रवाल उर्फ गोलू छठामिल चौराहा,व से गिरफ्तार किया गया है। इस सूचना पर एसटीएफटीम द्वारा मौके पर पहुंच कर वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में अभियुक्त ने बताया कि वह थाना मडियांव से एनडीपीएस के अभियोग में वर्ष 2020 में जेल गया था। वहीं अभियुक्त शातिर किस्म का अपराधी है तथा वर्ष 2019 में मेरठ के थाना कन्करखेड़ा क्षेत्र में एक महिला की हत्या की साजिश रचने के दौरान अपने साथियों के साथ पुलिस मुठभेड़ के बाद एसटीएफद्वारा गिरफ्तार किया गया था। विजय अग्रवाल उर्फगोलू उर्फपर 22 मुकदमें दर्ज है। गिरफ्तार अभियुक्त को थाना वजीरगंज लखनऊ में दाखिल कर, अग्रिम विधिक पुलिस द्वारा की गई।

उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड द्वारा जल प्याऊ लगाया गया

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड, लखनऊ द्वारा ज्येष्ठ माह के प्रथम बडे मंगल पर संस्था के सम्पर्क कार्यालय, उदयाचल (क्वींस कालेज कैम्पस) बाला कदर रोड, लालबाग में जल प्याऊ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में ओम प्रकाश मिश्र, उप शिक्षा निदेशक षष्ठ मण्डल, लखनऊ एवं प्रादेशिक उपाध्यक्ष डा आरपी मिश्र ने हनुमान जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर भोग लगाया। उसके बाद मुख्य अतिथि ओम प्रकाश मिश्र, प्रादेशिक उपाध्यक्ष डा आरपी मिश्र, उपाध्यक्ष शर्मिला सिंह, जिला सचिव अनिल शर्मा द्वारा ठंण्डा जल वितरित किया गया। इस अवसर पर प्रादेशिक उपाध्यक्ष डा आरपी मिश्र व जिला सचिव अनिल शर्मा द्वारा मुख्य अतिथि ओम प्रकाश मिश्र उप शिक्षा निदेशक, षष्ठ मण्डल, लखनऊ को शाल पहनाकर एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड के प्रादेशिक उपाध्यक्ष डा आरपी मिश्र, उपाध्यक्ष एवं पायनियर इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या शर्मिला सिंह, जिला कमिश्नर (गाइड) संगीता अग्रवाल, सहायक सचिव इन्द्र प्रकाश श्रीवास्तव सहित कई लोग उपस्थित रहे।

बड़े मंगल पर राजधानी में 2 हजार से ज्यादा जगहों पर हुआ भंडारा

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में सुबह से बड़े मंगल की रौनक देखने को मिली। सुबह से ही शहर के सभी इलाकों में भंडारों के लिए पंडाल लगे।

बड़े मंगल को लेकर सीएम योगी आदित्यनाथ ने भी आदेश जारी किए कि बड़े मंगल पर व्यवस्था में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। पानी से लेकर सफाई तक का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। ऐसे में नगर निगम ने सफाई का विशेष इंतजाम किया। बताया जा रहा है कि शहर में दो हजार से ज्यादा जगहों पर भंडारा लगा। हजरतगंज, गोमती नगर,

इंदिरा नगर, आशियाना, चारबाग, चौक, चौपटिया, आलमबाग, भूतनाथ समेत सभी बाजारों में बड़े मंगल की रौनक देखने को मिली। लखनऊ में बड़ा मंगल करीब दो सौ साल से मनाया जा रहा है। नगर निगम के अधिकारियों के मुताबिक शहर में करीब छोटे-बड़े मिलाकर दो हजार से ज्यादा भंडारे लगे। इस दौरान भंडारों में पूड़ी-सब्जी से लेकर हलवा, शरबत, कढ़ी- चावल, छोला-चावल और बूंदी की मिठाई का प्रसाद दिया गया। यह आम धारणा है कि बड़े मंगल के दिन लोग दफ्तर में लंच लेकर नहीं जाते है। इस दिन लखनऊ में कोई भी भूखा नहीं सोता है। बड़ा मंगल लखनऊ में गंगा- जमुनी तहजीब का हिस्सा भी माना जाता है।बड़े मंगल पर भंडारा लगाने वालों ने कहा, उनकी प्रार्थना है कि समाज और प्रदेश का विकास हो। समाज में सभी लोग खुश रहे। अच्छे से रहे। भंडारे का आयोजन करने वालों ने बताया कि दो साल बाद ऐसा दिन लखनऊ वालों को मिला है। हम यही कामना करते हैं कि कोविड या इस तरह की कोई भी बीमारी दोबारा न आए।

धार्मिक जलसे के नाम पर पीएफआई फैला रहा कट्टरपंथ

अचरामऊ का प्रधान अहम कड़ी, अतीक की हत्या को इस्लाम पर हमला बता रहा

संवाददाता

लखनऊ। राजधानी में पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) ने मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों में अपनी पैठ बना ली है। माल से लेकर कुर्सी रोड होते हुए बाराबंकी तक इसके एजेंट धर्म विशेष के लोगों को धर्म के नाम पर देश विरोधी गतिविधियों में शामिल कर रहे हैं। एटीएस की सितंबर 2022 और रविवार को हुई छापेमारी में इसका खुलासा हुआ है। राजधानी के बाहरी इलाके बीकेटी, सैरपुर, गुडंबा के साथ ही इंदिरानगर, अमीनाबाद, चौक, मदेयगंज और वजीरगंज इलाके में भी इनकी जड़े मजबूत हुई हैं। यह लोग मुस्लिमों पर अत्याचार और अधिकारों के नाम पर लोगों को एक करने वाली एक संस्था के साथ ही बीकेटी अचरामऊ गांव का प्रधान अरशद अहम भूमिका अदा कर रहा है। लखनऊ शहर से करीब 26 किमी दूर बीकेटी तहसील के अचरामऊ गांव पीएफआई संगठन का गढ़ बना हुआ है। ग्राम प्रधान अशरद यहां कट्टरता की पाठशाला चला था। 27 सितंबर 2022 में एटीएस को चमका देकर फरार होने वाला अशरद इस बार भी हाथ नहीं लगा। सामने आया कि गांव के पढ़े-लिखे लोगों को भी अपने जाल में फंसा रखा है। इसका ही नतीजा है कि उसकी बातों में आकर बाराबंकी स्थित फतेहपुर के प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक वहीद और सीमैप से पीएचडी करने वाले उसके भाई मजीद भी पीएफआई की पाठशाला लगाने लगे थे। वहीं गांव के ही सऊदी में काम कर चुके रेहान और उसका भाई सलमान भी धर्म के नाम पर लोगों को बहकाने लगे। गांव के लोगों का कहना है कि यहां पर हर सप्ताह पीएफआई की मीटिंग होती है। यहां से पकड़े गए फरहान और जफर के घर वालों का कहना है कि पुलिस लोगों को परेशान करती है। जबकि यहां तो धार्मिक जलसे होते रहते है। जो यह कराता है उसको कभी नहीं पकड़ती। एटीएस सूत्रों के मुताबिक पीएफआई एजेंट और संगठन को मजबूत करने के लिए खाड़ी देशों से के साथ स्थानीय लेवल पर भी फंडिंग हो रही है। जो जकात के नाम पर दी जा रही है।प्रदेश भर के बीस जिलों में शनिवार-रविवार को हुई कार्रवाई में 73 पीएफआई से जुड़े लोगों को एटीएस ने पकड़ा। जांच में आया कि यह लोग सोशल मीडिया के जरिए एक दूसरे से जुड़कर अधिकारों के नाम पर देश विरोधी गतिविधियों को हवा दे रहे हैं। वहीं वाराणसी से गिरफ्तार 50 हजार के इनामी परवेज अहमद और रईस अहमद पुलिस कस्टडी में अतीक और असरफकी हत्या के मुद्दे को भी काम पर हमला होने की बात कह माहौल खराब करने की कोशिश कर रहे थे।

पुलिस महकमे में रिक्त पदों पर चयन प्रक्रिया शुरू करने की अपील

संवाददाता

लखनऊ। युवा मंच ने सीएम योगी आदित्यनाथ को पत्र प्रेषित कर पुलिस महकमे में रिक्त पड़े पदों को भरने के लिए तत्काल चयन प्रक्रिया शुरू करने की मांग की गई है। 113 संगठनों द्वारा गठित संयुक्त युवा मोर्चा ने भी प्रदेश में पुलिस भर्ती प्रक्रिया शुरू करने की मांग का समर्थन किया है। युवा मंच प्रदेश संयोजक राजेश सचान की ओर से प्रेषित पत्र में विधानसभा चुनाव 2017 एवं 2022 में सभी रिक्त पदों को भरने का वादा किया गया था। लेकिन पुलिस महकमे में भारी संख्या में रिक्त पद हैं लेकिन चार साल से पुलिस भर्ती के लिए चयन प्रक्रिया शुरू नहीं हुई है। जबकि 18 जून 2019 को तत्कालीन पुलिस महानिदेशक ओपी सिंह ने बताया था कि प्रदेश में 1.30 लाख पुलिस के पद रिक्त हैं और घोषणा की थी कि दिसंबर 2019 तक प्रदेश में 52 हजार सिपाहियों की भर्ती शुरू हो जाएगी। इन 4 सालों में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों का रिटायरमेंट भी हुआ है। युवा मंच ने कहा कि इधर एक बार पुन: शासन स्तर पर करीब 35 हजार पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू करने की घोषणा तो की गई लेकिन अभी तक विज्ञापन का अतापता नहीं है जोकि वादाखिलाफी है। इससे युवाओं में रोष व्याप्त है।

वीर शिरोमणि श्रद्धेय महाराणा प्रताप की 483 वीं जयंती पूरे धूमधाम से मनाई गई

संवाददाता, लखनऊ।अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा द्वारा आज पूरे प्रदेश में वीर शिरोमणि श्रद्धेय महाराणा प्रताप की483 वीं जयंती पूरे धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर लखनऊ के हुसैन गंज स्थित महाराणा की प्रतिमा पर संगठन और समाज के लोगों द्वारा माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करके महाराणा के शौर्य और पराक्रम को याद किया गया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप सिंह बब्बू ने कहा कि महाराणा प्रताप किसी जाति के नहीं, पूरे देश के संपूर्ण राष्ट्र के गौरव और धरोहर हैं।इस धरोहर पर हमें सदैव गर्व रहेगा। बब्बू ने इस अवसर पर नगर निगम प्रशासन की आलोचना करते हुए कहा कि नगर निगम ने महाराणा की प्रतिमा की साज-सज्जा और साफ सफाई से अपने को दूर रखा। जबकि इसकी सूचना और अनुरोध पत्र पूर्व में नगर आयुक्त को दिया जा चुका था। इस अवसर पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष उमाशंकर सिंह कुशवाहा प्रदेश महामंत्री यूपी सिंह,एके सिंह ,महेंद्र सिंह, राममूर्ति सिंह, धनंजय सिंह राणा, प्रेम प्रकाश सिंह, रणवीर सिंह, राम नायक सिंह,शिव कुमार सिंह तोमर हरिशंकर सिंह प्रभात सिंह पूजा सिंह राम सिंह भदोरिया सत्येंद्र सिंह भदोरिया रवि प्रताप सिंह,जितेंद्र सिंह, अरुण कुमार सिंह ,शुभम सिंह सेंगर प्रेमलता सिंह राज बहादुर सिंह कमलेश कुमार सिंह विश्वेश्वरैया सिंह चौहान सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

नियम विरूद्ध कटौती, सड़क पर उतरेगे रोड़वेज कर्मी

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश रोड़वेज कर्मचारी संघ की बैठक चारबाग स्थित कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष राकेश सिंह की अध्यक्षता में हुई। बैठक में भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमाकान्त सचान उपस्थित रहे। बैठक में परिवहन निगम में व्याप्त भ्रष्टाचार और अल्पवेतन भोगी संविदा कार्मिकों की अनावश्यक कटौती सहित पिछले दिनों हेक हुई टिकटिंग व्यवस्था में किसी जिम्मेदार अधिकारी पर कोई कार्रवाई न होने तथा उक्त के दरम्यान निगम को हुई आर्थिक हानि का कोई ब्यौरा एकत्रित न करने पर रोष जताया गया। बैठक में निगम में व्याप्त अनियमिताएं, भ्रष्टाचार और

कर्मचारियों के उत्पीड़न सम्बंधी विस्तारित पत्र मुख्यमंत्री परिवहन मंत्री और प्रमुख सचिव सहित प्रबंध निदेशक रोड़वेज को भेजा गया। बैठक में बताया गया कि परिवहन निगम के उच्च प्रबन्धन द्वारा मनमाने ढंग से तुगलकी फरमान जारी कर निष्ठावान संघ पदाधिकारियों, कर्मचारियों में भय पैदा कर भ्रष्टाचार के उद्देश्य से नियमविरूद्व मुख्यालय स्थापित चाटुकार अधिकारियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। संघ द्वारा प्रेषित पत्र के सापेक्ष अगर 15 दिनों में उत्पीड़न एवं अनावश्यक कटौती नही रोकी गई तो संघ, मजदूर महासंघ के साथ मिलकर सड़क पर उतरेगा। संघ की तरफ से कहा गया कि निगम प्रबन्धन द्वारा लाभदायकता, आय में कमी, लक्ष्य उपलब्धि, डीजल औसत में कमी आदि विभिन्न आधारों पर सीधे अधिकारियों,कर्मचारियों का दायित्व निर्धारित करते हुए वित्तीय क्षति की वसूली उनके वेतन से करने के तुगलकी फरमान रूपी आदेश पारित किये जा रहे हैं। सेवा नियमावली में अर्थ दण्ड लघु शास्ति की श्रेणी में है लेकिन वर्तमान में निर्गत आदेशों में पालन किये बिना ही निर्गत आदेश अवैधानिक है। कर्मचारी सेवा विनियमावली 1981 की धारा 65 (1) के अनुसार नियुक्ति प्राधिकारी या अन्य प्राधिकृत अधिकारी द्वारा किसी कर्मचारी की लापरवाही अथवा आदेशों के उल्लंघन के कारण निगम को हुई क्षति की सम्पूर्ण आर्थिक हानि अथवा उसके किसी भाग का वेतन अथवा जमा कोई अन्य धनराशि से वसूल करना लघु शास्ति की श्रेणी में है। इस हेतु धारा 65(2) में निर्धारित प्रक्रिया अनुसार सम्बन्धित कार्मिक को उसके विरूद्ध लगे आरोपों की सूचना दिया जाना तथा युक्तियुक्त समय के भीतर उसका स्पष्टीकरण प्राप्त किया जाना निर्धारित है और विनिर्दिष्ट अधिकारी अपने आदेश में शास्ति देने के कारण भी स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाना प्राविधानित है। निर्धारित प्रक्रिया का पालन किये बिना ही मात्र विवरण के आधार पर किये जा रहे संक्षिप्त निस्तारण न सिर्फ नियमावली के उल्लंघन दृष्टिगत अवैधानिक है अपितु नैसर्गिक न्याय प्रक्रिया के भी विपरीत है। ऐसी स्थिति में परिवहन निगम मुख्यालय द्वारा जारी पत्र संख्या 57 चेकिंग सेल/23-09 चे.से.ध्2023 दिनांक 26 अप्रैल 2023 व इसी तिथि को जारी पत्र के माध्यम से प्रस्तावित इस कटौती की अवैधानिक प्रक्रिया को तत्काल प्रभाव से निरस्त किया जाए। संघ द्वारा लगातार डीजल दर बढ़ोत्तरी के कारण किराया वृद्धि की मांग जा रही है। ऐसा न करने से परिवहन निगम अप्रैल 2022 से जनवरी 2023 की अवधि में रू0 200 करोड़ से अधिक की हानि की स्थिति में पहुँच गया।

सार्वजनिक स्थानों पर पक्षी जल पात्र किया गया वितरण

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुलतानपुर । कटका क्लब सामाजिक संस्था के द्वारा द्वारीकागंज चौकी,रामरती इंटर कॉलेज व अन्य सार्वजनिक स्थानों पर पक्षी जल पात्र वितरण किया गया। इस मौके पर उपस्थिति कटका क्लब के अध्यक्ष सौरभ मिश्रा विनम्र ने कहा कि रह के हर उस व्यक्ति को भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करना चाहिए जो पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं। पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण के लिए आवश्यक है कि जागरूक लोग आगे आएं और लोगों को इसके लिए प्रेरित करें। भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए सकोरे लगाकर काफी हद तक मूक प्राणियों की रक्षा की जा सकती है। संस्था द्वारा क्षेत्र में एक हजार पक्षी पात्र वितरण करने का लक्ष्य लिया गया है । रामरती के प्रबंधक भूपेंद्र नाथ वर्मा ने कहा कि मानव समाज का धर्म है कि वह पशु पक्षियों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें। तो वही शिक्षक सर्वेश कांत वर्मा ने बताया कि इस अभियान के तहत लोगों को प्रेरित किया गया कि खुले मुंह के बर्तनों में गर्मी के मौसम में पानी भर कर खुले में या घर की छत पर पानी भरकर रखें और गर्मी की मार से पानी को तरस रहे पक्षियों की प्यास मिटाने में सहयोग मिल सकता है । इस मौके पर उपस्थित चौकी इंचार्ज जगदीश सिंह , अमन मिश्रा , शीतला प्रसाद पांडेय , वीरेंद्र विक्रम वर्मा , चंद्र भान तिवारी , राम कृष्ण शर्मा , आदि लोग रहे ।

दुष्कर्म के आरोप में फरार चल रहे अभियुक्त को गिरफ्तार कर भेजा जेल

मिल एरिया पुलिस ने लखनऊ से किया गिरफ्तार, पति समेत दो अभियुक्त अभी भी फरार

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

रायबरेली। दुष्कर्म के मामले में फरार चल रहे एक आरोपी को मिलएरिया थाने की पुलिस ने जनपद लखनऊ से गिरफ्तार किया है। आरोपी युवक पर उसकी कथित पत्नी ने ही दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कराया था। शादी के बाद चल रही दुश्वारियां के चलते उत्पीड़न करना, दहेज मांगना जैसी अन्य शारिरिक, मानसिक यातनाएं दी जा रही थी। यही नहीं पीड़िता का आरोप है कि आरोपी पति के साथ साथ उसके अन्य 3 लोगों ने इस घटना को अंजाम दिया था। पीड़िता ने पति व परिवार के अन्य 3 लोगों के खिलाफ तहरीर दी थी जिसपर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया था। मुकदमा दर्ज करने के बाद चारों आरोपियों की पुलिस तलाश कर ही रही थी मिली सूचना के अनुसार 9 मई दिन मंगलवार को मिल एरिया थाने की पुलिस टीम ने लखनऊ से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है मिल एरिया थाना क्षेत्र के रतापुर की रहने वाली विवाहिता पत्नी ने दहेज अधिनियम सहित दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कराया था। जिसको लेकर पुलिस ने सैयद साहिल पुत्र स्वर्गीय एजाज अहमद निवासी फ्लैट संख्या ळ 203 रोहिताश फ्लोमोरिया थाना विभूति खंड जनपद लखनऊ कमिश्नरेट से आरोपी को गिरफ्तार किया है मिल एरिया थाना अध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने बताया कि आरोपी युवक पर उसकी ही कथित पत्नी ने दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कराया था साथ ही परिवार के अन्य 3 लोगों के खिलाफ भी शिकायती पत्र दिया था जिस पर मुकदमा दर्ज करते हुए आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है गिरफ्तार अभियुक्त पर अभियोग पंजीकृत करते हुए न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया है अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

जल जीवन मिशन के तहत हर ब्लाक में कलेक्शन प्रतिदिन करायें : डीएम

पाइप लाइन एवं कनेक्शन कार्य प्रगति की प्रतिदिन समीक्षा करें : एम0पी0 सिंह

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। कलेक्टेऊट सभागार में आहूत जल जीवन मिशन की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर जल के अन्तर्गत होने वाले कनेक्शन की धीमी प्रगति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित जेई तथा कार्यदायी संस्था के अधिकारियों को निर्देश दिये कि नियमित अपने ब्लाक के ग्रामों का भ्रमण करें और लोगों को जल जीवन मिशन की जानकारी देकर हर ब्लाक में कम से कम 100 कलेक्शन प्रतिदिन करायें। उन्होने कहा कि जिन गांवों में कनेक्शन प्रगति कम है वहां के जेई एवं अन्य अधिकारी ग्राम प्रधान, सचिव तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ घर-घर जाकर आधार जमा करायें और भारत सरकार की मंशानुरूप हर घर जल योजना को सफल बनायें। जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्था के अधिकारी को निर्देश दिये कि कनेक्शन के लिए मेन पावर बढ़ायें और सभी ब्लाकों में प्रतिदिन अधिक से अधिक कनेक्शन करायें और किसी गांव में दिक्कत होने पर संबंधित उप जिलाधिकारी को अवगत कराकर समस्या का समाधान करायें और फेस थ्री में होने वाले पाइप लाइन कार्य को निर्धारित समय में पूरा करायें। बैठक में जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता जल निगम ग्रामीण एके त्रिपाठी से कहा कि कार्यदायी संस्था द्वारा कराये जा रहे पाइप लाइन एवं कनेक्शन कार्य प्रगति की प्रतिदिन समीक्षा करें और कार्य में लापरवाही करने वाले कर्मचारियों पर कार्यवाही करें। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरूरानी आदि उपस्थित रहीं।

बीसी संचालक से बाइक सवार तीन बदमाशों ने की लूट, घर जाते वक्त बनाया निशाना

तमंचे के बल पर हुई लूट से इलाके में हड़कंप

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। पिहानी इलाके में तीन बाइक सवार बदमाशों ने बीसी संचालक से लूट की वारदात को अंजाम दिया है। देर रात घर जाते वक्त बदमाशों ने बीसी संचालक को निशाना बनाया है। तमंचे के बल पर ढाई लाख की लूट की वारदात से इलाके में हड़कंप मच गया। मौके पर पहुंची पुलिस मामले के जांच में जुटी है। बताया गया कि पिहानी थाना क्षेत्र के सरहेजू गांव निवासी रामवीर सिंह यादव पीएनबी बैंक का बीसी प्वाइंट चलाते है। पिहानी कस्बे में ही इनका पंजाब नेशनल बैंक का बीसी प्वाइंट है। जिसे यह बंद करके अपने घर जा रहे थे। इसी बीच रास्ते में बाइक सवार तीन बदमाशों ने इनका पीछा किया। जिसके बाद बीसी संचालक की गाड़ी रोककर तमंचा लगाया और ढाई लाख रूपये से भरा बैग छीन लिया। देर रात हुई लूट की घटना से इलाके में हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस मामले के जांच में जुटी है। बताया गया बीसी संचालक द्वारा जो बाइक पहचान की गई है, उस बाइक को पुलिस ने बरामद कर लिया है। इसके साथ ही संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताक्ष की जा रही है। एसपी राजेश द्विवेदी ने एएसपी पश्चिमी दुर्गेश कुमार सिंह व सीओ हरियावां शिल्पा कुमारी समेत भारी पुलिस फोर्स के साथ मौके मौके का जायजा लिया है। एएसपी पश्चिमी दुर्गेश कुमार सिंह ने बताया कि पिहानी थाना क्षेत्र में बीसी संचालक से लूट की सूचना मिली है। पुलिस मामले में जांच -पड़ताल कर रही है, जो संदिग्ध बाइक बीसी संचालक ने बताई है उसको बरामद कर लिया गया है। सत्यता के आधार पर घटना का खुलासा किया जाएगा।

रामगंगा नदी में नहाने गए दो बच्चे गहरे पानी में डूबे, एक का शव निकाला गया दूसरे की तलाश जारी

एक दूसरे को बचाने के चक्कर में डूबने की आशंका

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। अरवल इलाके के राम गंगा नदी में 5 बच्चे नहाने गए। जिसमें तीन बच्चे निकल आए जबकि दो बच्चे गहरे पानी में डूब गए। सूचना से परिजनों में कोहराम मच गया। ग्रामीण और गोताखोरों की मदद से एक बच्चे के शव को निकाला गया है, और एक बच्चे की तलाश की जा रही है। बताया गया कि अरवल थाना क्षेत्र के बेहटा मुड़िया गांव के पास से निकली रामगंगा नदी में 5बच्चे नहाने गए। जिसमें तीन बच्चे निकल आए और दो बच्चे गहरे पानी में डूब गए। जिनकी पहचान शिवांशु पुत्र रामप्रताप व केतन पुत्र जयपाल के रूप में हुई है। बच्चों के डूबने की खबर मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया। देखते ही देखते सैकड़ों ग्रामीण नदी के पास पहुंच गए। जिन्होंने गोताखोरों की मदद से बच्चों की तलाश शुरू कर दी है। कड़ी मशक्कत के बाद एक बच्चे का शव निकाला गया है, जबकि दूसरे की तलाश जारी है। सुरक्षा व्यवस्था के लिहाज से इलाकाई पुलिस मौके पर है। स्थानीय लोगों के मुताबिक एक बच्चा नहाते समय गहरे पानी में चला गया जोकि डूबने लगा। इसे देखकर उसके साथी ने बचाने का प्रयास किया। जिसके चलते दोनों गहरे पानी में जाकर डूब जाए। जिसमें एक बच्चे का शव निकाला जा चुका है और दूसरे की तलाश की जा रही है। फिलहाल दो बच्चों के डूबने से इलाके में हड़कंप मच गया है। एसपी राजेश द्विवेदी ने बताया कि अरवल थाना क्षेत्र के रामगंगा नदी में दो बच्चों के डूबने की सूचना मिली है। जिसमें स्थानीय पुलिस मौके पर है, गोताखोरों की मदद से तलाश की का रही है। एक बच्चे का शव निकाला जा चुका है जबकि दूसरे की तलाश जारी है।

युवक ने ग्रामप्रधान पर लगाया भूमिधरी खेत जोत लेने का आरोप, शिकायती पत्र देकर लगाई न्याय की गुहार

संवाददाता, महराजगंज, रायबरेली। क्षेत्र के पूरे गोसाई मजरे कुशमहुरा निवासी युवक ने उपजिलाधिकारी सहित क्षेत्रीय अधिकारियों को शिकायती पत्र देते हुए ग्राम प्रधान पर उसकी भूमिधरी भूमि जोत लेने का आरोप लगाया है। युवक ने ग्राम प्रधान पर उसे धमकाने व गाली गलौज करने का भी आरोप लगाया है। मामले में उपजिलाधिकारी ने राजस्व टीम को जांच करने के निर्देश दिये हैं। विकास खण्ड क्षेत्र के पूरे गोसाई मजरे कुशमहुरा निवासी रमेश कुमार पुत्र रामहेत ने उपजिलाधिकारी राजेन्द्र प्रसाद, तहसीलदार अभिनव पाठक, क्षेत्राधिकारी अरूण कुमार नौहवार, व खण्ड विकास अधिकारी शिव बहादुर सिंह को शिकायती पत्र देते हुए बताया कि उसकी भूमिधरी भूमि गाटा सं0 801 व 802 पर गांव के ग्राम प्रधान रमेश कुमार मौर्य ने जबरन चरी की बुआई कर ली है। पूंछने पर ग्राम प्रधान उस पर बिगड़ गये और गाली गलौज करते हुए कहा कि ग्राम प्रधान हूं पूरे ग्राम सभा की जमीन में कुछ भी कर सकता हूं ज्यादा नेतागीरी करोगे तो पूरे जमीन पर जुताई करवा दूंगा। मामले मे उपजिलाधिकारी राजेन्द्र प्रसाद ने क्षेत्रीय लेखपाल को मौके पर जाकर जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिये है।

मारपीट में चार के खिलाफकेस दर्ज

संवाददाता, हरदोई । टडियावा थाने के ग्राम देभिया फत्तेपुर के रहने दलित बीरू पुत्र गजराज ने पुलिस को तहरीर देते हुए 7 अप्रैल की शाम गोमती नदी पर स्नान कर रहा था, उसी बीच वहां पर पहले से मौजूद गांव के संग्राम, कैलाश, रामसेवक और अज्ञात ने शराब के नशे में पहले तो गाली-गलौज की, इस पर उसने एतराज जताया, तो उसकी लाठी-डंडों से पिटाई कर दी।बीच- बराव करने पहुंचे उसके साथी ऋषिकान्त की पिटाई कर दी। इस घटना में उसका दाहिना पैर टूट गया। उसने जानमाल की देने का आरोप लगाया है। पुलिस ने उसकी तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर दी है।

पति से झगड़ा कर पत्नी ने की आत्महत्या, पिता बोला, हुई हत्या

संवाददाता, हरदोई । शादी के 15 साल बीतने के बाद पति ने फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली थी। विधवा हुई भाभी को उसके देवर ने अपना लिया। दोनों खुशी-खुशी रहने लगे। लेकिन इसी बीच बुधवार की सुबह उन दोनों के बीच कुछ नोंकझोंक हुई और उसके बाद पत्नी ने फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली। बताया गया है कि पिहानी कोतवाली के कुल्लही की 40 वर्षीय संगीता ने बुधवार की सुबह साड़ी से फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली। इस बारे में बताया गया है कि मझिला थाने के मरघटिया निवासी सुंदर ने करीब 20 साल पहले अपनी पुत्री संगीता की शादी कुल्लही निवासी अनिल के साथ की थी। शादी के पांच साल बीते, उसी बीच अनिल ने फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली थी। संगीता के कोई औलाद नहीं थी, उसके देवर सुनील ने विधवा भाभी को अपनाने का फैसला लिया और सब लोगों की रजामंदी से उसने संगीता से शादी कर ली। दोनों खुशी-खुशी रहने लगे। बुधवार की सुबह संगीता और सुनील के बीच किसी बात पर नोंकझोंक हो गई। बताते हैं कि सुनील बाहर चला गया और इधर संगीता ने साड़ी से फांसी लगा ली।

संदिग्ध परिस्थितियों में घर से लापता हुए युवक के परिजनों ने दर्ज कराई गुमशुदगी

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। बीती 30 तारीख को संदिग्ध परिस्थितियों में घर से लापता हुए युवक की परिजनों द्वारा तलाश की गई लेकिन युवक का पता नहीं चल पाया है, बुधवार को युवक के चाचा ने कोतवाली में गुमशुदगी की तहरीर दी है। मामला कोतवाली क्षेत्र के दृगपाल का पुरवा मजरे उसरैना गांव का है,गाँव निवासी रामकुमार का कहना है कि उनका 35 वर्षीय भतीजा शोभनाथ 30 अप्रैल की रात संदिग्ध परिस्थितियों में घर से लापता हो गया, काफी खोजबीन के बाद भी उसका पता नहीं चल सका है। इस बाबत कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि मामले में गुमशुदगी दर्ज कर लापता युवक की तलाश की जा रही है।

बैनामे की जमीन पर निर्माण कार्य में दबंगों का रोड़ा, पीड़िता ने तहसीलदार से की शिकायत

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। बैनामे की जमीन पर किये जा रहे निर्माण कार्य पर दबंग द्वारा अड़ंगा लगाया जा रहा है, पीड़ित महिला ने तहसीलदार से मामले की शिकायत की है। मामला तहसील क्षेत्र के कमोली गाँव का है, गाँव निवासी संगीता देवी का कहना है कि एक वर्ष पूर्व उन्होंने मकान बनाने के लिए गांव में ही एक प्लाट का बैनामा लिया था, जिस पर वो मकान निर्माण कर रही हैं लेकिन गाँव के ही एक व्यक्ति द्वारा उक्त भूमि को अपना बताकर अड़ंगा लगाया जा रहा है और विरोध करने पर गालीगलौज व धमकी दी जा रही है, बुधवार को पीड़िता ने मामले की शिकायत तहसीलदार से की है। इस बाबत तहसीलदार अजय गुप्ता ने बताया कि मामले में कोतवाली प्रभारी को जांच कर कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया है।

प्रधान द्वारा कब्रिस्तान की भूमि पर जबरन किया जा रहा कब्जा

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। प्रधान द्वारा कब्रिस्तान की भूमि को जबरन खुदवाकर उस पर कब्जा किया जा रहा है, कोतवाली में मामले की शिकायत की गई है। मामला कोतवाली क्षेत्र के धौरहरा गांव का है, गाँव निवासी कैलाश व हरिश्चंद्र का कहना है कि उनके परिवार के व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसे दफनाने के लिए गाँव में ही कब्रिस्तान की भूमि है, जिस पर पड़ोसी ग्राम पंचायत रोहनियां के ग्राम प्रधान द्वारा जेसीबी मशीन से खुदवाकर उस पर कब्जा किया जा रहा है, पीड़ितों ने बुधवार को कोतवाली में मामले की तहरीर दी है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि तहरीर मिली है,जांच कर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

आग लगने से 4दुकान और 10 बाइक जलकर राख, इंडस्ट्रियल एरिया में लगी भीषण आग से मचा हड़कंप

संवाददाता, हरदोई। कछौना इलाके में आग लगने से 4दुकान और 10बाइक जलकर राख हो गई। संडीला इंडस्ट्रियल एरिया में हुए हादसे से लोगों में हड़कंप मच गया। आग ने पहले किराना की दुकान को जद में लिया। फिर तांडव मचाते हुए 10बाइक समेत चार दुकानों को जलाकर राख कर दिया। कड़ी मशक्कत के बाद दमकलकर्मियों ने आग पर काबू पाया है। बताया गया कि कछौना के संडीला इंडस्ट्रियल एरिया में रैंसो निवासी सागर की किराना दुकान है। जिसमें अचानक आग लग गई जिसे आसपास के लोगों ने बुझाने का प्रयास किया। लेकिन तब तक दुकान में रखे सिलेंडर में विस्फोट हो गया। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। जिसने 4दुकानों और 10बाईकों को अपनी जद में ले लिया। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया है। लेकिन तब तक 4दुकान और 10 बाइक जलकर राख हो गई। बताया गया ग्रीन प्लाईवुड कंपनी में कार्य करने वाले मजदूरों ने बाइक पास में बनी झोपड़ी में खड़ी की थी। जिसमें आग लगने से 10बाइक और चार दुकानें जलकर राख हो गई। आग लगने के कारणों की पुलिस जांच में जुटी है। हादसे में 15लाख रूपये के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। एएसपी पूर्वी नृपेंद्र कुमार ने बताया कि कछौना के इंडस्ट्रियल एरिया में अचानक आग लग गई। जिसकी जद में आने से 4दुकानें और 10बाइक जलकर राख हो गई। 15लाख रूपये के नुकसान का अनुमान लगाया जा रहा है। पुलिस आग लगने की घटना के पहलुओं की जांच कर रही है।

डीएम व एसपी ने मतगणना स्थल, स्ट्रांग रूम व्यवस्था का लिया जायजा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

जौनपुर। नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन की मतगणना को सकुशल संपन्न कराने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी अनुज कुमार झा और पुलिस अधीक्षक डॉक्टर अजय पाल शर्मा के द्वारा टी.डी. इंटर कॉलेज में बनाए गए मतगणना स्थल, स्ट्रांग रूम का निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान जिलाधिकारी के द्वारा सीसीटीवी, बैरिकेडिंग सहित मतगणना के लिए की गई तैयारियों की जानकारी ली। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि मतगणना से जुड़ी समस्त तैयारियां समय से पूर्व पूर्ण करना सुनिश्चित करें। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि जिले की 12 निकायों की मतगणना 13 मई को सुबह 8 बजे 105 टेबल पर होगी जिसमें तिलकधारी सिंह इण्टर कालेज में जौनपुर नगर पालिका परिषद, नगर पंचायत कचगांव, नगर पंचायत गौराबादशाहपुर व नगर पंचायत जफराबाद निकाय की गणना और अन्य निकायों की गणना उनके तहसील क्षेत्रों में होगी। जिसमें नगर पालिका परिषद शाहगंज एवं नगर पंचायत खेतासराय की मतगणना कृषि उत्पादन मण्डी समिति शाहगंज, नगर पालिका परिषद मुंगरा बादशाहपुर एवं नगर पंचायत मछलीशहर की मतगणना बिहारी महिला महाविद्यालय मछलीशहर परिसर जौनपुर में होगी, नगर पंचायत मड़ियाहूँ एवं नगर पंचायत रामपुर की मतगणना स्वामी विवेकानन्द इण्टर कालेज मड़ियाहूँ, नगर पंचायत केराकत की मतगणना पब्लिक इण्टर कालेज मनियरा केराकत एवं नगर पंचायत बदलापुर की मतगणना सल्तनत बहादुर पी0जी0 कालेज बदलापुर में होगी। समस्त लगे कार्मिकों का रेंडमाइजेशन हो चुका है और उन्हें प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रत्येक केंद्र पर सुपर जोनल मजिस्ट्रेट लगाए गए हैं। मतगणना शांतिपूर्वक संपन्न कराए जाने हेतु त्रि-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। उप जिला निर्वाचन अधिकारी राम अक्षयवर चौहान, उप जिलाधिकारी सदर सुनील कुमार, जिला विकास अधिकारी बी.बी. सिंह, जिला सूचना अधिकारी मनोकामना राय, अधीक्षण अभियंता पी डब्ल्यू डी, तहसीलदार, क्षेत्राधिकारी सहित अन्य सम्बंधित अधिकारी गण उपस्थित रहे।

तीसरी आंख की निगरानी में मतगणना कराने की मांग

संवाददाता, महाराजगंज, रायबरेली। समाजवादी पार्टी से अध्यक्ष पद के प्रत्यासी ने जिलानिर्वाचन अधिकारीध् जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में मतगणना कराए जाने की मांग की है। नगर निकाय चुनाव हेतु 4 मई को मतदान संपन्न हो गया है, आगामी 13 मई को होने वाली मतगणना को महराजगंज नगर पंचायत के समाजवादी पार्टी प्रत्याशी शोभनाथ वैश्य ने जिला निर्वाचन अधिकारी ध् जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर कहा है कि सत्ताधारी भाजपा के प्रत्याशी नेता व उनके समर्थक खुलेआम चर्चा कर रहे हैं कि मतदान चाहे जिसके पक्ष में हुआ हो जीत का प्रमाण पत्र भाजपा के ही प्रत्याशी को मिलेगा क्योंकि हमारी सरकार है और अधिकारी वही करेंगे जो हम चाहेंगे । सत्ताधारी भाजपा के प्रत्याशी व नेताओं के इस कथन से सपा प्रत्यासी को आशंका है कि मतगणना में बेईमानी की जा सकती है। उन्होंने मांग की है कि स्ट्रांग रूम से मत पेटियां निकालकर मतगणना कक्ष में लाने और मतगणना का कार्य पूर्ण होने तक सारी कार्यवाही सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में कराया जाना चाहिए । जिससे मतगणना का कार्य निष्पक्षता से हो और चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों को किसी प्रकार की दिक्कतों का सामना न करना पड़े। सपा प्रत्यासी शोभनाथ वैश्य ने ज्ञापन देकर सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में मतगणना कराए जाने की मांग की है।

बेसिक शिक्षा अधिकारी ने किया विद्यालयों का औचक निरीक्षण, नदारद मिले गुरु जी

छात्रों की कम उपस्थिति पर लगाई फटकार, छात्र संख्या बढ़ाएं जाने के दिये निर्देश प्रा0वि0 जमुनिया की बेहतर व्यवस्था पर प्रधानाध्यापिका के कार्यों की सराहना की

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

रायबरेली। जिले में शिक्षा व्यवस्था के हालात की जानकारी लेने के लिए बुधवार को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शिवेन्द्र प्रताप सिंह ने जिले के विद्यालयों का निरीक्षण किया। विद्यालयों का निरीक्षण करने पहुंचें बीएसए को सुबह-सुबह एक विद्यालय में शिक्षक अनुपस्थित मिले। विद्यालयों में छात्रों की संख्या कम होने पर नाराजगी जताते हुए शिक्षकों को फटकार लगाई और कहा कि आप लोग अपने यहां पर छात्रों की संख्या बढ़ाएं। बीएसए ने बुधवार को बीईओ राही बृजलाल, डीसी एमडीएम विनय तिवारी के साथ विद्यालयों का निरीक्षण किया। सुबह करीब सवा सात बजे राही ब्लॉक के कम्पोजिट विद्यालय जगदीशपुर पहुंच गए और वहां पर छात्रों की प्रार्थना में शामिल हुए। यहां पर विद्यालय समय तक में कई शिक्षक नहीं पहुंचें थे, जिस पर उन्होंने नाराजगी जताई। इसके बाद में उन्होंने कम्पोजिट विद्यालय भुएमऊ का निरीक्षण किया। यहां पर छात्रों के साथ प्रार्थना में शामिल हुए। इसके बाद प्राथमिक विद्यालय जमुनिया पहुंचें यहां पर उन्होंने छात्रों का निपुण टेस्ट किया। विद्यालय की बेहतर व्यवस्था पर उन्होंने प्रधानाध्यापिका प्रीति वर्मा के कार्यों की सराहना की। इसके बाद में प्राथमिक विद्यालय कचनावां पहुंचें, यहां पर छात्रों की उपस्थिति कम होने पर नाराजगी जताई और शिक्षा व्यवस्था को बेहतर करने के निर्देश दिए। इसके बाद में आंटी नौगवां का निरीक्षण किया। ब्लॉक के इमली तिराहा और गौरापुर विद्यालय में छात्रों की संख्या कम होने पर नाराजगी जताते हुए शिक्षकों से छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने के निर्देश दिए।

नगरीय निकाय चुनाव को लेकर बैठक किया गया

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सिद्धार्थनगर। नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 को सकुशल सम्पन्न कराये जाने के लिए आयुक्त बस्ती मण्डल, बस्ती योगेश्वर राम मिश्र की अध्यक्षता एवं पुलिस महानिरीक्षक बस्ती परिक्षेत्र बस्ती आर.के.भारद्वाज जिलाधिकारी संजीव रंजन, पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द एवं मुख्य विकास अधिकारी की उपस्थिति में जिलाधिकारी कक्ष में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में आयुक्त बस्ती मण्डल, बस्ती योगेश्वर राम मिश्र ने नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 को सकुशल सम्पन्न कराये जाने के लिए सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की गयी। पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द ने जानकारी देते हुए बताया कि जनपद में पर्याप्त पुलिसध्फोर्स उपलब्ध है। आयुक्त बस्ती मण्डल, बस्ती ने कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा दिये गये निर्देश का शत-प्रतिशत पालन किया जाये। आयुक्त बस्ती मण्डल, बस्ती ने जिला आबकारी अधिकारी को निर्देश दिया कि अवैध शराब की विक्री एवं शराब का वितरण बन्द हो। इसके लिए छापेमारी कर कार्यवाही करने का निर्देश दिया। आयुक्त बस्ती मण्डल, बस्ती ने समस्त उपजिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी को निर्देश दिया कि क्षेत्र में भ्रमण करे। सभी तहसीलो पर एम्बुलेंस की व्यवस्था अवश्यक होनी चाहिए। बिद्युत आपूर्ति निर्वाध रूप से संचालित रहे। पोलिंग बूथो पर पेय पदार्थ, ज्वलनशीन सामग्री लेकर कोई न आये। आयुक्त बस्ती मण्डल, बस्ती योगेश्वर राम मिश्र ने कहा कि निष्पक्ष, भयमुक्त, एवं शान्तिपूर्ण मतदान सम्पन्न कराना हम सब की जिम्मेदारी है। आप लोग अपने दायित्वों का निर्वहन करे।

देश का भविष्य सुरक्षित करने के लिए रोजगारपरक शिक्षा है जरूरी : डॉ0 विशाल

दो दिवसीय कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम का समापन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर ।एस0एस0 कॉलेज के शिक्षक शिक्षा विभाग में चल रहे दो दिवसीय कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम का समापन हो गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती वन्दना के साथ हुआ। तत्पश्चात डॉ0 प्रियंका शर्मा के निर्देशन में बी0एड0 प्रशिक्षु सुनेहा मिश्रा, प्राची बाजपेयी ने सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बी0एड0 छात्राओं ने अतिथियों का रोली चन्दन लगाकर स्वागत किया। प्रो0 डॉ0 प्रभात शुक्ल एवं डॉ0 मनोज मिश्र ने अतिथियों का अंगवस्त्र एवं पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। इस अवसर पर वरिष्ठ शिक्षक डॉ0 विशाल पाण्डेय ने कहा कि शिक्षा रोजगार प्राप्ति का सशक्त साधन है। आज का अधिकांश युवा औपचारिक शिक्षा इसीलिए ग्रहण करता है कि उसे उसकी शिक्षा के अनुरूप रोजगार प्राप्त होगा। आज का युवा कल का भविष्य है। अतरू इस दृष्टि से देश का भविष्य सुरक्षित करने के लिए रोजगारपरक शिक्षा अति आवश्यक है। हमारे देश में रोजगार की बहुत सम्भावनाएं हैं। इस कड़ी में बी0एड0, एडी0एल0एड0, एम0एड0 कोर्स सुयोग्य शिक्षक बनने में सहायक एवं आवश्यक है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ0 हरिकिशोर दीक्षित ने कहा कि बी0एड0, एम0एड0 प्रशिक्षुओं को अपना भविष्य सुरक्षित करने के लिए एवं समाज में उचित सम्मान पाने के लिए अध्यापक बनना श्रेष्ठ है। आज का युवा कभी कभी दिशाहीन होने के कारण शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद किसी अन्य क्षेत्र का चयन कर लेता है जो कि उसके लिये सही नहीं है। यदि छात्र अपने एक ही क्षेत्र में लगातार प्रयास करता रहे तो उसे एक दिन सफलता जरूर मिलेगी। कार्यक्रम के अतिथियों एवं

सहभागियों का स्वागत विभाग के वरिष्ठ शिक्षक डॉ0 मनोज कुमार मिश्र ने स्वागत भाषण के माध्यम से किया। विभाग के प्रो0. डा. प्रभात शुक्ल ने कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम आशा करते हैं कि हमारे प्रशिक्षु इन दो दिनों में काफी कुछ जान चुके होंगे और वे निश्चित ही अपने जीवन में सफल होंगे। बृज निवास के संचालन में सम्पन्न हुए कार्यक्रम में मुख्य रूप से विभाग के प्राध्यापक डॉ0 शैलजा मिश्रा, संजय कुमार, रोहित सिंह, सौरभ मिश्रा, राजीव यादव, रामऔतार सिंह एवं अन्य लोग मौजूद रहे। आभार विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक सौरभ मिश्रा ने किया।

चोरी की तीन घटनाओं का हुआ खुलासा चार शातिर चोर चढ़े पुलिस के हत्थे

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उन्नाव। एसपी द्वारा चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना गंगाघाट पुलिस द्वारा चार अभियुक्तों को चोरी के जेवरात व 34 हजार रुपये नकद बरामद कर गिरफ्तार किया गया। आप को बता दे कि 6 मई को वादी शादाब पुत्र अब्दुल रहमान निवासी मो0 शाहीनगर चम्पापुरवा थाना गंगाघाट जनपद उन्नाव द्वारा तहरीरी सूचना दी गई कि 5 मई को वादी के घर का ताला तोड़कर घर में रखी दो आलमारियों से जेवर व अन्य सामान अज्ञात चोरों द्वारा चोरी कर लिया गया। प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना गंगाघाट पर मुकदमा पंजीकृत किया गया। बुधवार को थाना गंगाघाट पुलिस द्वारा सुरेन्द्र रावत उर्फ मटरू 28 पुत्र स्व0

सिद्धनाथ निवासी बलदेव पार्क मोहल्ला चम्पापुरवा थाना गंगाघाट जनपद उन्नाव, करन रावत 22 पुत्र बउआ रावत निवासी मोहल्ला चम्पापुरवा सर्वोदय स्कूल के पास थाना गंगाघाट जनपद, विकास निषाद 24 पुत्र अगनू निषाद निवासी मनसुख खेड़ा चम्पापुरवा थाना गंगाघाट, महेश निषाद 30 पुत्र स्व0 पुत्तीलाल निवासी मनसुख खेड़ा चम्पापुरवा थाना गंगाघाट जनपद को सरैया क्रासिंग के आगे बन रहे ओवर ब्रिज के पास नेतुआ गांव की तरफ जाने वाले मोड़ के पास से चोरी के जेवरात व नकदी बरामद कर गिरफ्तार किया गया। चारों अभियुक्तगण के कब्जे से थाना सोहरामऊ क्षेत्रांतर्गत हुई दो चोरियों से संबन्धित जेवरात व रुपये भी बरामद हुए है।

पत्नी की हत्या कर आरोपी पति ने पुलिस के खौफ से ट्रेन आगे कूदकर की सुसाइड

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उन्नाव। सदर कोतवाली क्षेत्र के इब्राहिम बाग के रहने वा एक पति ने बीते मंगलवार को अपनी पत्नी की सिर पर ईंट से वारकर हत्या कर दी थी। पुलिस ने बेटे की तहरीर पर पिता के खिलाफहत्या की एफआईआर दर्ज कर आरोपी की तलाश में जुटी थी। लेकिन बीती रात आरोपी ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। वही चौकी ललाऊखेड़ा के अंतर्गत इब्राहिम बाग निवासी कृष्ण दुलारी (60) पत्नी नन्हकऊ बीते मंगलवार की सुबह घर के बाहर चारपाई पर सो रही थीं। इसी दौरान पति नन्हकऊ ने उसके सिर पर ईंट से वारकर हत्या कर दी थी और मौके से फरार हो गया था। पड़ोसी सभासद ने चारपाई पर मृत अवस्था में महिला को देखा तो

घटना की सूचना उसके बेटे मुन्नू को दी। मां की हत्या की जानकारी मिलते ही मुन्नू घर पहुंचा और पुलिस को सूचना दी। बेटे की तहरीर पर आरोपी पिता नन्हकऊ के खिलाफ सदर कोतवाली में हत्या की एफआईआर दर्ज कर पुलिस ने सर्विलांस टीम की मदद से तलाश शुरू की। कई जगहों पर छानबीन की, लेकिन कुछ पता नहीं चल सका। इधर देर रात करीब एक बजे पुलिस को इब्राहिम बाग के पास रेलवे ट्रैक पर शव पड़े होने की सूचना मिली। सूचना मिलने पर चौकी की पुलिस मौके पर पहुंची तो देखा शव कि शिनाख्त नन्हकऊ के रूप में हुई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। आरोपी की मौत के बाद परिवार में कोहराम मच गया। मोर्चरी हाउस पहुंचे रिश्तेदारों ने बताया कि कृष्ण दुलारी का मंगलवार को अंतिम संस्कार नहीं हो सका था। एक साथ दोनों के शवों का अंतिम संस्कार जाजमऊ घाट पर कराया जाएगा।

जिला निर्वाचन अधिकारी जिलाधिकारी की अध्यक्षता में राजनैतिक दलों के साथ की गयी बैठक

❍ होने वाली मतगणना को सकुशल एवं निष्पक्ष व सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में सम्पन्न कराने के लिये कलेक्ट्रेट सभागार में आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिये

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उरई(जालौन)।जिला निर्वाचन अधिकारीध्जिलाधिकारी चाँदनी सिंह की अध्यक्षता में राजनैतिक दलों के साथ बैठक की गई 13 मई 2023 को नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 को होने वाली मतगणना को सकुशल एवं निष्पक्ष व सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में सम्पन्न कराने के लिये कलेक्ट्रेट सभागार में आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। उन्होने कहा कि रिटर्निंग अधिकारी ऐसे व्यक्तियों को छोड़कर किसी भी व्यक्ति को मतगणना के समय उपस्थित रहने की अनुज्ञा नही देगा। उन्होने कहा कि मतगणना हॉल के अन्दर मतगणना कार्मिक, राज्य निर्वाचन आयोग या जिला निर्वाचन अधिकारी, पंचायत एवं नगरीय निकाय द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति उपस्थित रह सकेगे। उन्होने कहा कि निर्वाचन लड़ने वाला अभ्यार्थी या उसका निर्वाचन अभिकर्ता मतगणना के समय अपने गणन अभिकर्ता के रूप में उपस्थित रहने के लिये किसी एक व्यक्ति को परिनिश्चित कर सकता हैं। ऐसी प्रत्येक नियुक्ति मतगणना

प्रारम्भ होने से पूर्व प्रारूप-34 पर उम्मीवार द्वारा स्वयं अथवा उसके निर्वाचन अभिकर्ता के द्वारा लिखित रूप से की जा सकती हैं। गणन अभिकर्ता को रिटर्निंग अधिकारी के समक्ष निर्धारित प्रारूप में घोषणा पत्र पर अपना हस्ताक्षर करना होगा। रिटर्निंग अधिकारी को यह देखना चाहिये कि नियुक्ति की सहमति के प्रतीक स्वरूप उम्मीदवार व उसके निर्वाचन अभिकर्ता द्वारा भेजे गये पत्र पर उसके हस्ताक्षर घोषणा पत्र पर किये गये हस्ताक्षर से मेल खाते हैं। नियुक्ति पत्र पर उनकी फोटो भी चस्पा होगी तथा एक फोटो अलग से ली जायेगी जिसे गणन अभिकर्ता के पास पर चस्पा कराया जायेगा। मतगणना मेज पर उम्मीदवार अथवा निर्वाचन अभिकर्ता अथवा उसके गणन अभिकर्ता में से एक ही उपस्थित रह सकता हैं। उम्मीदवार या उसके निर्वाचन अभिकर्ता के अतिरिक्त किसी अन्य को गणन अभिकर्ता का प्रतिस्थानी नही माना जायेगा साथ ही यह भी ध्यान में रखा जायेगा कि रिटर्निंग अधिकारी सहायक रिटर्निंग की मेज के पास उम्मीदवार या उसके निर्वाचन अभिकर्ता में से एक ही व्यक्ति रह सकता हैं। उन्होने कहा कि गणन अभिकर्ता के रूप में सांसदों, विधायको, जिला पंचायत अध्यक्षों, ब्लाक प्रमुखों, विशिष्ट, अति विशिष्ट व्यक्तियों, भूतपूर्व सांसदों, भूतपूर्व विधायकों, आपराधिक प्रवृति के व्यक्तियों तथा भारत सरकार, राज्य सरकार एवं स्थानीय निकायों में किसी लाभ पद धारकों को गणन अभिकर्ता के रूम में नियुक्ति नही किया जायेगा आपराधिक इतिहास के व्यक्तियों को भी गणन अभिकर्ता के रूम में नियुक्ति नही किया जायेगा। उन्होने मतगणना टेबिलों की संख्या निकायवार बताया कि नगर पालिका परिषद उरई टेबिलों को सं.- 31 कुल वार्ड- 34 कुल बूथ- 202, नगर पालिका परिषद जालौन टेबिलों को सं.- 10 कुल वार्ड- 25 कुल बूथ- 60, नगर पालिका परिषद कोंच टेबिलों को सं.- 10 कुल वार्ड- 25 कुल बूथ- 58, नगर पालिका परिषद कालपी टेबिलों को सं।- 10 कुल वार्ड- 25 कुल बूथ- 55, नगर पंचायत रामपुरा टेबिलों को सं.- 03 कुल वार्ड- 11 कुल बूथ- 16, नगर पंचायत माधौगढ़ टेबिलों को सं.- 03 कुल वार्ड- 11 कुल बूथ- 14, नगर पंचायत ऊमरी टेबिलों को सं.- 02 कुल वार्ड- 10 कुल बूथ- 10, नगर पंचायत कोटरा टेबिलों को सं.- 02 कुल वार्ड- 10 कुल बूथ- 11, नगर पंचायत कदौरा टेबिलों को सं.- 03 कुल वार्ड- 12 कुल बूथ- 16, नगर पंचायत नदीगांव टेबिलों को सं.- 02 कुल वार्ड- 10 कुल बूथ- 10, नगर पंचायत एट टेबिलों को सं.- 03 कुल वार्ड- 12 कुल बूथ- 15 है। उन्होने कहा कि मतगणना स्थल पर किसी भी व्यक्ति द्वारा पानी की बोतल, स्याही बाला पेन, मोबाईल आदि ले जाना पूर्ण रूप से वर्जित रहेगा। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी पूनम निगम, अपर जिलाधिकारी न्यायिक मोतीलाल यादव सहित भाजपा से शान्तिस्वरूप महेश्वरी, जिलाध्यक्ष कांग्रेस दीपांशु समाधिया, सपा से राजीव शर्मा, बसपा के प्रतिनिधि आदि मौजूद रहे।

विधानसभा छानबे उप निर्वाचन शान्तिपूर्ण व सकुशल सम्पन्न

जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने पूरे विधानसभा क्षेत्र में भ्रमण कर हो रहे मतदान व सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

मीरजापुर । 2023- 395-(आ.जा.)छानबे विधानसभा सभा उप चुनाव आज सकुशल सम्पन्न हुआ। मतदान को सकुशल व शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के दृष्टिगत ए0डी0जी0जाने वाराणसी श्री राम कुमार, मण्डलायुक्त डॉ0 मुथुकुमार स्वामी बी0, उप पुलिस महानिरीक्षक आर0पी0 सिंह क्षेत्र में भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। जिलाधिकारीध्जिला निर्वाचन अधिकारी दिव्या मित्तल व पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्र शांतिपूर्ण मतदान कराने के दृष्टिगत विधानसभा क्षेत्रान्तर्गत जिगना, गैपुरा, विजयपुर, लालगंज, हलिया, गड़बड़ा, ड्रमडगंज क्षेत्र में भ्रमणशील रहकर पोलिंग बूथों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पोलिंग बूथ संख्या-438 महोखर, 335 व 336 मनिकठा, 344, 345 व 346 गौरा, प्राथमिकि विद्यालय लालगंज पोलिब बूथ संख्या- 36, 60 एवं कठवार प्राथमिक विद्यालय

मतदेय स्थल-157, दुबार कला मतदेय स्थल 161 व 162 तथा 159 व 160 एवं पोलिंग संख्या-163 खैराकला, बूथ संख्या- 167 व 168 दुबार खुर्द, प्राथमिक विद्यालय हलिया नम्बर एक के मतदेय स्थल- 241, 242, 243 व 244, प्राथमिक विद्यालय पुरवा औसाम हलिया पोलिंग बूथ-266, पोलिंग-151 महुगढ़, पोलिंग बूथ संख्या-140 स्वास्थ्य गड़बड़ा धाम, पोलिंग बूथ- 133, 134 गलरा, पोलिंग 116 महुगढ़ी सहित कुल 27 मतदान केन्द्रों के 45 मतदेय स्थलों पर पहुंच कर निरीक्षण किया गया। तत्पश्चात जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक राजकीय पालीटेक्निक कालेज बथुआ पहुंच कर स्ट्रांग रूम तथा मतदान के तैयारियों के दृष्टिगत लिए मतदान कक्ष का निरीक्षण किया। उप निर्वाचन क्षेत्र में इसके अतिरिक्त अपर जिलाधिकारी वि0ध्रा0 शिव प्रताप शुक्ल, अपर पुलिस अधीक्षक श्रीकान्त प्रजापति, रिटर्निंग आफिसर लालगंज भरत लाल सरोज सहित सभी जोनल व सेक्टर मजिस्टेऊ्ट भी भ्रमणशील रहें। विधानसभा क्षेत्रान्तर्गत बनाये गये आदर्श मतदेय स्थलों व पिंक बूथ पर मतदाताओं के द्वारा अपने मतदान के बाद बनाये गये सेल्फी प्वांइट सेल्फी भी खिचवायी गयी। बूथो पर दिव्यांग मतदाताओं के सहयोगार्थ प्रत्येक मतदान केन्द्रों पर व्हील चेयर की व्यवस्था की गयी थी। जिससे वहां उपस्थित बी0एल0ओ0 व पुलिसध्होमगार्ड के द्वारा दिव्यांग मतदाताओं को सहयोग कर मतदान दिलाया गया।

रामकथा का भव्य शुभारंभ निकली भव्य कलश यात्रा

हरदोई। शाहाबाद तहसील क्षेत्र के कमरौली ग्राम पंचायत प्रधान हर्षित द्विवेदी ज्ञानू द्वारा कराए जा रहे श्री शतचंडी महायज्ञ एवं श्री रामकथा मे वृंदावन से पधारे आचार्य श्री राम जी तिवारी जी महाराज के सानिध्य में नौ दिवसीय रामकथा का भव्य शुभारंभ विशाल कलश यात्रा के साथ शुरू हुआ । पीले एवं लाल परिधानों में सजे ग्रामवासी और सभी के पास मंगल कलश अनोखी छटा बिखेर रहे थे। बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं के ऊपर पुष्प वर्षा कर यात्रा का स्वागत हुआ। मंगल कलश लेकर चल रही महिलाओं में जबरदस्त उत्साह दिखाई दे रहा था। कथा आयोजक हर्षित द्विवेदी ज्ञानू ने जानकारी देते हुए बताया कि यात्रा के साथ ही श्री रामकथा एवं शतचंडी महायज्ञ प्रारंभ हो गया है। कथा 06 से 14 मई तक चलेगी। कथा का समय 8 बजे से रात्रि 11 बजे तक रहेगा। 10 मई को सामूहिक उपनयन संस्कार का भी आयोजन किया गया है इच्छुक जन सादर आमंत्रित है। साथ ही 15 मई को कन्याभोज के साथ ही विशाल भंडारे का आयोजन होगा। इस अवसर पर आचार्य श्री राम जी तिवारी जी महाराज ने प्रवचन देते हुए कहा कि भगवान राम ही संसार में ऐसे महापुरुष हैं। जिनके चरित्र पर रामायण जैसा महान धर्म ग्रंथ बन गया। रामायण भारतवर्ष का गौरवपूर्ण इतिहास है। जिसके माध्यम से आदर्श समाज की स्थापना हो सकती है। उन्होंने कहा कि राम का नाम ही जीवन का आधार है। इसके स्मरण करने से ही मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होती है। जीवन में आने वाले संकटों से मुक्ति मिलती है। संगीतमय रामकथा के दौरान रामायण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री राम चरित्र से संयुक्त शास्त्र है इसलिए इसको रामायण कहा गया है। रामायण भारतवर्ष का गौरवपूर्ण इतिहास है। पूरी दुनियां में कोई ऐसा महापुरुष नहीं हुआ जिसका जीवन चरित्र ही धर्मशास्त्र बन गया हो। रामायण में भगवान राम के प्राकट्य से लेकर संपूर्ण जीवन चरित्र का बडे ही विस्तार से वर्णन किया गया है। रामायण की आराधना उपासना करने से भगवान राम की प्राप्ति हो जाती है। भगवान राम का निवास स्थान- जहां श्री सीता लक्ष्मण और समस्त परिकरों के साथ भगवान श्रीराम विराजते हैं। इसलिए इसका नाम रामायण है। रामायण और भगवान राम में अंतर नहीं है।

संक्षिप्त समाचार

मार्ग दुर्घटना में घायल युवक की मौत

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। मंगलवार को सड़क दुर्घटना में घायल युवक की घर पर ही मौत हो गई, पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। गौरतलब है कि मंगलवार को मरियानी गाँव के पास दो बाइकों की भिड़ंत में एक ही बाइक पर सवार मंगेश कुमार 26 वर्ष उनका चचेरा भाई आशीष कुमार 22 वर्ष निवासी सवैयाधनी व रिश्तेदार विकास कुमार 18 वर्ष निवासी तुराबी का पुरवा मजरे मोखरा घायल हो गये थे, सभी घायलों को सीएचसी लाया गया था, जिसमें मंगेश कुमार को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया था लेकिन हालत में सुधार न होने पर जिला अस्पताल के चिकित्सकों ने उसे लखनऊ ट्रामा सेंटर रेफर किया था, देर रात मंगेश की हालत बिगड़ने पर परिजन उसे लेकर घर आ गए, बुधवार की सुबह उसकी घर पर ही मौत हो गई, पिता चंद्रपाल की तहरीर पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा है। इस बाबत कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा गया है, विधिक कार्यवाही की जा रही है।

बीती रात कोतवाली उरई क्षेत्र में पड़ने वाली हाईवे पुलिस चौकी के सिपाही को गश्त के दौरान बदमाशों ने मारी गोली

संवाददाता, उरई(जालौन)। शहर कोतवाली उरई क्षेत्र के अंर्तगत पड़ने वाली हाईवे गोविंदम होटल के पास स्थित पुलिस चौकी में तैनात सिपाही भेदजीत सिंह बीती रात झांसी-कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग गोविंदम होटल के पास पिकेट ड्यूटी कर रहा था इसी दौरान वहां से गुजर बाइक सवार बदमाशों जैसे ही सिपाही ने टोका वैसे ही बदमाशों ने पिकेट डियूटी कर सिपाही भेदजीत सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी और मौके से बदमाश भाग जाने में सफल हो गये।घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस अधीक्षक ईराज राजा, अपर पुलिस अधीक्षक, क्षेत्राधिकारी नगर के अलावा कोतवाली प्रभारी निरीक्षक भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे बाद में मृतक सिपाही का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मौके पर पहुंचे पुलिस अधीक्षक ईराज राजा ने बदमाशों की गिरफ्तारी के लिए चार टीमों का गठन कर इलाके की नाकेबंदी कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। उधर घटना की सूचना मृतक सिपाही के परिजनों को विभाग द्वारा भेज दी गयी है।

गन्दगी का पोस्टर जारी करके विकास पर कसा जा रहा तंज

संवाददाता, पूरनपुर। निर्दलीय प्रत्याशी प्रदीप जायसवाल लल्लन पिछले 15 सालों से पूरनपुर नगरपालिका के चेयरमैन हैं। ऐसे में पब्लिक सवाल भी उनसे ही पूछ रही है। नगर की सड़कों की दुर्दशा के अलावा गंदगी का पोस्टर जारी करके लोग विकास की हकीकत बयान कर रहे हैं। नगर में काफी देर से सफाई होती है। सभी सड़कें खस्ताहाल हैं। नगरपालिका की वेबसाइट बनी है, सब कुछ ऑनलाइन हुआ परन्तु ऑफलाइन काम से भट्टाचार को बढ़ावा देने व नगर में कोई भी बड़ा काम ना करने तथा ठेकेदारी आदि में मोटा कमीशन कमाने जैसे तमाम आरोप इस चुनाव के दौर में लग रहे हैं। प्रतिद्वंद्वी इन आरोपों को हवा दे रहे हैं और कह रहे हैं कि इसका जवाब मतदान से पहले दिया जाना चाहिए। कुछ लोग लल्लन की कटुभाषा शैली, गलत व्यवहार व बेबजह गली चौराहों पर अपमान करने जैसे मामलों को तूल दे रहे हैं। भाजपा विधायक बाबूराम पासवान व अन्य लोग नगरपालिका में व्याप्त गुंडागर्दी व तानाशाही जैसे आरोप भी लगभग हर सभाओं में लगाए हैं। जिसका अभी तक कोई भी जवाब सार्वजनिक रूप से नहीं आया है।

मेंड विवाद पर दलित पर धारदार हथियार से हमला

संवाददाता, पूरनपुर। मेंड विवाद को लेकर महिला को मारपीट कर घायल कर दिया।आरोप है कि जातिसूचक शब्दों का प्रयोग कर अपमानित किया गया। घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज की है। कोतवाली क्षेत्र के गांव लाह निवासी रामबेटी ने बताया कि उसका खेत के मेड़ को लेकर गांव के ही कुछ लोगों से विवाद चल रहा है। वह अपना खेत देखने गई थी।इसी दौरान ग्रामीण अपने परिवार की मदद से लाठी-डंडे व धारदार हथियार लेकर खेत पर पहुंच कर उसको देखकर गाली गलौज करने लगे। जातिसूचक शब्दों का प्रयोग कर दलित को अपमानित किया।विरोध करने पर एक राय होकर उसकी लाठी-डंडों से जमकर पिटाई लगाई।उसके बाद धारदार हथियार से हमला उस पर हमला कर गंभीर घायल कर दिया।चीखने चिल्लाने पर आस पड़ोस के लोग मौके पर पहुंच गए।उन्होंने बमुश्किल झगड़े को शांत कराया।सभी जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए।घर पहुंची महिला ने जानकारी परिजनों को दी तो उनके साथ भी गाली गलौज कर मारपीट की गई। कोतवाली पहुंचकर मामले की पुलिस को तहरीर दी।मेडिकल परीक्षण करने के बाद कोतवाली पुलिस ने गांव निवासी अमित कुमार,पुष्पेंदर,श्रीपाल,दयाराम के खिलाफ दलित उत्पीड़न मारपीट सहित कई धाराओं में अभियोग पंजीकृत कर मामले की जांच शुरू कर दी है। कोतवाल आशुतोष रघुवंशी ने बताया मामले की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।मामले की विवेचना पुलिस क्षेत्राधिकारी द्वारा की जा रही है।

सडक हादसों में महिला समेत आधा दर्जन घायल

संवाददाता, पूरनपुर। तिलक समारोह से वापस लौट रहे बाइक सवारों को पिकअप ने टक्कर मार दी।हादसे में तीन लोग घायल हो गए। सभी को सीएचसी में भर्ती कराया गया।दो अन्य मामले में अज्ञात वाहन की टक्कर से लोग घायल हो गए। सभी को जिला अस्पताल रेफर किया है। बिलसंडा थाना क्षेत्र के गांव सिकलापुर निवासी भूपराम की रिश्तेदारी कोतवाली क्षेत्र के गांव सुखदासपुर में है। सोमवार को वह अपनी ममेरी बहन बबीता और भाई हरिओम के साथ बाइक से तिलक समारोह में आए थे।देर रात वापस लौटने के दौरान कलीनगर पूरनपुर मार्ग पर गुरुद्वारे के पास तेज रफ्तार से आ रही पिकअप ने टक्कर मार दी।हादसे में बाइक पर सवार तीनों घायल हो गए।हादसे को लेकर खलबली मच गई।पीछे से आ रहे राहगीर की मदद से सूचना 108 एंबुलेंस को दी गई।जहां से सभी को सीएचसी लाया गया। एक की हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रेफर किया गया।अन्य सड़क हादसे में शेरपुर निवासी निहाल जरूरी काम से माधोटांडा गया था।वापस लौटने के दौरान लोधीपुर भट्टे के पास अनियंत्रित कार ने बाइक में टक्कर मार दी। जिससे युवक सड़क पर गिरकर जख्मी हो गया। एक अन्य मामले में सेहरामऊ निवासी वीरपाल व अपने दोस्त के साथ किसी काम के लिए खुटार जा रहा था।रास्ते में उसे अज्ञात वाहन ने टक्कर मारकर घायल कर दिया।सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को उपचार के लिए सीएचसी भिजवाया। जहां से हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।सूचना मिलने पर घायलों के परिजन भी अस्पताल पहुंच गए।

पुरनपुर तय रिश्ता टूटने और युवक के द्वारा दूसरी शादी होने से आहत युवती ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली थी

संवाददाता, पुरनपुर । पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा था।पोस्टमार्टम रिपोर्ट में युवती की मौत का राज नहीं खुल सका है।इस पर उसका विसरा सुरक्षित कर प्रयोगशाला विधि भेजा जाएगा।गमगीन माहौल में अंतिम संस्कार कर दिया गया है। माधोटांडा थाना क्षेत्र के गांव रुद्रपुर निवासी संत कुमार ने अपनी बहन पूजा की शादी पूरनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव निवासी एक युवक के साथ तय की थी।पांच मई को बारात लेकर आना तो हुआ।लेकिन बारात लाने से कुछ घंटे पहले युवक ने दहेज में पांच लाख रुपये की मांग पूरी न करने पर शादी करने से इनकार कर दिया था।इसके बाद युवक ने दूसरी शादी कर ली।इससे आहत होकर उसकी बहन पूजा ने तीन दिन पहले जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर ली थी।परिजनों ने पुलिस पर तहरीर देने के बावजूद कार्रवाई न करने का आरोप लगाकर मुख्यमंत्री से शिकायत की।

टीलॉजी 24 टी हाउस कैफे आउटलेट का भव्य शुभारंभ

संवाददाता

कानपुर। कानपुर विजय नगर चौराहा किशोरी लाल पेट्रोल पंप पर स्थित टीलॉजी 24 टी हाउस कैफे का भव्य शुभारंभ हुआ इस मौके पर एमडी मिनिषा कपूर पुलकित कपूर ने मीडिया से बातचीत करते हुए बताया कि आज हमारे नवनिर्मित टीलॉजी कैफे की दूसरी शाखा का शुभारंभ मुख्य अतिथि रमन कपूर सेंबल मुखर्जी के कर कमलों द्वारा फीता काटकर किया गया कानपुर नगर वासियों के लिए एक बहुत अच्छा स्थान साबित होगा क्योंकि जो भी चाय के शौकीन है इससे अच्छा कोई भी शहर के अंदर कैफे उपलब्ध नहीं है हमारे इस कैफे की सबसे खास बात यह है कि पूरी तरीके से वातानुकूलित और चाय के दीवानों के लिए कई फ्लेवर में चाय उपलब्ध है हमारे यहां जो भी फ्लेवर है बिल्कुल उनका अलग आपको स्वाद मिलेगा साफ-सफाई से लेकर कस्टमर के सभी बातों का ध्यान दिया जाता है चाय के साथ साथ और भी खाने-पीने के आइटम उपलब्ध है जैसे पिज्जा के कई वैरायटी आपको मिलेगी 24 घंटे इसकी सुविधा आपको मिलती रहेगी इनडोर आउटडोर लोगों को व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी हमारी सर्विस ऑनलाइन भी उपलब्ध है एक सामान्य रेट चाय का रखा गया है जो सभी वर्गों के लिए आसानी से उपलब्ध हो सके और सुकून भरे माहौल में चाय का लुफ्त उठा सकें सबसे विशेष बात यह है कि जो भी व्यक्ति पेट्रोल अपने वाहन में डलवाते है तो थोड़ी देर रुकने के बाद वह आराम से बैठकर चाय का आनंद उठा सकेगा और हमारी चाय स्नेक्स की सर्विस अपने वाहन में लेना चाहता है तो उसको उपलब्ध कराई जाएगी इसका कोई भी अतिरिक्त है चार्ज नहीं है सभी प्रकार के आइटम उसको वही उपलब्ध करा दिए जाएंगे शहरवासियों से कहना चाहूंगा कि वह एक बार अपने परिवार के साथ आए और टीलॉजी 24 ट्री हाउस कैफे में अपने परिवार सहित आएं और एक बेहतरीन चाय का आनंद उठाएं हमारी सर्विस का मात्र उद्देश्य है कि लोगों को कम पैसे में अच्छी चीज उपलब्ध कराना है लोग आए और अपनी सेवा का अवसर जरूर प्रदान करें इस मौके पर मुख्य रूप से विनीत चोपड़ा पुनीत दिक्षित निकिता सिंह कपूर परिवार से विजय कपूर चेयरमैन अजय कपूर संजय कपूर सहित क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मतगणना के लिए शुरू हुआ कर्मचारियों का प्रशिक्षण

संवाददाता, प्रयागराज। नगरीय निकाय चुनाव की मतगणना के लिए कर्मचारियों का प्रशिक्षण शुरू हो गया। बिशपजानसन स्कूल एवं कॉलेज में 800 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण स्थल पर सीडीओ गौरव कुमार की मौजूदगी में कर्मचारियों को मतगणना की जानकारी दी गई। सुबह 11 बजे से ईवीएम से राउंडवार कैसे काउंटिंग होगी इसके बारे में बताया जा रहा है। दोपहर दो बजे पोस्टल और पेपर बैलेट की मतगणना के बारे में बताया जाएगा। नगर निगम की मतगणना पर एक टेबल पर चार कर्मचारी होंगे। जिसमें एक पर्यवेक्षक, दो कर्मचारी काउंटिंग में होंगे और ईवीएम लाने और ले जाने के लिए एक कर्मचारी होगा। वहीं नगर पंचायत की मतगणना में एक टेबल पर पांच कर्मचारियों की तैनाती की जाएगी।

प्रत्याशियों ने चुनाव प्रचार के अंतिम दिन मे वाहन जुलूस निकालकर झोंकी ताकत

संवाददाता

कानपुर। कानपुर चुनाव प्रचार के आखरी दिन में सभी पार्षद प्रत्याशियों ने अपने अपने क्षेत्र में भारी-भरकम जुलूस के साथ क्षेत्र की जनता से जनसंपर्क किया वार्ड 68 निर्दलीय पार्षद प्रत्याशी रिजवाना बेगम ने अपने क्षेत्र में जनसंपर्क किया और अपना अमूल्य वोट देने की अपील की इस दौरान पार्षद प्रत्याशी पति ने मीडिया से बातचीत करते हुए बताया कि हमारे क्षेत्र की जनता 25 सालों से मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रही है जैसे कि सड़क नाली सीवर लाइन मार्ग व्यवस्था बिल्कुल चौपट है जनता से अपील करता हूं कि अपने सही मत का प्रयोग करके नगर निगम पहुंचाएं और अपने क्षेत्र की समस्याओं का निस्तारण कराएं अपना अमूल्य वोट देकर भारी मतों से विजई बनाएं इस दौरान असगर अलीशाह अपसर अहमद हसीम खान रशीद अंसारी सियासत अली शादाब आलम हनीफशहजाद फैजल सहित आदि लोग मौजूद रहे। वार्ड 88 से रेखा गुप्ता ने चुनाव चिन साइकिल पर मोहर लगाकर अपना अमूल्य वोट देकर विजय बनाइये और नगर निगम पहुंचाने का काम करें क्योंकि अपनी मेयर वंदना बाजपाई के हाथों को मजबूत करें और अपने शहर के साथ अपने क्षेत्र का विकास कराएं इस दौरान अंकुर गुप्ता अजय सिंह रेखा माधुरी लव कुश विनीता सहित आदि लोग मौजूद रहे। इसी क्रम में कांग्रेस पार्षद प्रत्याशी वार्ड 68 से अजरा सिराज ने लोगो से जनसम्पर्क किया प्रत्याशीनी पति मो 0 कुनकुन ने लोगो से अपील की अपना अमूल्य वोट देकर भारी मतो से विजय बनाइये और अपने वार्ड का विकास कराये।

गुड्डू मुस्लिम उड़ीसा के एक होटल में प्रवेश करते दिखा

सीसीटीवी में कैद तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल

संवाददाता, प्रयागराज। बमबाज गुड्डू मुस्लिम प्रदेश पुलिस के लिए पहेली बन गया है।सोशल मीडिया पर दावा किया जा रहा है कि ये वीडियो गुड्डू मुस्लिम का है। हालांकि अभी तक इसकी अधिकारिक पुष्टि नहीं हो पाई है। दावा किया जा रहा है कि ये वीडियो गुड्डू मुस्लिम का है।हालांकि अभी तक इसकी अधिकारिक पुष्टि नहीं हो पाई है। उमेश पाल हत्याकांड में शामिल बमबाज गुड्डू मुस्लिम का है। वीडियो में दिख रहा है कि वह एक होटल में जा रहा है। वीडियो उड़ीसा के बारगढ़ का बताया जा रहा है। यह वीडियो 11 अप्रैल का बताया जा रहा है। गुड्डू मुस्लिम कहां है यूपी पुलिस को अभी तक इसकी जानकारी नहीं है। पुलिस लगातार उसका पीछा कर रही है लेकिन कोई सफलता नहीं मिली है।

24 फरवरी से फरार चल रहा है गुड्डू मुस्लिम

धूमनगंज थाना अतर्गत 24 फरवरी को उमेश पाल की गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। हत्यारों में गुड्डू मुस्लिम भी शामिल था। घटना के बाद से वह फरार चल रहा है। वह कौशांबी में दो दिन तक छिपा था। इसके बाद झांसी, अजमेर, मेरठ, दिल्ली से बिहार के भागलपुर और फिर वहां से पश्चिम बंगाल होते हुए ओड़िसा पहुंचा था।

एसटीएफको चकमा दे रहा गुड्डू

उत्तर प्रदेश की स्पेशल टास्क फोर्स लगातार गुड्डू बमबाज की तलाश में लगी है लेकिन अभी तक उसे पकड़ नहीं पाई है। अतीक के बेटे असद और शूटर गुलाम के झांसी में एनकाउंटर के बाद गुड्डू और चौकन्ना हो गया है। उसकी लास्ट लोकेशन उड़ीसा में मिली थी। गुड्डू बमबाज पर 5 लाख रुपए का इनाम भी घोषित है।

गुड्डू को कौशांबी के फार्म हाउस में मिली थी शरण

गुड्डू मुस्लिम को कौशांबी के एक फार्म हाउस में पनाह दी गई थी। दो रात वहां फरारी काटने के बाद गुड्डू आगे निकल गया था। चर्चा है कि गुड्डू के लिए वहां नए असलहे का इंतजाम हुआ था। पिस्टल लेकर शूटर गुड्डू निकल भागा था। हालांकि भनक लगने के बाद सराय अकिल, पिपरी समेत कई थानों की फोर्स और पीएसी ने पिपरी थाना क्षेत्र के अवधन गांव के फार्म हाउस समेत कई घरों में दबिश दी लेकिन गुड्डू वहां से निकल चुका था। गुड्डू मुस्लिम को पनाह राजू पाल हत्याकांड के आरोपित कवि और उसके करीबियों ने दी थी। मामले में दो सगे भाई नसीम और शमीम का नाम सामने आया है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक नसीम और शमीम पर पिपरी कौशांबी में मुकदमे दर्ज हैं।

झोले में से बम निकाल फेंक रहा था गुड्डू

24 फरवरी को जब उमेश पाल को घेरकर गोलियां बरसाई जा रही थी तो उसमें गुड्डू मुस्लिम भी था। सीसीटीवी उसका वीडियो भी दिख रहा है। वह बाइक से उतरता है और हाथ में लिए झोले में से बम निकालकर उमेश पाल के ऊपर बम फेंकता दिख रहा है। वह अतीक का करीब कहा जाता है और गुड्डू बमबाज के नाम से जाना जाता है। वह बम बनाने में माहिर है।

ग्वालटोली वार्ड 4 के पार्षद प्रत्याशी दुर्गेश यादव ने किया जनसंपर्क

संवाददाता

कानपुर। वार्ड 4 ग्वालटोली से समाजवादी पार्टी के पार्षद प्रत्याशी दुर्गेश यादव अपनी जीत से पूरी तरह आश्वस्त हैं तथा पत्रकारों को बताया कि मैं समाजवादी पार्टी का बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने मुझ पर अपना पुन: विश्वास जताया तथा वार्ड 4 के लिए दूसरी बार मुझे पार्टी द्वारा चुना गया है तथा अब आगे का कार्य मेरा होगा मैं जनता का भी बहुत शुक्रगुजार हूं जिन्होंने अपना पूर्ण समर्थन व विश्वास मुझ पर जताया है और उनके इस विश्वास को मैं दोबारा जीतकर वार्ड 4 की समस्त समस्याओं हेतु पूर्ण रूप से मेरे द्वारा कराए गए विकास कार्यों को पूरा करने के साथ ही वार्ड में सबसे बड़ी समस्या पानी बिजली तथा वार्ड की जो नालियां चोक व जाम पड़ी हुई है तथा क्षेत्र के जितने भी पार्क मैं जो गंदगी है उसे मैं जीतने के बाद 6 माह के अंदर नगर निगम के सहयोग से वह अपने स्वयं के सहयोग से 6 माह में बचे हुए विकास कार्य पूर्ण कर दूंगा तथा क्षेत्रीय जनता से एक बार पुन: अपना आशीर्वाद देने निवेदन किया तथा अपने वार्ड को चौमुखी विकास के साथ एक आदर्शवाद बना सकूं इस अवसर पर प्रमुख रूप से मनीष निषाद अनिल अवस्थी रानू पांडे चंदन सिंह पिंटू यादव बबलू चाचा जगदीश नरेंद्र सिंह पिंटू ठाकुर आदित्य सिंह आदि सभी सपा समर्थक उपस्थित रहे।

निर्दलीय पार्षद प्रत्याशी जयती पांडे ने वाहन जुलूस निकालकर जनता से किया जनसंपर्क

संवाददाता, कानपुर। यशोदा नगर पश्चिम से वार्ड 95 निर्दलीय पार्षद जयति पांडे ने चुनाव के अंतिम प्रचार के दिन अपने क्षेत्र में भारी वाहन जुलूस निकालकर लोगों से जनसंपर्क किया इस दौरान प्रत्याशी पार्षद पति आलोक पांडे ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि पूर्व पार्षद रहने के नाते क्षेत्र की जनता का अपार समर्थन मिल रहा है और जिस तरह से पूरे क्षेत्र में घंटी बज रही है वैसे ही प्रणाम स्वरूप जनता का आशीर्वाद प्राप्त होगा और अपने प्रत्याशी को नगर निगम पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी हमारे सोसाइटी क्षेत्र के मुख्य समस्याएं जो सड़क जल निकासी सीवर जैसी गंभीर समस्याओं का समाधान कराना हमारी पहली प्राथमिकता रहेगी और जनता से अपील करूंगा कि घंटी वाले खाने को अपना अमूल्य वोट देकर विजई बनाएं और अपने क्षेत्र में समस्याओं से निजात पाएं इस दौरान मुख्य रूप से बब्बन प्रवीण गौरव आशुतोष अनुज कृष्णकांत धर्मेंद्र अनुज सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सोशल मीडिया की जांच ने उगले कई राज, ट्विटर हैंडल 'द सज्जाद मुगल' के नाम से एफआईआर भी दर्ज

संवाददाता, प्रयागराज। डान ब्रदर्स की हत्या को लेकर हिसाब होने की धमकी वाले ट्विटर हैंडल की जांच के बाद बड़ा खुलासा हुआ। 16 दिन में अतीक से जुड़े 31 ट्वीट किए गए हैं। इस अकाउंट से अतीक की हत्या के बाद लगातार उससे जुड़े वीडियो, तस्वीरें पोस्ट की गईं। ट्विटर हैंडल 'द सज्जाद मुगल' के नाम से एफआईआर भी दर्ज की गई है।

ट्विटर हैंडल 'द सज्जाद मुगल' के नाम से एफआईआर दर्ज यह सभी ट्वीट जम्मू के पुंछ से किए गए। ऐसे में अब साइबर थाना पुलिस इस कनेक्शन का राज ढूंढ़ने में लगी है। एक दिन पहले यह मामला सामने आया था। जिसमें संबंधित ट्विटर हैंडल 'द सज्जाद मुगल' के नाम से एफआईआर भी दर्ज की गई है। यह एफआईआर 25 अप्रैल को किए गए ट्वीट से जुड़ा है, जिसमें अतीक के बेटे अली के वीडियो के साथ हिसाब होने जैसी आपत्तिजनक व भड़काऊ बातें भी पोस्ट की गई हैं।इनमें अतीक की हत्या से संबंधित वीडियो के साथ ही पत्नी शाइस्ता व बेटे उमर के साथ उसकी पुरानी तस्वीर भी पोस्ट की गई है। इसके अलावा अतीक-अशरफहत्याकांड के तीनों शूटरों सनी, लवलेश और अरुण मौर्य की तस्वीर भी ट्वीट की गई है। इस ट्वीट में तीनों को पेशी पर लाए जाने के दौरान उनकी सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल भी उठाया गया है। इस खुलासे के बाद अब सवाल उठ रहा है कि आखिर अतीक का यह जम्मू कनेक्शन क्या है। फिलहाल साइबर थाना पुलिस जांच पड़ताल में लगी है। **विशेष डीजी कानून व्यवस्था के आदेश पर दर्ज हुआ मुकदमा** - प्रयागराज साइबर थाने में विशेष डीजी कानून व्यवस्था के आदेश पर एफआईआर दर्ज की गई है। साइबर थाने में तैनात इंस्पेक्टर मो.आलमगीर की तहरीर पर ट्विटर हैंडल के आधार पर मुकदमा दर्ज किया गया है।

अतीक के पक्ष में गवाही देने वाले सीबीआई अफसर की बढ़ी मुश्किलें

संवाददाता, प्रयागराज। प्रयागराज में उमेश पाल अपहरणकांड मामले में अतीक के पक्ष में गवाही देने वाले सीबीआई अफसर की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। अभियोजन विभाग ने भारत सरकार से शिकायत किया है। सीबीआई में डिप्टी एसपी रहे अमित कुमार की केंद्र से शिकायत में कहा है कि माफिया अतीक अहमद की मदद का अमित पर आरोप लगाया है। उमेश पाल अपहरण में अमित ने अतीक के लिए गवाही दी थी। अमित ने ट्रायल कोर्ट में अपहरण को बताया था झूठा। बताया जा रहा है कि केस में गवाह नंबर 41 के तौर पर पेश हुए थे अमित कुमार। इतना ही नहीं राजूपाल मर्डर से उमेश का नाम गवाहों की सूची से निकाल दिया गया था। डीएम प्रयागराज के जरिए अमित कुमार की शिकायत हुई।

पिछड़े वर्ग के बेरोजगारों के लिए कंप्यूटर योजना का प्रशिक्षण 15 मई से

संवाददाता, उन्नाव। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, अमित सोनकर ने बताया है कि उत्तर प्रदेश शासन पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा पिछड़े वर्ग के बेरोजगार युवक युवतियों के लिए संचालित ओ लेबल एवं सी0सी0सी0 कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना को वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु से ऑनलाइन संचालित की जा रही है। उन्होंने बताया है कि वर्ष 2023-24 में इस योजना के अन्तर्गत भारत सरकार की अधिकृत संस्था नीलिट से मान्यता प्राप्त संस्थाओं द्वारा पिछडे वर्ग के युवक युवतियों को जनपद स्तर पर कार्यरत ओ लेवल सी0सी0सी0 कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान कराने हेतु इच्छुक संस्थाओं द्वारा पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश, की बेवसाइट पर दिये गये लिंक एवं पद के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन दिनांक 15 मई, 2023 से 30 मई, 2023 तक किया जा सकता है। ऑनलाइन आवेदन के उपरान्त आवेदन की प्रति का प्रिंट आउट प्राप्त कर समस्त अभिलेखों विवरणों को संलग्न करते हुए उसकी हार्ड कापी निदेशक, पिछड़ा वर्ग कल्याण उ0प्र0, 10वॉ तल, इन्दिरा भवन, लखनऊ-226001, संबंधित जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी कार्यालय में दिनांक 30 मई, 2023 तक सायं 5: बजे तक उपलब्ध कराये जाने पर ही आवेदन मान्य किया जायेगा। अभिलेखीय सत्यापन तथा संस्था की आधारभूत संरचनाओं का भौतिक सत्यापन कराये जाने के उपरान्त निदेशक, पिछड़ा वर्ग कल्याण उ0प्र0 लखनऊ की अध्यक्षता की गठित समिति द्वारा प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु संस्थाओं का चयन किया जायेगा।

यौन उत्पीड़न के आरोपी प्रोफेसरों को तत्काल बर्खास्त की मांग

विश्वविद्यालय परिसर में प्रवेश प्रतिबंधित को लेकर छात्रों ने घेरा कुलपति कार्यालय

संवाददाता

प्रयागराज। छात्रों ने कुलपति कार्यालय का घेराव कर रजिस्टार प्रो.एन.के.शुक्ला को ज्ञापन सौपा। अवगत कराया कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर मनमोहन कृष्णा, रिटायर्ड प्रोफेसर प्रहलाद कुमार व वर्तमान कार्यरत प्रोफेसर जावेद अख्तर को निष्पक्ष जाँच संपादित करने के लिए अपने पदों से त्याग पत्र देना चाहिए और उनका विश्वविद्यालय परिसर में प्रवेश प्रतिबंधित होना चाहिए। यही न्याय की स्थापना के लिए आवश्यक होगा। बता दें कि उपरोक्त प्रोफेसर के खिलाफ न्यायालय ने गैर जमानती वारंट जारी कर रखा है परंतु यह खुले रूप से विश्वविद्यालय परिसर में अपना काम कर रहे हैं यह कानून के शासन को चुनौती है और जांच की प्रक्रिया में बांधा है। यह बहुत ही बड़ी चिंता का विषय है कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जब एक शिक्षिका सुरक्षित नहीं है तो आम छात्राएं कैसे सुरक्षित रहेंगी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के 135 साल के इतिहास में आप विश्वविद्यालय की पहली महिला कुलपति हैं।इलाहाबाद विश्व विद्यालय की एक महिला शिक्षिका के साथ किया गया यौन उत्पीड़न व एससी एसटी शोषण के खिलाफ एक महिला होनें के नाते आप उस महिला शिक्षिका को न्याय दिलाने में उनकी मदद करें और तीनों आरोपी रिटायर्ड प्रोफेसर मनमोहन कृष्णा वर्तमान में नीति आयोग चेयरपर्सन, रिटायर्ड प्रोफेसर प्रहलाद कुमार वर्तमान में कोऑर्डिनेटर व वर्तमान कार्य प्रोफेसर जावेद अख्तर इन तीनों प्रोफेसरों को तत्काल इनके पद से बर्खास्त कर इनको विश्वविद्यालय परिसर के अंदर संपूर्ण बैन लगाया जाये। एक जांच कमेटी गठित कर मामले की पूरी जांच कराई जाए। उस प्रताड़ित महिला प्रोफेसर को न्याय दिलाएं और उन आरोपी प्रोफेसरों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करें।इस मौके पर छात्रा शबनम बानो,अंजना कुशवाहा, नाविका जायसवाल, खुशी प्रिया, हरेंद्र यादव, राहुल सरोज, अशफाक खान, राहुल पटेल,शक्ति राय, मनीष कुमार, अखिलेश, प्रशांत, कुलदीप, रुद्राक्ष, विनीत विश्वास, प्रमोद, श्रीराम, शुभम, धीरज, समीर, विद्यासागर,अनुभव,अक्षय, मुकेश,मनजीत,विकास,अनुराग ,निखिल, ललित आदि लोग उपस्थित रहे।

पहले ही दिन यातायात व्यवस्था धड़ाम

निरंजन डॉट पुल बंद होने से पानी टंकी और रामबाग फ्लाईओवर बढ़ा दबाव, जाम से जूझे शहरी

संवाददाता, प्रयागराज। मंगलवार की भोर से ही निरंजन डॉट पुल बंद हो जाने से शहरियों को पहले ही दिन से मुसीबतों को सामना करना पड़ा। वहीं यातायात व्यवस्था पूरी तरह से धड़ाम हो गयी। सुबह सात बजे से ही पानी टंकी चौराहे के पास जाम लगना आरंभ हो गया। जो कि दिन भर बना रहा। गर्मी और चिलचिलाती धूप उसपर से जाम में फंसकर लोग बिलबिला उठा। स्कूली बच्चों को भी जाम में फंसकर रोना पड़ा। रात में भी लोगों की फजीहत हुई। एक दिन में ही यातायात व्यवस्था इस तरह ध्वस्त हो गयी जबकि अभी तो 99 दिन बाकी हैं। वहीं जाम में फंसकर लोग झल्ला उठे। लोगों में आक्रोश भी दिखाई पड़ा। कुछ ऐसा ही हाल रामबाग फ्लाई ओवर ब्रिज का रहा। यहां ओवरब्रिज पर जाम लगा रहा। लोगों को ब्रिज पार करने में आधे घंट से भी अधिक का समय लगा। पुराने शहर से सिविल लाइन और सिविल लाइन से चौक, घंटाघर, शाहगंज, रेलवे स्टेशन, करैली, लोकनाथ सहित कई मुहल्लों व बाजारों में जाने वालों को जाम से जूझना पड़ा। पानी टंकी ओवरब्रिज पर लोगों को रेंग-रेंगकर चलना पड़ा। लीडर रोड से पानी टंकी की ओर आने वाले पुल पर भीड़ का काफी दबाव बढ़ गया है। जो कि एक किलोमीटर से भी कम दूरी की यात्रा कर सिविल लाइन आ जाते थे उन्हें मंगलवार से पॉच किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ रही है। यह हाल अभी तीन महीने से भी अधिक का समय लेगा। रेलवे प्रशासन ने जिला प्रशासन से 100 दिनों के लिये निरंजन डॉट पुल का रास्ता ब्लॉक करने का समय लिया है। बता दें कि निरंजन डॉट पुल पर दो अन्य रेलवे लाइन बिछाने का कार्य किया जाना है। जिसके लिये रास्ते को 100 दिनों के लिये ब्लॉक किया गया है। डॉट पुल के नीचे सिविल लाइन साइड और चौक साइड दोनों ओर टीनशेड लगाकर बैरिकेड़िंग कर दिया गया है। साथ ही सुरक्षा-व्यवस्था के दृष्टि से रेलवे पुलिस बल को भी तैनात कर दिया गया है।

आठ लोगों की मौत, हमलावर भी मारा गया

एजेंसी, एलेन। अमेरिका के टेक्सास प्रांत में डलास शहर के एक मॉल में बंदूकधारी ने गोलियां चलाईं जिसमें आठ लोग मारे गए और सात अन्य घायल हो गए। पुलिस की कार्रवाई में हमलावर भी मारा गया। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने हालांकि हताहतों के बारे में तत्काल कोई जानकारी नहीं दी, लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि इनमें बच्चे भी शामिल हैं। कुछ लोगों का कहना है कि उन्होंने एक पुलिस अधिकारी तथा मॉल के एक सुरक्षाकर्मी को जमीन पर बेसुध पड़े देखा। एलेन पुलिस ने फेसबुक पर अपने पोस्ट में कहा कि नौ लोगों को अस्पताल ले जाया गया है। डलास इलाके के 'मेडिकल सिटी हेल्थकेयर' अस्पताल ने बताया कि पांच से 61 वर्ष के बीच के आठ लोगों का उपचार हो रहा है। सोशल मीडिया में घटना से कथित तौर पर संबंधित वीडियो सार्वजनिक हुए हैं जिनमें एक व्यक्ति मॉल के बाहर गाड़ी से उतरता दिखाई दे रहा है और अचानक उसने लोगों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। पुलिस विभाग ने फेसबुक पर अपने पोस्ट में लिखा कि एलेन इलाके का एक पुलिस अधिकारी पास ही मौजूद था और उसे दोपहर तीन बजकर 36 मिनट पर घटना की सूचना मिली। पोस्ट में कहा गया, ''अधिकारी ने तत्काल कार्रवाई की और हमलावर को ढेर कर दिया। इसके बाद उसने अन्य पुलिसकर्मियों को भेजे जाने का अनुरोध किया। एलेन दमकल विभाग ने नौ लोगों को स्थानीय अस्पताल पहुंचाया। इलाके को अब कोई खतरा नहीं है।

फिर बढ़ा भारत का विदेशी मुद्रा भंडार

पहुंचा 10 महीने के शीर्ष पर

एजेंसी, नयी दिल्ली। अप्रैल का अंतिम सप्ताह कुछ मायनों में अच्छा रहा। इस दौरान अपना विदेशी मुद्रा भंडार खूब बढ़ा। बीते 28 अप्रैल को समाप्त सप्ताह के दौरान भारत के फॉरेन एक्सचेंज रिजर्व में 4.532 अरब डॉलर की जोरदार बढ़ोतरी हुई है। इससे एक सप्ताह पहले ही, मतलब कि 21 अप्रैल को समाप्त सप्ताह के दौरान इसमें 2.16 अरब डॉलर की कमी हुई थी। अब अपना विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ कर 588.780 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इसी सप्ताह पाकिस्तान के विदेशी मुद्रा भंडार में कमी हुई है। बीते 28 अप्रैल को समाप्त सप्ताह के दौरान वहां के विदेशी मुद्रा भंडार में 56 लाख डॉलर की कमी हुई है। अब वहां 4.457 अरब डॉलर का ही भंडार रह गया है। रिजर्व बैंक की तरफसे से जारी आंकड़ों के मुताबिक बीते 28 अप्रैल को समाप्त सप्ताह के दौरान अपने विदेशी

मुद्रा भंडार में 4.532 अरब डॉलर की जोरदार बढ़ोतरी हुई है। इसी के साथ अब अपना विदेशी मुद्रा भंडार 588.780 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पहले 21 अप्रैल 2023 को समाप्त सप्ताह के दौरान अपने विदेशी मुद्रा भंडार में 2.16 अरब डॉलर की कमी हुई थी। उससे एक सप्ताह पहले 1.567 अरब डॉलर की बढ़ोतरी हुई थी। अक्टूबर 2021 में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 645 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था। रिजर्व बैंक के साप्ताहिक आंकड़ों पर गौर करें तो 28 अप्रैल 2023 को समाप्त सप्ताह के दौरान अपना अपना फॉरेन करेंसी असेट भी बढ़ा है। आलोच्य सप्ताह के दौरान यह 4.99 अरब डॉलर बढ़ कर 519.48 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इससे एक सप्ताह पहले इसमें 2.146 अरब डॉलर की कमी हुई थी। तब यह घट कर 514.489 अरब डॉलर रह गया था। उल्लेखनीय है कि कुल विदेशी मुद्रा भंडार में विदेशी मुद्रा आस्तियां या फॉरेन करेंसी असेट (थ्व्।) एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। डॉलर में अभिव्यक्त किये जाने वाले विदेशी मुद्रा आस्तियों में यूरो, पौंड और येन जैसे गैर अमेरिकी मुद्राओं में आई घट बढ़ के प्रभावों को भी शामिल किया जाता है। बीते 28 अप्रैल को समाप्त सप्ताह के दौरान देश के सोने के भंडार (ळवसक तमेमतअमे) का मूल्य घट गया है। आलोच्य सप्ताह के दौरान यह 49.4 करोड़ डॉलर घट कर 45.65 अरब डॉलर रह गया है। इससे एक सप्ताह पहले भी इसमें 2.4 करोड़ डॉलर की कमी हुई थी। जब अपना स्वर्ण भंडार 46.151 अरब डॉलर तक गिर गया था। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, बीते सप्ताह के दौरान भारत के स्पेशल ड्रॉइंग राइट या विशेष आहरण अधिकार में बढ़ोतरी हुई है। समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान यह 3.5 करोड़ डॉलर घट कर 18.466 अरब डॉलर रह गया है। इससे पहले के सप्ताह के दौरान भी इसमें 1.9 करोड़ डॉलर की बढ़ोतरी हुई थी। हालांकि, समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में रखा देश का रिजर्व भंडार 4 करोड़ डॉलर घटकर 5.172 अरब डॉलर रह गया। पाकिस्तान के आर्थिक हालात की बात करें तो इस समय वहां कंगाली जैसी स्थिति दिखती है। वहां बीते 28 अप्रैल को समाप्त सप्ताह के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार में 56 लाख डॉलर की कमी हुई। इसी के साथ वहां अब 4.457 अरब डॉलर का ही विदेशी मुद्रा भंडार रह गया है। इससे पहले, मतलब कि 20 अप्रैल 2023 को समाप्त सप्ताह के दौरान वहां विदेशी मुद्रा भंडार में 30.3 करोड़ डॉलर की बढ़ोतरी हुई थी।

युवा लेखकों के लिए वरदान है प्रधानमंत्री युवा योजना 2023

एजेंसी, नयी दिल्ली। युवा लेखकों को मार्गदर्शन देने के लिए दो साल पहले शुरू की गई प्रधानमंत्री की युवा योजना- युवा 2.0- अब अपनी अमिट छाप छोड़ने लगी है। लिहाजा इसके तीसरे सत्र में अपनी भागीदारी जताने के लिए उत्सुक युवा अभी से ही एड़ी-चोटी एक किये हुए हैं और युवा प्रधानमंत्री योजना 2023 का आगाज किये जाने की प्रतीक्षा बेसब्री से कर रहे हैं। क्योंकि इस योजना में विजन, कैरियर और प्रारंभिक 6 मासीय सहायता धन तीनों शामिल है, जिसका लाभ देश के 75 प्रतिभाशाली युवा उठा सकते हैं। इसके लिए आयोजित होने वाली अखिल भारतीय चयन परीक्षा की तैयारियों में वो जी-जान से जुटे हुए हैं, क्योंकि सिर्फ75 युवाओं के चयन इस उद्देश्य से होने हैं। बता दें कि शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग ने देश में पढ़ने, लिखने एवं पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए और वैश्विक स्तर पर भारत एवं भारतीय लेखन को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से युवा एवं नवोदित लेखकों (30 वर्ष से कम आयु) को प्रशिक्षित करने हेतु 29 मई 2021 को युवा 2.0- युवा लेखकों को परामर्श देने वाली प्रधानमंत्री की योजना- की शुरुआत की। जिसके जरिए युवा एवं नवोदित लेखकों की 22 विभिन्न भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में बड़े पैमाने पर भागीदारी के साथ युवा के पहले संस्करण

के उल्लेखनीय प्रभाव को देखते हुए, युवा 2.0 की शुरुआत की गई थी। जिसके तीसरे चरण का आगाज आने वाले दिनों में होने हैं। गौरतलब है कि युवा 2.0 (युवा, उभरते और बहुमुखी प्रतिभा वाले लेखक) का शुभारंभ युवाओं को भारत के लोकतंत्र को समझने और उसकी सराहना करने हेतु प्रोत्साहित करने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप किया गया है। युवा 2.0/75 परियोजना- आजादी का अमृत महोत्सव का एक हिस्सा है, जो लोकतंत्र के संस्थाएं, घटनाएं, लोग, संवैधानिक मूल्य से जुड़े अतीत, वर्तमान व भविष्य' विषय पर लेखकों की युवा पीढ़ी के दृष्टिकोण को एक अभिनव और रचनात्मक तरीके से सामने लाता है। इस प्रकार, यह योजना लेखकों की एक ऐसी धारा विकसित करने में मदद कर रही है जो भारतीय विरासत, संस्कृति और ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न विषयों पर लिख सकने में सक्षम हैं। दरअसल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने युवाओं के सशक्तिकरण और सीखने का एक ऐसा इकोसिस्टम बनाने पर जोर दिया हैं।

(आईएसआई) के शीर्ष अधिकारी मेजर जनरल नसीर वरिष्ठ पत्रकार की हत्या में शामिल : इमरान खान

एजेंसी, लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने आरोप लगाया है कि दो बार उनकी हत्या की कोशिश करने वाले आईएसआई अधिकारी मेजर जनरल फैसल नसीर वरिष्ठ पत्रकार अरशद शरीफ की हत्या में शामिल थे। खान ने यह टिप्पणी लाहौर में अपने 'बुलेट-बम-प्रूफ' वाहन से एक रैली को संबोधित करते हुए की। रैली का वीडियो लिंक के जरिए अन्य शहरों में सीधा प्रसारण किया गया। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी प्रमुख खान ने कहा, (पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी) इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) के मेजर-जनरल फैसल नसीर ने दो बार मेरी हत्या करने की कोशिश की। वह (टेलीविजन प्रस्तोता) अरशद शरीफ के कत्ल में भी शामिल हैं।

उन्होंने मेरी पार्टी की सीनेटर आजम स्वाति को भी निर्वस्त्र कर उन्हें यातना दी थी। सेना के आलोचक रहे अरशद शरीफ की पिछले साल अक्टूबर में केन्या में हत्या कर दी गई थी। वह सुरक्षा एजेंसियों से अपनी जान को खतरा होने का जिक्र करते हुए देश छोड़ कर भाग गए थे। केन्या में पुलिस ने खोजी पत्रकार पर गोली चलाई थी, जिससे उनकी मौत हुई थी। केन्या की पुलिस ने अपनी शुरुआती रिपोर्ट में कहा था कि गलत पहचान के चलते 49 वर्षीय

व्यक्ति की गाड़ी पर गोली चलाई गई थी जिससे उनकी मौत हो गई। खान (71) ने इससे पहले, प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह के साथ-साथ जनरल नसीर पर पिछले साल नवंबर में पंजाब प्रांत के वजीराबाद में उनकी (खान की) हत्या की कोशिश करने का आरोप लगाया था। इस हमले में उनके पैर में तीन गोलियां लगी थीं। पूर्व क्रिकेटर ने कहा, यह व्यक्ति(जनरल नसीर) पिछले 20 महीनों से मेरी पार्टी के लोगों पर जुल्म कर रहा है, लेकिन उसकी संस्था (सेना) में किसी को इसकी परवाह नहीं है। पाकिस्तान से प्यार करने वाला कोई भी व्यक्ति वह नहीं कर सकता जो यह कर रहा है। खान ने मौजूदा सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर से परोक्ष रूप से यह सवाल किया कि वह आईएसआई के इस कर्मी पर कार्रवाई क्यों नहीं करते हैं? उन्होंने देश के लोगों से माफिया शासकों और उनके आकाओं (सैन्य प्रतिष्ठान में मौजूद तत्वों) के खिलाफ सड़कों पर उतरने की अपील की। उन्होंने कहा, हत्या की इन योजनाओं के बावजूद मैं इस देश की खातिर सड़क पर उतर कर विरोध कर रहा हूं। मेरा साथ देना आपका फर्ज है क्योंकि यह सियायत नहीं बल्कि जेहाद है- असली आजादी के लिए लड़ना कभी राजनीति नहीं होती है। खान ने कहा कि उनकी पार्टी पंजाब में चुनाव की मांग को लेकर अगले हफ्ते से 14 मई तक रैलियां आयोजित करेगी। उन्होंने कहा कि अगर उच्चतम न्यायालय की अवज्ञा की जाती है, तो संविधान ध्वस्त हो जाएगा। उन्होंने कहा इसका मतलब कानून के शासन का अंत और जंगल राज की शुरुआत होना है। हम ऐसा नहीं होने देंगे। खान ने यह भी सवाल किया कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ब्रिटेन में क्या कर रहे हैं? शहबाज, ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स तृतीय के राज्याभिषेक में हिस्सा लेने के लिए लंदन गये थे। खान ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के एक सम्मेलन में शिरकत करने के वास्ते भारत जाने के लिए विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी की भी आलोचना की। खान ने सवाल किया कि भारत यात्रा से क्या फायदा हुआ। उन्होंने कहा, पाकिस्तान की दुनिया में बदनामी हुई है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने एससीओ की बैठक में अपने संबोधन में भुट्टो-जरदारी को आड़े हाथों लिया था और पाकिस्तान के विदेश मंत्री के उस बयान का विरोध किया गया था, जिसमें कहा गया था कि आतंकवाद का इस्तेमाल ''कूटनीतिक फायदे के लिए हथियार'' के तौर पर नहीं करना चाहिए। इस बयान को भारत के संदर्भ में देखा गया था। बाद में संवाददाता सम्मेलन में, जयशंकर ने कहा कि भुट्टो-जरदारी के इस बयान ने अनजाने में एक मानसिकता को उजागर किया है। जयशंकर ने उन पर आतंकवाद को बढ़ावा देने, इसे जायज ठहराने और आतंकवाद का प्रवक्ता होने का आरोप लगाया। खान ने जयशंकर की टिप्पणियों को लेकर उनकी आलोचना की और कहा कि पाकिस्तान के विदेश मंत्री को कूटनीतिक रूप से जोखिम भरी यात्रा पर जाने से पहले इसके नफा-नुकसान पर विचार करना चाहिए था।

आईबीबीआई ने दिवाला कानून के लिए जनता से सुझाव मांगे

एजेंसी, नयी दिल्ली। भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई) ने दिवाला कानून के अंतर्गत अभी तक सूचीबद्ध नियमों पर जनता से सुझाव मांगे हैं। आईबीबीआई ने एक विज्ञप्ति में कहा कि जनता से सुझाव लेने से सभी प्रकार के विचार मिलेंगे। दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) को लागू करने में आईबीबीआई मुख्य संस्थान है। यह संहिता 2016 में लाई गई थी। अभी तक सूचीबद्ध नियमों पर जनता, खासकर संबद्ध लोगों से सुझाव 31 मई तक मांगे गए हैं।विज्ञप्ति के अनुसार, चार मई, 2023 से 31 दिसंबर, 2023 तक मिलने वाले सुझावों पर एक साथ विचार किया जाएगा और इसके बाद नियमों को जरूरी सीमा तक संशोधित किया जाएगा। विज्ञप्ति में बताया गया, आईबीबीआई का प्रयास होगा कि संशोधित नियमों को 31 मार्च, 2024 तक अधिसूचित किया जाए और उन्हें एक अप्रैल, 2024 से लागू कर दिया जाए।

जेएसडब्ल्यू एनर्जी, सेकी में 300 मेगावाट की पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए करार

एजेंसी, नयी दिल्ली। जेएसडब्ल्यू एनर्जी ने 300 मेगावाट की पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए भारतीय सौर ऊर्जा निगम लिमिटेड (सेकी) के साथ ऊर्जा खरीद समझौता (पीपीए) किया है। जेएसडब्ल्यू एनर्जी ने शुक्रवार को एक बयान में कहा, पीपीए पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिसके तहत 2.94 रुपये प्रति किलोवाट (केडब्ल्यूएच) की दर से 25 वर्षों तक आपूर्ति की जानी है। कंपनी ने कहा, जेएसडब्ल्यू एनर्जी की सहायक कंपनी की अनुषंगी जेएसडब्ल्यू रीन्यू एनर्जी थ्री ने 300 मेगावाट की पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए सेकी के साथ पीपीए किया है। कंपनी ने बताया कि परियोजनाएं महाराष्ट्र में स्थित हैं और इनके अगले 24 महीनों में शुरू होने की संभावना है।

आईएमएफ ने ऋण शर्तें पूरी करने के पाकिस्तान के दावे को खारिज किया

एजेंसी, इस्लामाबाद। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने नकदी संकट में फंसे पाकिस्तान की सरकार के इस दावे को खारिज कर दिया है कि उसने ऋण सुविधा के तहत धन जारी करने के लिए आईएमएफ की सभी शर्तों को पूरा कर लिया है। मीडिया खबरों ने यह जानकारी दी। आईएमएफने पाकिस्तान को कुछ शर्तों पर छह अरब डॉलर देने के लिए 2019 में समझौता किया था। यह योजना कई बार बेपटरी हुई और पूरा भुगतान अभी तक नहीं हो पाया है क्योंकि आईएमएफचाहता है कि पाकिस्तान को सभी शर्तों का पालन करना चाहिए। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफऔर वित्त मंत्री इशाक दार ने बार-बार दावा किया है कि कर्मी स्तरीय समझौते पर पहुंचने के लिए पाकिस्तान ने सभी शर्तें पूरी कर ली हैं और समझौते से पीछे हटने का कोई कारण नहीं है। समाचार पत्र द एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने बताया कि उसके पास आईएमएफकी ओर से शुक्रवार को एक बयान आया है, जिसमें नौवीं समीक्षा के लिए जरूरी सभी औपचारिकताएं पूरी करने के पाकिस्तान सरकार के दावे को खारिज कर दिया गया है।

जयशंकर के हाथ न मिलाने पर बौखलाए पाक राजनेता

एजेंसी, इस्लामाबाद। पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी शंघाई सहयोग संगठन (एस.सी.ओ.) की बैठक में हिस्सा लेने के लिए भारत आए हुए हैं। हालांकि बैठक की शुरूआत में भारतीय विदेश मंत्री डा.एस. जयशंकर के सामने बिलावल के हाथ जोडने को लेकर पाकिस्तानी राजनेता भड़के हुए हैं। कई राजनेताओं ने बिलावल की इस हरकत को शर्मनाक करार दिया है।दरअसल बैठक की औपचारिक शुरूआत से पहले जयशंकर ने सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों का स्वागत किया, लेकिन इस दौरान जयशंकर ने पाकिस्तानी विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो से हाथ नहीं मिलाया बल्कि नमस्ते कर औपचारिक स्वागत किया। बिलावल ने भी एस. जयशंकर के नमस्ते के जवाब में अपने हाथ जोड़ लिए। विदेश मंत्री ने आने वाले प्रत्येक विदेश मंत्री का हाथ मिलाकर नहीं बल्कि नमस्ते के साथ अभिवादन किया। हालांकि पाकिस्तान में इसी घटना को लेकर विपक्षी पार्टियों ने बिलावल भुट्टो जरदारी के खिलाफमोर्चा खोल दिया है।

भारतं में वृद्धि की अभी बहुत गुंजाइश,नए डेटा सुरक्षा नियमों का अनुपालन करेंगे : ट्रूकॉलर

एजेंसी, नयी दिल्ली। स्वीडन के कॉलर पहचान ऐप 'ट्रूकॉलर' के उपयोगकर्ताओं की संख्या भारत में 25 करोड़ को पार कर गई है। कंपनी के सह-संस्थापक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एलन मामेदी का मानना है कि कंपनी के लिए भारत में अब भी वृद्धि की बहुत गुंजाइश है। उन्होंने कहा कि नए नियमनों के आने के बाद ट्रूकॉलर की 'गोपनीयता-केंद्रित, अनुमति-आधारित प्रणाली' में किसी बदलाव की उम्मीद नहीं है।' मामेदी ने कहा कि कंपनी भारत में डेटा सुरक्षा के नए नियमों का पालन करेगी और 'संचार को सुरक्षित और सरल बनाने के लिए सभी उपायों का स्वागत करती है।' मामेदी हाल ही में कंपनी के मुख्य रणनीति अधिकारी (सीएसओ) और सह-संस्थापक नमी जरिंगलम के साथ भारतआए थे। उन्होंने कहा कि कंपनी 'कॉलर नेम प्रजेंटेशन' पर भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के सुझाव की प्रशंसा करती है और इस संबंध में भविष्य में भी सहयोग करेगी। ट्राई ने परेशान करने वाले कॉल और संदेशों का समाधान करने के लिए हाल ही में दूरसंचार कंपनियों को तत्काल कार्रवाई करने के लिए कहा था। ट्रूकॉलर ने कहा कि वह अनचाहे और स्पैम कॉल-मैसेज से बचाने के लिए अपनी सेवा के मूल पहलुओं पर अब भी केंद्रित है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने भारतवंशी नीरा टंडन को अपना घरेलू नीति सलाहकार नियुक्त किया

एजेंसी, अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने भारतीय मूल की अमेरिकी नागरिक नीरा टंडन को अपनी घरेलू नीति सलाहकार के रूप में नामित किया जो घरेलू नीति एजेंडा के निर्माण एवं क्रियान्वयन में उनकी सहायता करेंगी। बाइडन ने कहा, ''मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि नीरा टंडन आर्थिक गतिशीलता और नस्लीय समानता से लेकर स्वास्थ्य देखभाल, अप्रवासन और शिक्षा जैसी मेरी घरेलू नीति के निर्माण और कार्यान्वयन को जारी रखेंगी।'' टंडन बाइडन की अभी तक घेरलू नीति सलाहकार रहीं सूसन राइस की जगह लेंगी। बाइडन ने कहा, ''टंडन एशियाई मूल की पहली अमेरिकी होंगी जो व्हाइट हाउस के इतिहास में उसके तीन अहम नीति परिषदों में से एक का नेतृत्व करेंगी।'' बाइडन ने कहा, ''वरिष्ठ सलाहकार और स्टाफ सेक्रेटरी के रूप में नीरा ने मेरी घरेलू,

आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा टीम में निर्णय लेने की प्रक्रियाओं का निरीक्षण किया। उन्हें सार्वजनिक नीति में 25 वर्षों का अनुभव है, उन्होंने तीन राष्ट्रपतियों की सेवा दी है और लगभग एक दशक तक देश के सबसे बड़े थिंक टैंक में से एक का नेतृत्व किया है।'' टंडन वर्तमान में राष्ट्रपति बाइडन और स्टाफसेक्रेटरी के लिए वरिष्ठ सलाहकार के तौर पर सेवा दे रही हैं। उन्होंने बराक ओबामा और बिल क्लिंटन दोनों के प्रशासन में काम किया है। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्रपति अभियान में हाथ बंटाने के अलावा कई थिंक टैंक के लिए सेवा दी है।वह 'सेंटर फॉर अमेरिकन प्रोग्रेस' एवं 'सेंटर फॉर अमेरिकन प्रोग्रेस एक्शन फंड' की अध्यक्ष एवं सीईओ (कार्यकारी अध्यक्ष) भी रही थीं।

दाइकिन इंडिया एक अरब डॉलर की कंपनी बनी, तीन साल में कारोबार दोगुना होने की उम्मीद

एजेंसी, नयी दिल्ली। एयर कंडीशनर (एसी) कंपनी दाइकिन एयरकंडीशनिंग इंडिया ने वित्त वर्ष 2022-23 में एक अरब डॉलर की कंपनी बनने का लक्ष्य हासिल कर लिया है। कंपनी का अगले तीन साल में दो अरब डॉलर की फर्म बनने का लक्ष्य है। कंपनी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक (सीएमडी) कंवलजीत जावा ने यह बात कही। कंपनी का वित्त वर्ष 2022-23 में कारोबार 8,860 करोड़ रुपये रहा था। जावा ने पीटीआई-को बताया कि कंपनी अपनी आगामी परियोजनाओं के लिए भारत में बहुत संभावनाएं देख रही है और अगले तीन वर्षों में अपना कारोबार दो अरब डॉलर या 16,350 करोड़ रुपये पर पहुंचने की उम्मीद जता रही है। दाइकिन इंडिया ठंडक देने वाले उत्पाद बेचने वाली एक अरब डॉलर की दूसरी कंपनी बन गई है। इससे पहले टाटा समूह की कंपनी वोल्टास ने बीते वित्त वर्ष में 9,667 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया था।

पाकिस्तान में खालिस्तानी आतंकी परमजीत पंजवड़ की हत्या

बाइक सवारों ने सोसायटी में घुसकर मारीं गोलियां

एजेंसी, इस्लामाबाद। पाकिस्तान के लाहौर में बाइक सवारों ने आतंकी संगठन खालिस्तान कमांडो फोर्स के चीफपरमजीत सिंह पंजवड़ की हत्या कर दी। सुबह 6 बजे बाइक पर आए दो लोगों ने यह हमला किया और फरार हो गए। हमलाववरों ने जौहर कस्बे की सनफ्लावर सोसाइटी में घुसकर पंजवड़ को गोलियां मारी जिसके बाद उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वह 1990 से ही पाकिस्तान में शरण लेकर मलिक सरदार सिंह के नाम से रह रहा था। 33 साल से पाकिस्तान में बैठे परमजीत सिंह की पंजाब पुलिस के पास कोई लेटेस्ट फोटो नहीं है जबकि उसका नाम मोस्ट वांटेड आतंकियों की लिस्ट में है। पुलिस के पास उसकी 35 साल पुरानी तस्वीरें ही है जो उसके घर से बरामद हुई थी। जानकारी के अनुसार पंजाब में तरनतारन जिले के झब्बाल थाने के तहत आते पंजवार गांव का रहने वाला परमजीत सिंह पंजवड़ पाकिस्तान से ड्रोन के माध्यम से पंजाब में ड्रग और हथियारों की तस्करी में शामिल था। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने वर्ष 2020 में नौ आतंकियों की लिस्ट जारी की थी जिसमें परमजीत सिंह पंजवड़ का नाम आठवें पर था। इस लिस्ट में उसके अलावा बब्बर खालसा इंटरनेशनल के चीफवधावा सिंह बब्बर का नाम भी था जो

तरनतारन में ही दासूवाल गांव का रहने वाला है। परमजीत सिंह पंजवड़ ने इससे मिलने वाले पैसे से ही खालिस्तान कमांडो फोर्स को जीवित रखा। परमजीत पंजाब में आतंकवाद के दौरान 1986 में अपने चचेरे भाई लाभ सिंह के साथ खालिस्तान कमांडो फोर्स (केसीएफ) में शामिल हो गया था। उससे पहले वह पंजाब के ही सोहल में कोऑपरेटिव बैंक में काम करता था। भारतीय सुरक्षा बलों के हाथों लाभ सिंह के खात्मे के बाद, 1990 में पंजवड़ ने केसीएफ की कमान संभाली और पाकिस्तान भाग गया और वहीं बस गया। हालांकि पाकिस्तानी सरकार पंजवड़ के उनके यहां होने से इंकार करती रही है। परमजीत की पत्नी और बच्चे जर्मनी में रहते हैं। पंजवड़ ने अक्टूबर 2020 में पंजाब के तरनतारन में शौर्यचक्र विजेता बलविंदर सिंह संधू का कत्ल करया था। बलविंदर सिंह संधू ने पंजाब में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी जिसके लिए उन्हें शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया था। पंजवड़ उसी समय से बलविंदर सिंह की हत्या की साजिश रच रहा था। खालिस्तान कमांडो फोर्स के चीफ परमजीत सिंह पंजवड़ ने 30 जून 1999 में चंडीगढ़ में पासपोर्ट कार्यालय के पास बम ब्लास्ट कराया था। इस धमाके में 4 लोग जख्मी हो गए थे, जबकि कई गाड़ियों को नुकसान पहुंचा था। धमाके के लिए स्कूटर की डिग्गी में बम रखा गया था। स्कूटर पर पानीपत (हरियाणा) का नंबर लगा हुआ था। पुलिस ने तब स्कूटर मालिक शेर सिंह को पानीपत से गिरफ्तार कर लिया था।

सनी देओल के बेटे करण देओल ने गुपचुप कर ली सगाई, जून में सीक्रेट गर्लफ्रेंड से करेंगे शादी

बॉलीवुड सुपरस्टार सनी देओल की घर जल्द ही शहनाई बजने वाली हैं। जी हां सनी के बड़े बेटे और एक्टर करण देओल जल्द ही घोड़ी चढ़ सकते हैं। धर्मेंद्र के परपोते करण की बॉलीवुड डेब्यू फिल्म बॉक्स ऑफिस कोई खास असर नहीं दिखा पाई हो लेकिन वो अपनी लव-लाइफ के चलते अक्सर ही सुर्खियों में बने रहते हैं। करण ने गुपचुप सगाई कर ली है और वो जल्द ही शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। देओल परिवार ने अभी तक करण देओल की सगाई और शादी को लेकर कोई ऑफिशियल ऐलान नहीं किया है लेकिन मीडिया रिपोर्टस के मुताबिक, करण देओल ने अपनी सीक्रेट गर्लफ्रेंड से अपने दादा धर्मेंद्र और दादी प्रकाश कौर की वेडिंग एनिवर्सरी के मौके पर सगाई की है। करण की सगाई को काफी प्राइवेट रखा गया था और उनकी सगाई में सिर्फ कुछ क्लोज फ्रेंड्स और फैमली मेंबर्स ही शामिल हुए थे। बताया जा रहा है कि दोनों ही फैमली शादी को लेकर काफी एक्साइटेड है और करण अगले महीने जून में ही शादी करने जा रहे हैं। मगर करण अपनी सगाई की तरह ही शादी को भी प्राइवेट रखना चाहते हैं। करण ही गर्लफ्रेंड फिल्म इंडस्ट्री से ताल्लुख नहीं रखती हैं और अभी तक इससे ज्यादा करण की मंगेतर को लेकर कोई जानकारी सामने नहीं आई है। मगर हर कोई देओल परिवार की नई बहू को देखने के लिए बेताब है। वैसे करण देओल को लेकर पिछले साल भी ये खबर सामने आई थी कि उन्होंने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के दिग्गज फिल्ममेकर बिमल रॉय की परपोती दृशा रॉय से सगाई कर ली है। मगर तब करण की टीम ने इस खबर को खारिज कर दिया था और कहा था कि करण और दिशा सिर्फ बचपन के दोस्त हैं और दोनों की कोई सगाई नहीं हुई है। अब एक बार फिर करण की सगाई लाइमलाइट में बनी हुई है।

›› बॉलीवुड ‹‹

आलिया की मेट गाला तस्वीर पर ऐसा कमेंट कर सपोर्ट करती देखी गई दीपिका

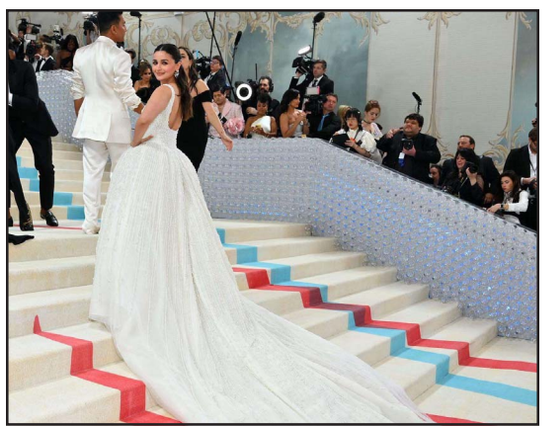

बॉलीवुड की गंगुबाई यानी मशहूर एक्ट्रेस आलिया भट्ट आज किसी पहचान की मोहताज नहीं आलिया का लुक हो या एक्टिंग हर एक छोटी-से-छोटी चीज भी सुर्खियों में छायी रहती हैं। फिल्मो में अपना सिक्का जमाने के बाद 1 मई को आलिया ने मेट गाला 2023 में अपना डेब्यू किया था और इस दौरान एक्ट्रेस ने रेड कार्पेट पर अपने पर्ल एम्बेलिश्ड गाउन से काफी सुर्खियां भी बटोरी थी जिसकी तस्वीरें अबतक भी सोशल मीडिया के गलियारों में छायी हुई हैं। इंटरनेशनल फैशन डिजाइनर प्रबल गुरुंग द्वारा डिजाइन किए गए डिटेल्ड गाउन में आलिया एक दम प्रिंसेस वाइब्स दे रही थीं। वहीं मेट गाला रेड कार्पेट पर लोगों की अटेंशन लेने से पहले आलिया ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया था और बीटीएस पलों को दिखाया था। कुछ ही समय में उनका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। दिलचस्प बात यह है कि पोस्ट पर दीपिका पादुकोण के कमेंट ने भी सभी का ध्यान खींचा। आलिया के मेट गाला में डेब्यू करने से कुछ घंटे पहले दीपिका ने ऑस्कर से अपनी कुछ पुरानी तस्वीरें शेयर की थी। जिसके बाद तो उनकी जिन्दगी में ही ट्रोलर्स ने हड़कंप मचा कर रख दी थी। आलिया की लाइमलाइट चुराने की कोशिश करने पर दीपिका को नेटिजेंस द्वारा ट्रोल भी किया गया था। तो वहीं ऑनलाइन ट्रोलिंग और आलोचनाओं के बीच दीपिका पादुकोण ने अब आलिया भट्ट की बीटीएस वीडियो पर अपना खुलकर प्यार बरसाया हैं। उन्होंने आलिया की पोस्ट के कमेंट बॉक्स में लिखा , तुमने ये कर दिया! उसके बाद एक रेड हार्ट वाला इमोजी भी पोस्ट किया हैं। वहीं आलिया द्वारा शेयर की गई वीडियो में वह अपनी बेटी राहा से सबसे लंबे समय तक दूर रहने की बात कहती नजर आईं। इस बात से तो सभी वखिफ हैं कि आलिया रणबीर की नन्ही परी राहा अभी बेहद ही छोटी हैं हैं। ऐसे में मेट गाला के लिए आलिया का उनसे इतना दूर आना आलिया को थोड़ा तो बेटी की चिंता की ओर खींचता ही।उन्होंने वीडियो में कहा, तो यह सबसे लंबा समय है जब मैं अपनी बेटी राहा से दूर रही हूं। और वह लगभग 6 महीने की है और मैं इससे पहले केवल 24 घंटे के लिए उससे दूर रही हूं, जैसे एक दिन के लिए और अब यह लगभग 4 दिन होने जा रहे हैं। जैसे ही मैं उठती हूं, मुझे उसे वीडियो कॉल करने के लिए कुछ सेकंड मिलते हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो आलिया भट्ट जल्द ही 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में रणवीर सिंह के साथ नजर आएंगी। ये फिल्म इसी साल जुलाई में रिलीज होगी। वे कैटरीना कैफ और प्रियंका चोपड़ा के साथ जी ले जरा में भी स्क्रीन शेयर करती दिखाई देंगी। आलिया इस साल गैल गैडोट और जेमी डोर्नन स्टारर 'हार्ट ऑफ स्टोन' के साथ हॉलीवुड में भी अपनी शुरुआत करेंगी। वहीं दीपिका पादुकोण जल्द ही 'फाइटर' में नजर आएंगी। इस फिल्म में वे ऋतिक रोशन के अपोजिट दिखने वाली हैं। वहीं उनके पास प्रभास के साथ 'प्रोजेक्ट के' भी उनकी झोली में हैं।

केकेके13 में जाने से पहले ही अपने इस डर का खुलासा करती नजर आई अर्चना गौतम, सुन कर हो जायेंगे हैरान

अर्चना जब से शो से निकली हैं उन्हें कई शोज के ऑफर आये। हाल ही में तो वह कलर्स पर आ रहे एंटरटेनमेंट की रात में भी नजर आ रही हैं। इसके अलावा भी जल्द ही अर्चना रोहित शेट्टी के स्टंट शो खतरों के खिलाड़ी 13 में खतरों से खेलती नजर आएंगीं। इस शो में जाने से पहले अर्चना का एक वीडियो सामने आया है।

बिग बॉस 16 कंटेस्टेंट बन घर-घर में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाली एक्ट्रेस अर्चना गौतम ने शो में अपने डायलॉग की वजह से काफी सुर्खियों भी बटोरी। शो तो खत्म हो गया लेकिन अर्चना के लिए आगे कई और बड़े प्रोजेक्ट्स का दरवाजा खोल गया। अर्चना जब से शो से निकली हैं उन्हें कई शोज के ऑफर आये। हाल ही में तो वह कलर्स पर आ रहे एंटरटेनमेंट की रात में भी नजर आ रही हैं। इसके अलावा भी जल्द ही अर्चना रोहित शेट्टी के स्टंट शो खतरों के खिलाड़ी 13 में खतरों से खेलती नजर आएंगीं। इस शो में जाने से पहले अर्चना का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें वह बता रही हैं कि उन्हें किन चीजों से सबसे ज्यादा डर लगता है। और अर्चना के इस दर को सुनकर आप लोग जरूर शॉक्ड होने वाले हैं। अर्चना गौतम का एक वीडियो सामने आया है। इस वीडियो को विरल भयानी के आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया गया है। वीडियो में पैपराजी अर्चना से पूछते हैं कि उन्हें किन चीजों से डर लगता है? इस पर अर्चना कहती हैं, 'उन्हें छिपकली और ठंडा पानी से डर लगता है। इस पर पैपराजी कहते हैं, 'अपने डर को कम करने के लिए क्या कर रही हैं। इस पर अर्चना कहती हैं, 'कुछ भी नहीं कर रही हूं। अब छिपकली के साथ प्रैक्टिस नहीं कर सकती, लेकिन अब मुझे लगता है कि मुझे डर पर ही काबू पाना पड़ेगा सबसे पहले। अर्चना गौतम अपने काम के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी खूब एक्टिव रहती हैं। वह अक्सर अपनी लेटेस्ट तस्वीरें और वीडियो फैंस के साथ शेयर कर उन्हें सरप्राइज देती रहती हैं। फैंस भी अर्चना के लेटेस्ट पोस्ट को खूब पसंद करते हैं और भर-भर के उन पर अपने कमैंट्स की बौछार करते हैं। बिग बॉस के बाद अर्चना का लुक काफी चेंज हुआ है। इन दिनों उनका ट्रांसफॉर्मेशन फैंस के बीच काफी चर्चा में बना हुआ है।

तुर्की स्टार बुराक डेनिस ने आमिर खान की तारीफ में पढ़े कसीदे, बॉलीवुड डेब्यू को लेकर दिया हिंट

फेमस सीरियल 'प्यार लफ्जों में कहाँ' में मूरत बनकर सबका दिल जीतने वाले तुर्की एक्टर बुराक डेनिस इस समय इंडिया में हैं। दुनियाभर में बुराक डेनिस की तगड़ी फैन फॉलोइंग हैं। ना सिर्फ तुर्की बल्कि इंडिया में भी बुराक काफी मशहूर हैं और उनके वीडियोज सोशल मीडिया पर आए दिन वायरल होते रहते हैं। बुराक इन दिनों भारत दौरे पर है और उनकी तस्वीरों और वीडियो ने इंटरनेट पर धूम मचाई हुई है। दरअसल, बुराक डेनिज फिक्की फ्रेम्स के 23वें संस्करण में शामिल होने के लिए भारत आए हैं, जिसे फेडरेशन ऑफ इंडियन चौंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के मीडिया और एंटरटेनमेंट विंग द्वारा आयोजित किया गया है। इस इवेंट में कई बॉलीवुड सेलेब्स ने भी हिस्सा लिया है। इस दौरान तुर्की एक्टर ने अपने पहली बार इंडिया आने से लेकर बॉलीवुड में काम करने को लेकर खुलकर बात की। मीडिया सेशन के दौरान बुराक डेनिस से जब भारत में उनकी पॉपुलैरिटी और खासकर फीमेल फैंस के बीच फेमस होने को लेकर पूछा गया। तो एक्टर ने कहा, ये देखते हैं क्योंकि यहां मेरा पहली बार आना हुआ है। मैं दोबारा आना चाहूंगा। इसी के साथ उन्होंने आगे कहा, भारत और तुर्की की संस्कृति काफी मिलती-जुलती है इसलिए हमारे प्रोजेक्ट्स भी लगभग एक जैसी ही होते हैं। भारत और तुर्की को समान बताने वाली अपनी बात पर तुर्की एक्टर बुराक डेनिस ने कहा, हमारे प्रोजेक्ट संवेदनशीलता से भरे होते हैं और इसलिए दोनों देश के लोग एक-दूसरे को समझते हैं। यहां के लोग मुझे इसकी वजह से ही अपने फैमली मेम्बर के रूप में देखते हैं। ये मेरे लिए भी बहुत अच्छा अनुभव है। वही, जब बुराक से पूछा गया कि उन्होंने आखिरी बार बॉलीवुड फिल्म कौन सी देखी तो उन्होंने कहा, मैं नाम भूल गया हूं क्योंकि हमारी भाषा में नाम बदल जाते हैं, लेकिन पीके और 3 इडियट्स मुझे पसंद आई थी। आमिर खान की फिल्मों का जिक्र करते ही एक्टर ने आगे कहा, मुझे लगता है कि आमिर सिर्फ एक्टर ही नहीं, बहुत बड़े आदमी हैं। मेरी तरफ से उन्हें नमस्ते कहना। आमिर खान की तारीफ करने के बाद बुराक ने बॉलीवुड फिल्मों में काम करने की इच्छा भी जताई। बुराक डेनिस ने बताया कि एक दिन जरूर मैं बॉलीवुड में काम करना चाहता हूं, लेकिन इससे पहले मुझे हिंदी सीखनी होगी। साथ ही गाना और नाचना भी। हॉलीवुड का रुख करने को लेकर एक्टर ने कहा, ऐसा भी एक दिन आ सकता है, लेकिन मैं अभी इस बारे में नहीं सोच रहा हूं। मैं अभी जहां हूं, वहां बहुत ठीक हूं।

›› बॉलीवुड ‹‹

जॉन अब्राहम ने फिर मिलाया 'बटला हाउस' डायरेक्टर से हाथ, शरवरी ही संग इस फिल्म में आएंगे नजर

शाहरुख खान स्टारर पठान में विलेन के रोल से सबका दिल जीतने वाले जॉन अब्राहम लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। यशराज फिल्म्स की अब तक की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्म पठान की सफलता के बाद से जॉन की पॉपुलैरिटी एक बार फिर बढ़ गई है। पठान की रिलीज के बाद से एक्टर आए दिन सुर्खियों में बने रहते हैं। जॉन के फैंस के लिए एक गुड न्यूज सामने आई है जिसे सुनकर वो खुशी से झूम उठेंगे। हाल ही में ऐसी खबरें सामने आई थी कि पठान में अपने दमदार एक्शन से लाइमलाइट बटोरने वाले जॉन अब्राहम ने कॉमेडी फिल्म से किनारा कर एक्शन फिल्मों पर फोकस करने का मन बना लिया है। ऐसे में अब नया अपडेट सामने आया है कि पठान के बाद अब जॉन अब्राहम जल्द ही फिर से सिल्वर स्क्रीन पर एक्शन करते दिखने वाले हैं। जॉन ने अपनी अगली फिल्म साइन कर ली है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जॉन अब्राहम ने 2019 में आई एक्शन थ्रिलर बाटला हाउस के डायरेक्टर से फिर से हाथ मिलाया है। जॉन जल्द ही निर्देशक निखिल आडवाणी की सच्ची घटनाओं से प्रेरित एक्शन ड्रामा में नजर आएंगे। इस फिल्म में निखिल ने जॉन के अपोजिट फीमेल लीड के लिए एक्ट्रेस शरवरी वाघ को कास्ट किया है और इन दोनों के अलावा फिल्म में अभिषेक बनर्जी अहम रोल में नजर आएंगे। हालांकि अभी तक जॉन और शरवरी स्टारर इस फिल्म का टाइटल डिसाइड नहीं हुआ है। फिलहाल इस अनटाइटल्ड फिल्म का प्री-प्रोडक्शन का काम हो रहा है और मूवी की शूटिंग इसी साल जुलाई महीने में शुरू होगी। निखिल के बैनर एम्मे एंटरटेनमेंट और जी स्टूडियोज दोनों मिलकर इस फिल्म का निर्माण कर रहे है। फिल्म के प्री-प्रोडक्शन वर्क और टाइटल के तय होने के बाद मेकर्स की तरफ से मूवी का ऑफिशियल ऐलान किया जाएगा।

आखिर क्यों नहीं लेना चाहतीं अपने ही घर को गिराए जाने का मुआवजा कंगना रनौत

बॉलीवुड की धाकड़ और बेबाक अदाकारा कंगना रनौत अपने भड़कीले बयानों के चलते कई बार विवादों में फंस चुकी हैं। लेकिन चाहे बात कुछ भी हो कंगना हर बार अपनी बात को रखने में ना तो हिचकिचाती और न ही घबराती हुई नजर आई हैं। साल 2020 में कंगना का मुंबई वाले घर का एक हिस्सा गिरा दिया था। जिसे लेकर कंगना काफी भड़की थीं और उन्होंने खुलकर कई बड़े बयान भी दिए थे। उसी साल शिवसेना नेता संजय राउत के साथ उनके विवाद के बाद उन्हें वाई-प्लस सुरक्षा भी दी गई थी और उनके लिए हर नियमो को बराबर रखा गया था। सोशल मीडिया पर कंगना के फैंस अक्सर उनसे मुआवजे को लेकर सवाल खड़े करते रहते हैं। सितंबर, साल 2020 में उन्हें नोटिस जारी करने के एक दिन बाद बीएमसी ने कंगना के घर-ऑफिस में इललीगल कंस्ट्रक्शन के चलते कुछ हिस्सा तोड़ दिया था। उस वक्त कंगना और महाराष्ट्र की शिवसेना के बीच जुबानी जंग भी छिड़ गई थी। ऐसे में हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान कंगना ने घर के एक हिस्से को तोड़े जाने के बदले मुआवजे को लेकर सवाल किया। जिसपर कंगना ने जो कहा वह सुनकर उनके फैंस काफी खुश हो जाएंगे और उन्हें जरूर अप्रिशिएट करेंगे। कंगना के मुताबिक उन्हें कोई मुआवजा नहीं मिला है, बल्कि वे उन्हें एवलुएटर भेजने वाले थे। इसलिए अब वह शिंदे जी (वर्तमान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ संभाजी शिंदे) से मिली। जिसके बाद कंगना ने आगे कहा कि, ष्आप ही लोग मुझे कुज एवलुएलेशन भेजिए. मैं किसी को नहीं चाहती, जिसने करदाताओं के पैसे का दुरुपयोग किया है, मुझे और मुआवजा नहीं चाहिए, यह ठीक है। अपनी बात को पूरा करते हुए उन्होंने आगे कहा, अदालत ने कहा है कि उन्हें मुझे जो भी मुआवजा देना है, लेकिन जैसा मैंने कहा, उन्होंने मूल्यांकनकर्ताओं को कभी नहीं भेजा और मैंने मांग नहीं की क्योंकि मैं इसके करदाताओं के पैसे को जानती हूं और मुझे इसमें से कुछ भी नहीं चाहिए वही अब काम की बात करे तो कंगना रनौत फिलहाल चंद्रमुखी 2 पर काम कर रही हैं।

स्टार एक्सप्रेस
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी-18, सेक्टर-सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक: नरेन्द्र कुमार । (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com